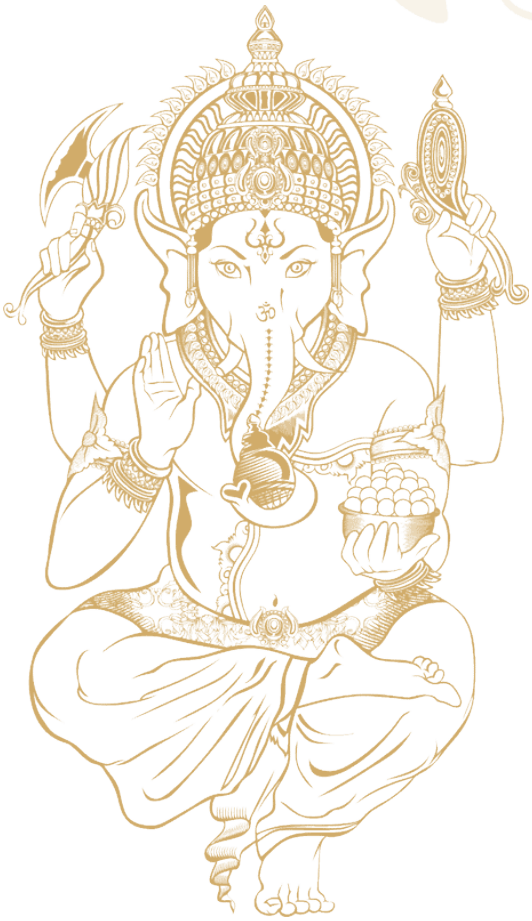

Mr.pranav

12 Mar 1981

11:55 AM

Ranchi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120452601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**12/03/1981**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**11:55:00 घंटे**
इष्ट	14:44:53 घटी
स्थान	**Ranchi**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	23:22:00 उत्तर
रेखांश	85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:06:20 घंटे
वेलान्तर	-00:09:51 घंटे
साम्पातिक काल	23:25:37 घंटे
सूर्योदय	06:01:02 घंटे
सूर्यास्त	17:56:17 घंटे
दिनमान	11:55:14 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	28:00:21 कुम्भ
लग्न के अंश	08:25:02 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**रोहिणी - 3**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	प्रीति
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वी-वीरसिंह
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1902	फाल्गुन	21
पंजाबी	संवत : 2037	फाल्गुन	29
बंगाली	सन् : 1387	फाल्गुन	28
तमिल	संवत : 2037	मासी	29
केरल	कोल्लम : 1156	कुंभम	28
नेपाली	संवत : 2037	फाल्गुन	29
चैत्रादि	संवत : 2037	फाल्गुन	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2037	फाल्गुन	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 20:11:55
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:53:10 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग ____: विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____: 08:27:58 घंटे
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 09:10:49 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 31:43:46
भभोग _____: 56:39:11
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 4 वर्ष 4 मा 14 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

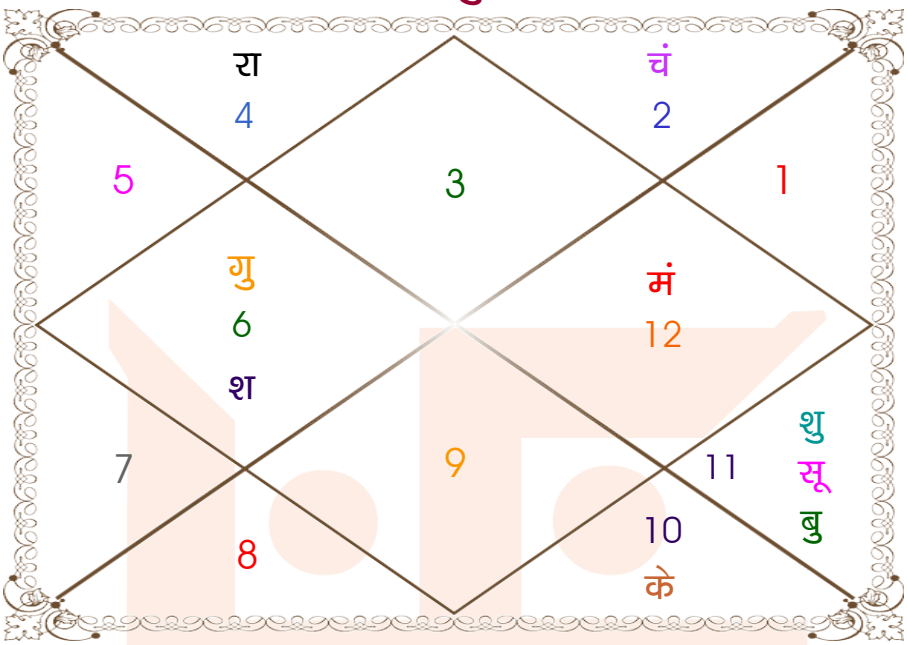

चन्द्र कुंडली

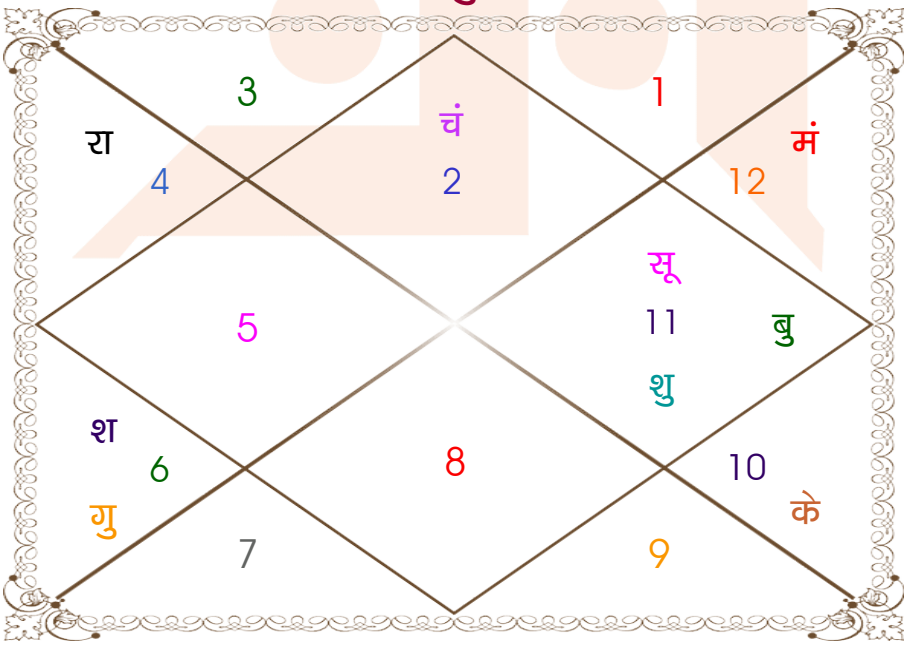

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

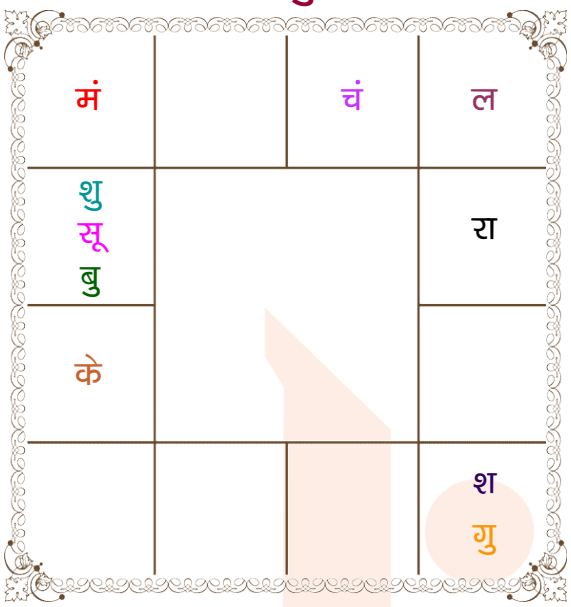

लग्न कुंडली

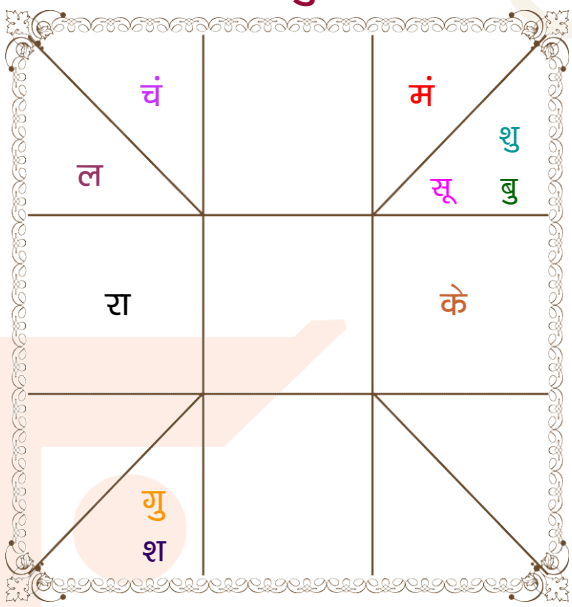

विंशोत्तरी
चन्द्र 4वर्ष 4मा 14दि

चन्द्र

12/03/1981

27/07/2095

चन्द्र	26/07/1985
मंगल	26/07/1992
राहु	27/07/2010
गुरु	27/07/2026
शनि	26/07/2045
बुध	27/07/2062
केतु	26/07/2069
शुक्र	26/07/2089
सूर्य	27/07/2095

योगिनी
सिद्धा 3वर्ष 0मा 22दि

संकटा

03/04/2020

03/04/2028

संकटा	13/01/2022
मंगला	04/04/2022
पिंगला	13/09/2022
धान्या	15/05/2023
भ्रामरी	03/04/2024
भद्रिका	14/05/2025
उल्का	13/09/2026
सिद्धा	03/04/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	08:25:02	328:41:45	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	---
सूर्य			कुंभ	28:00:21	00:59:53	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	17:30:07	14:06:14	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल		अ	मीन	02:37:59	00:46:52	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	मित्र राशि
बुध			कुंभ	00:44:00	00:48:34	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	सम राशि
गुरु	व		कन्या	13:39:35	00:07:13	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
शुक्र		अ	कुंभ	21:24:11	01:14:47	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	मित्र राशि
शनि	व		कन्या	13:59:18	00:04:24	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
राहु	व		कर्क	16:30:09	00:01:31	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		मक	16:30:09	00:01:31	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृश्चि	06:29:53	00:00:23	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	---
नेप			धनु	01:12:19	00:00:30	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
प्लूटो	व		तुला	00:12:30	00:01:21	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	---
दशम भाव			कुंभ	27:02:45	--	पू०भाद्रपद	--	25	शनि	गुरु	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:35:26

लग्न-चलित

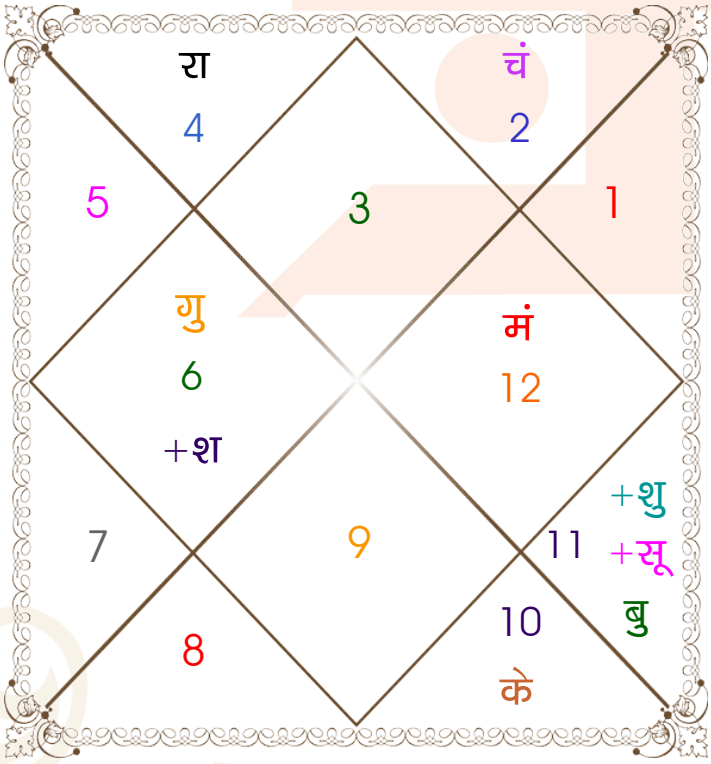

चन्द्र कुंडली

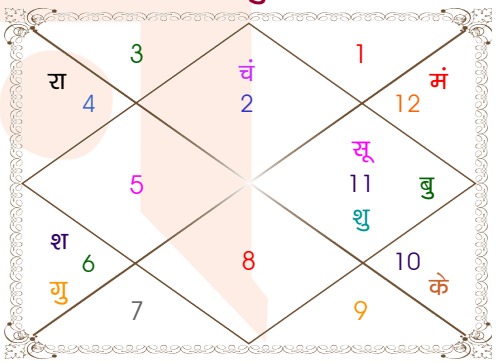

नवमांश कुंडली

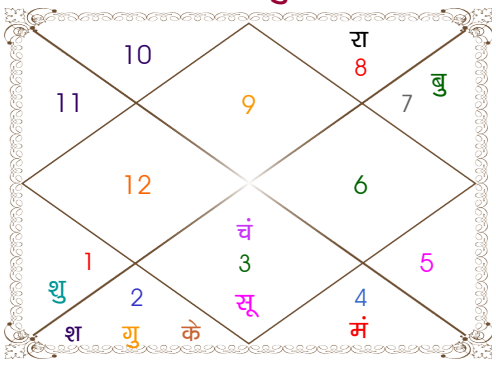

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	21:31:19	मिथुन	08:25:02
2	मिथुन	21:31:19	कर्क	04:37:36
3	कर्क	17:43:54	सिंह	00:50:11
4	सिंह	13:56:28	सिंह	27:02:45
5	कन्या	13:56:28	तुला	00:50:11
6	तुला	17:43:54	वृश्चिक	04:37:36
7	वृश्चिक	21:31:19	धनु	08:25:02
8	धनु	21:31:19	मकर	04:37:36
9	मकर	17:43:54	कुम्भ	00:50:11
10	कुम्भ	13:56:28	कुम्भ	27:02:45
11	मीन	13:56:28	मेष	00:50:11
12	मेष	17:43:54	वृष	04:37:36

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	08:25:02
2	कर्क	02:11:05
3	कर्क	27:33:06
4	सिंह	27:02:45
5	तुला	01:00:35
6	वृश्चिक	06:03:42
7	धनु	08:25:02
8	मकर	02:11:05
9	मकर	27:33:06
10	कुम्भ	27:02:45
11	मेष	01:00:35
12	वृष	06:03:42

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

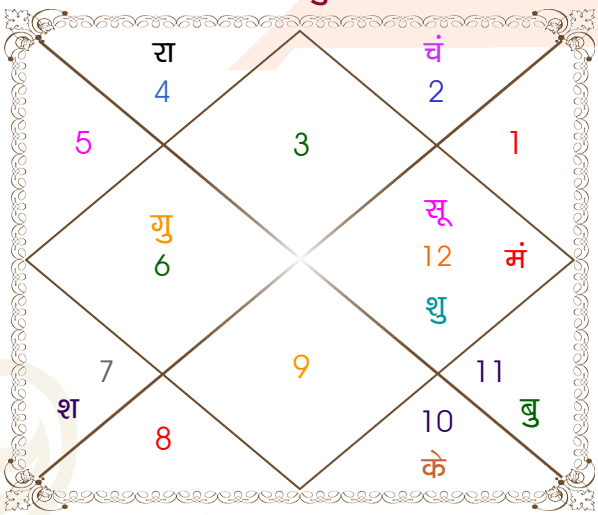

भाव कुंडली

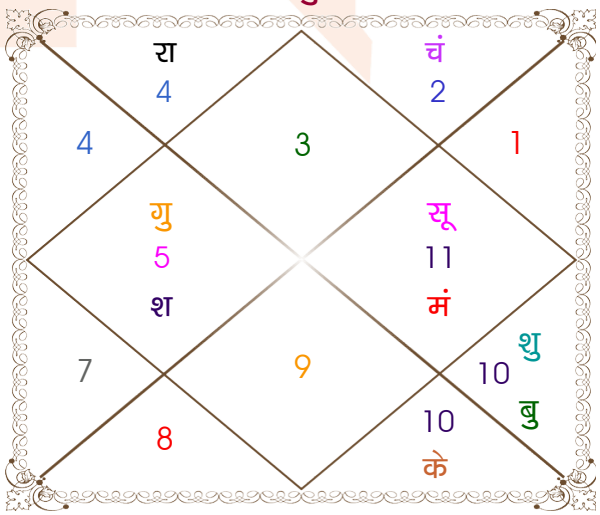

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	खल	आगमन	3.07	79 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	भोजन	16.55	23 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	मृत	विकल	निद्रा	0.00	53 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	शान्त	गमन	0.61	11 %
गुरु	पुत्र	धन	युवा	खल	नृत्यलिप्सा	1.73	34 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	वृद्ध	विकल	नेत्रपाणि	6.42	34 %
शनि	मातृ	आयु	युवा	मुदित	आगम	4.00	63 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	खल	गमन	0.00	9 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	नेत्रपाणि	0.00	9 %
कुल						32.38	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

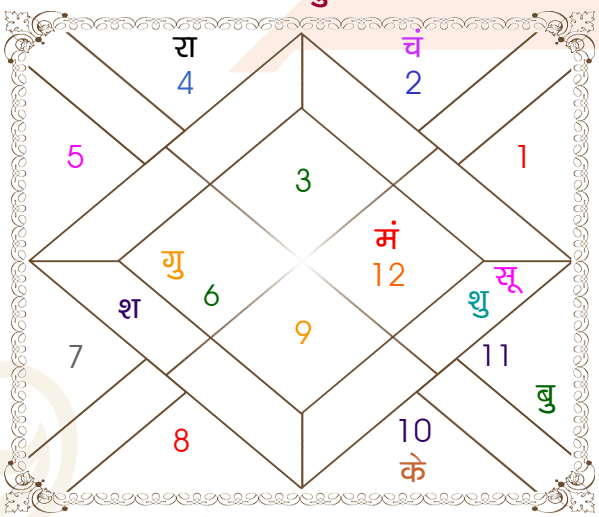

लग्न-चलित

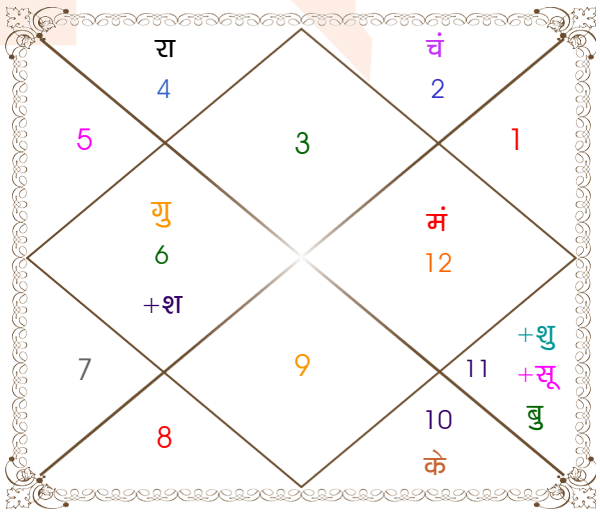

सुदर्शन चक्र

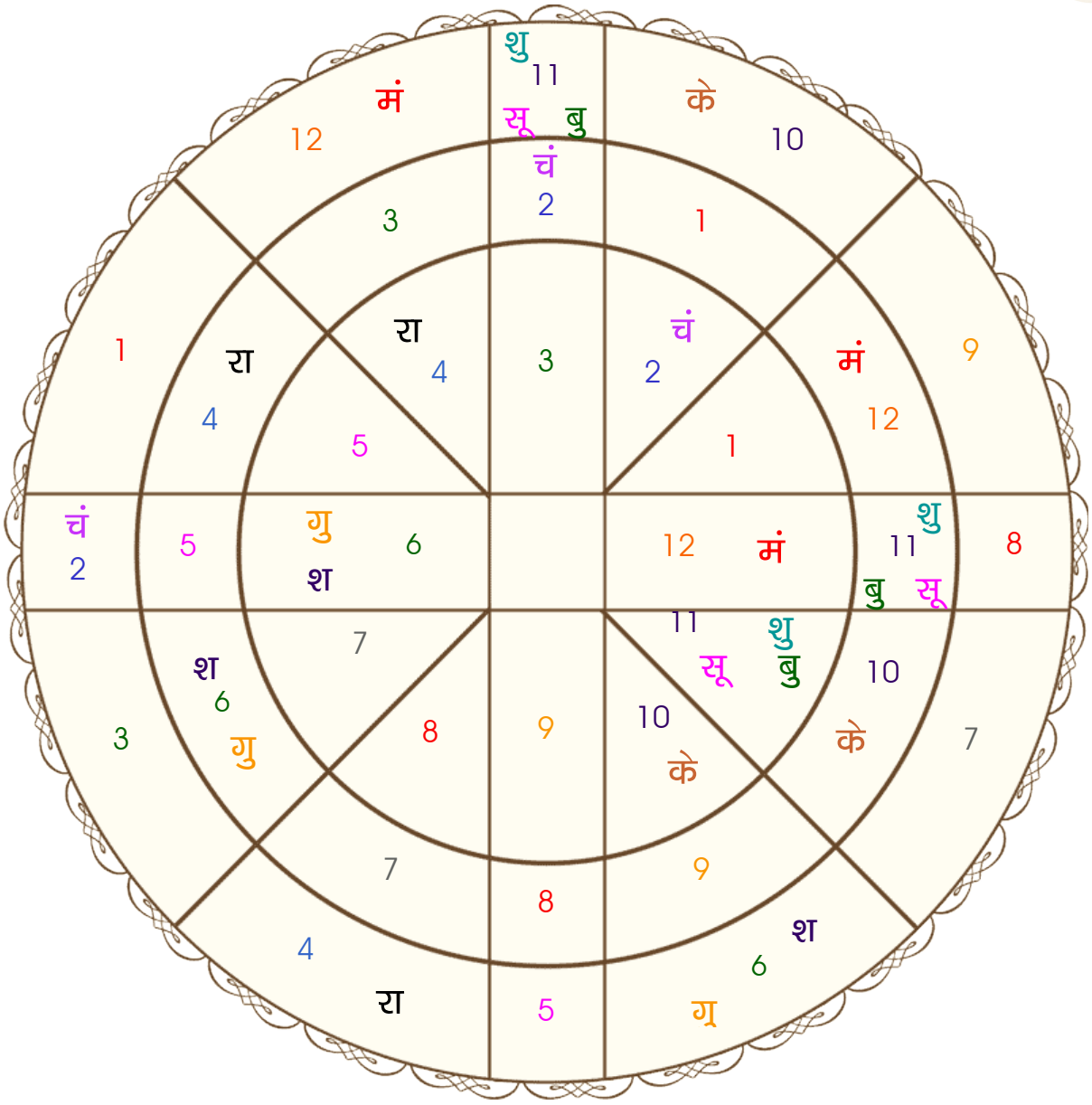

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 3 मास 17 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	28:06:17	शनि	गुरु	शुक्र	शनि
चंद्र		वृष	17:36:04	शुक्र	चंद्र	शनि	गुरु
मंगल		मीन	02:43:56	गुरु	गुरु	राहु	शुक्र
बुध		कुंभ	00:49:56	शनि	मंगल	बुध	चंद्र
गुरु	व	कन्या	13:45:32	बुध	चंद्र	राहु	चंद्र
शुक्र		कुंभ	21:30:08	शनि	गुरु	गुरु	मंगल
शनि	व	कन्या	14:05:14	बुध	चंद्र	गुरु	गुरु
राहु	व	कर्क	16:36:05	चंद्र	शनि	गुरु	राहु
केतु	व	मक	16:36:05	शनि	चंद्र	शनि	शुक्र
हर्ष	व	वृश्चि	06:35:49	मंगल	शनि	बुध	राहु
नेप		धनु	01:18:15	गुरु	केतु	शुक्र	चंद्र
प्लूटो	व	तुला	00:18:27	शुक्र	मंगल	बुध	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	08:30:58	बुध	राहु	राहु	चंद्र
2	कर्क	02:17:02	चंद्र	गुरु	राहु	बुध
3	कर्क	27:39:03	चंद्र	बुध	गुरु	राहु
4	सिंह	27:08:42	सूर्य	सूर्य	सूर्य	बुध
5	तुला	01:06:32	शुक्र	मंगल	बुध	राहु
6	वृश्चि	06:09:38	मंगल	शनि	बुध	सूर्य
7	धनु	08:30:58	गुरु	केतु	गुरु	शुक्र
8	मक	02:17:02	शनि	सूर्य	गुरु	शुक्र
9	मक	27:39:03	शनि	मंगल	गुरु	राहु
10	कुंभ	27:08:42	शनि	गुरु	शुक्र	चंद्र
11	मेष	01:06:32	मंगल	केतु	शुक्र	शुक्र
12	वृष	06:09:38	शुक्र	सूर्य	बुध	मंगल

के.पी. अयनांश : 23:29:30

फॉरच्युना : सिंह 28:00:45

लग्न कुंडली

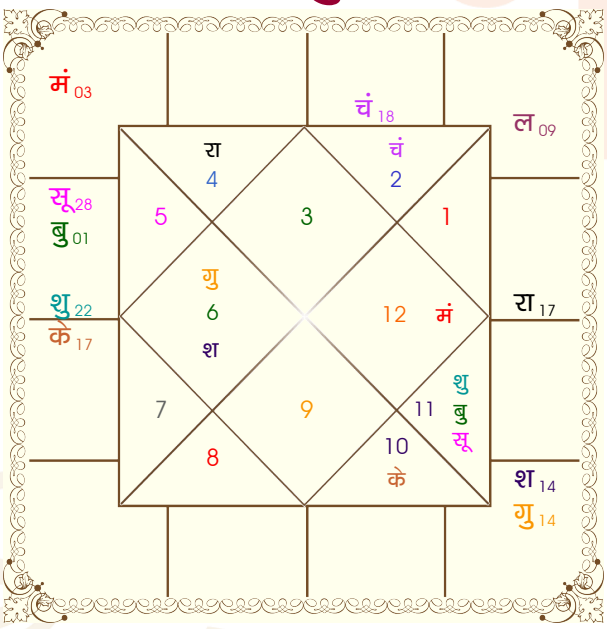

भाव कुंडली

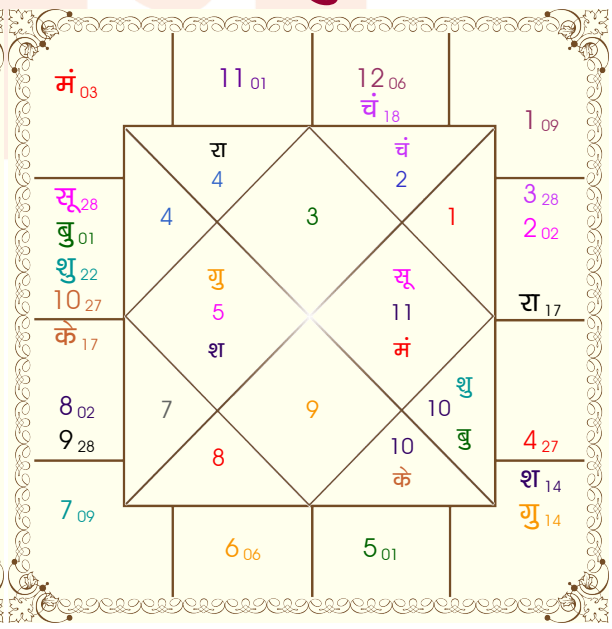

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध-
2	चंद्र, गुरु- शनि- राहु, केतु-
3	चंद्र, गुरु- शनि- केतु-
4	सूर्य+ मंगल, गुरु, शुक्र, शनि, राहु,
5	शुक्र-
6	मंगल- बुध-
7	सूर्य- मंगल- गुरु- शुक्र-
8	शनि- राहु- केतु,
9	बुध, शुक्र, शनि- राहु-
10	सूर्य, मंगल, बुध, शनि- राहु-
11	मंगल- बुध-
12	चंद्र+ गुरु, शुक्र- शनि, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4+ 7- 10,
चंद्र	2, 3, 12+
मंगल	4, 6- 7- 10, 11-
बुध	1- 6- 9, 10, 11-
गुरु	2- 3- 4, 7- 12,
शुक्र	4, 5- 7- 9, 12-
शनि	2- 3- 4, 8- 9- 10- 12,
राहु	2, 4, 8- 9- 10-
केतु	2- 3- 8, 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	राहु
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	राहु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	--	बु
2	--	रा	चं गु श के	चं
3	--	--	चं गु श के	चं
4	सू मं शु रा	गु श	--	सू
5	--	--	--	शु
6	--	--	बु	मं
7	--	--	सू मं शु	गु
8	--	के	रा	श
9	--	बु शु	रा	श
10	बु	सू मं	रा	श
11	--	--	बु	मं
12	चं गु श के	चं	--	शु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	4	4,8,12	कुम्भ	10
चंद्र	2,3	---	वृष	12
मंगल	6,11	5,9	मीन	10
बुध	1	3	कुम्भ	9
गुरु	7	2,10	कन्या	4
शुक्र	5,12	---	कुम्भ	9
शनि	8,9,10	6	कन्या	4
राहु	---	1	कर्क	2
केतु	---	7,11	मकर	8

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	7	2,10	4	5,12	---	9
चंद्र	2,3	---	12	8,9,10	6	4
मंगल	7	2,10	4	---	1	2
बुध	6,11	5,9	10	1	3	9
गुरु	2,3	---	12	---	1	2
शुक्र	7	2,10	4	7	2,10	4
शनि	2,3	---	12	7	2,10	4
राहु	8,9,10	6	4	7	2,10	4
केतु	2,3	---	12	8,9,10	6	4

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 328.01	चंद्र 47.50	मंगल 332.63	बुध 300.73	गुरु 163.66	शुक्र 321.40	शनि 163.99	राहु 106.50	केतु 286.50	हर्ष 216.50	नेप 241.21	प्लूटो 180.21
सूर्य 328.01	-- 0.00	-- 0.00	युति 8.85	-- 0.00	-- 0.00	युति 7.70	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
चंद्र 47.50	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	पंच 1.61	-- 0.00	पंच 1.82	तृती 2.90	-- 0.00	सप्त 4.06	सप्त 1.35	-- 0.00
मंगल 332.63	युति 8.85	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 4.04	युति 3.85	सप्त 3.72	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	8वां 9.68
बुध 300.73	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 0.80	युति 0.80	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
गुरु 163.66	-- 0.00	9वां 9.20	सप्त 4.04	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	युति 9.99	-- 0.00	5वां 9.56	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शुक्र 321.40	युति 7.70	चतु 1.57	युति 3.85	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
शनि 163.99	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 3.72	-- 0.00	युति 9.99	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	पंच 2.37	3रा 7.08	-- 0.00	-- 0.00
राहु 106.50	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 0.80	तृती 2.21	-- 0.00	तृती 2.37	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	अष्टां 0.89	-- 0.00
केतु 286.50	-- 0.00	पंच 2.90	-- 0.00	युति 0.80	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	सप्त 10.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
हर्ष 216.50	-- 0.00	सप्त 4.06	पंच 1.59	चतु 0.18	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
नेप 241.21	चतु 2.01	सप्त 1.35	चतु 2.79	तृती 2.98	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	अष्ट 0.89	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00
प्लूटो 180.21	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	पंच 2.97	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	-- 0.00	तृती 2.90	-- 0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	68.42	94.63	120.84	147.05	180.84	214.63	248.42	274.63	300.84	327.05	0.84	34.63
सूर्य	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
328.01	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
47.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.21
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
332.63	8.22	2.60	0.00	8.34	9.82	0.00	0.00	0.00	0.00	8.34	0.00	2.60
बुध	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
300.73	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	3.00	1.57
गुरु	--	--	--	--	--	--	चतु	5वां	--	--	--	9वां
163.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.59	5.85	0.00	0.00	0.00	5.85
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
321.40	0.00	0.00	0.00	8.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.30	0.63	0.00
शनि	10वा	--	--	--	--	3रा	--	--	--	--	--	--
163.99	8.35	0.00	0.00	0.00	0.00	5.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
राहु	--	युति	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
106.50	0.00	3.21	0.70	0.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.70	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	--	नवां	--	--
286.50	0.00	3.21	0.70	0.00	0.00	0.00	0.00	3.21	0.00	0.66	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त
216.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.00	2.65	0.27	0.00	0.00	9.81
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--
241.21	7.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.28	0.00	2.99	1.39	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--
180.21	0.00	0.00	0.00	0.00	9.98	0.00	0.00	1.21	2.96	0.00	9.98	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	68.42	92.18	117.55	147.05	181.01	216.06	248.42	272.18	297.55	327.05	1.01	36.06
सूर्य	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
328.01	0.00	1.38	0.76	9.95	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.95	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
47.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.64
मंगल	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति	--	तृती
332.63	8.22	2.98	0.00	8.34	9.86	0.00	0.00	0.00	0.00	8.34	0.00	1.87
बुध	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु
300.73	0.00	0.00	9.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.45	0.00	2.99	0.52
गुरु	--	--	--	--	--	--	चतु	5वां	5वां	--	--	9वां
163.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.59	3.61	1.16	0.00	0.00	7.00
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
321.40	0.00	0.00	0.00	8.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.30	0.82	0.00
शनि	10वा	--	--	--	--	3रा	--	--	--	--	--	--
163.99	8.35	0.00	0.00	0.00	0.00	6.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
राहु	--	युति	युति	नवां	--	--	--	--	सप्त	--	--	--
106.50	0.00	0.71	4.02	0.66	0.00	0.00	0.00	0.00	4.02	0.00	0.00	0.00
केतु	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	--	नवां	--	--
286.50	0.00	0.71	4.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.71	0.00	0.66	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	सप्त
216.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.99	0.00	1.28	0.00	0.00	0.00	9.99
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--
241.21	7.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.28	0.00	1.73	1.39	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--
180.21	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00	0.00	2.61	2.30	0.00	9.96	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

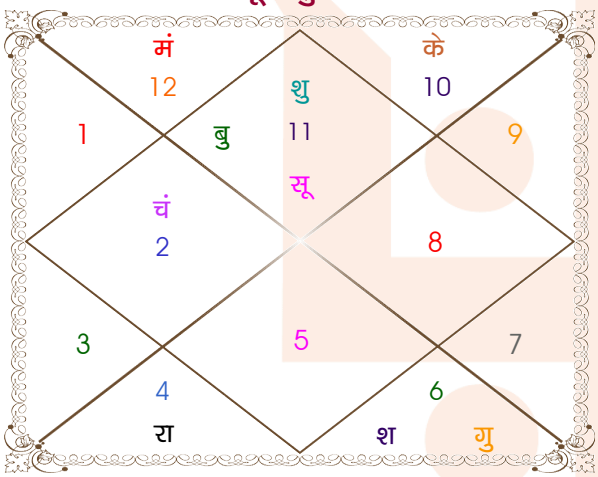

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

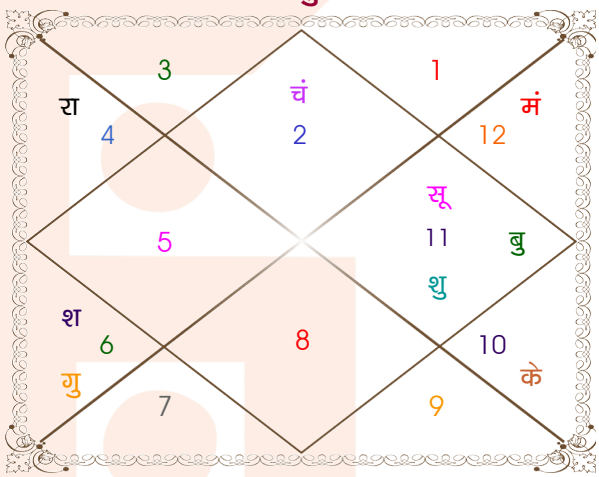

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

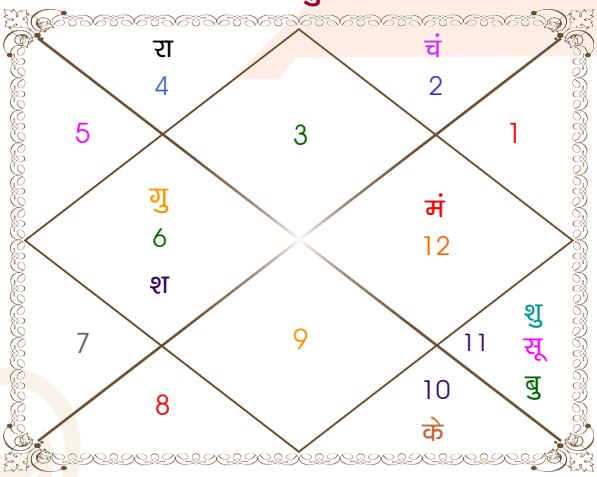

देह विचारः

होरा कुंडली

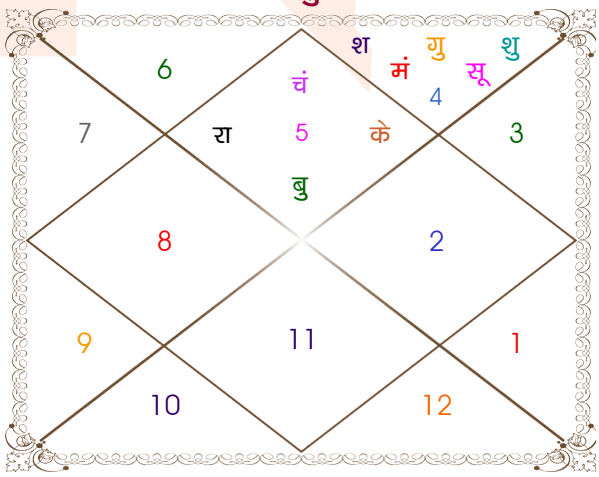

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

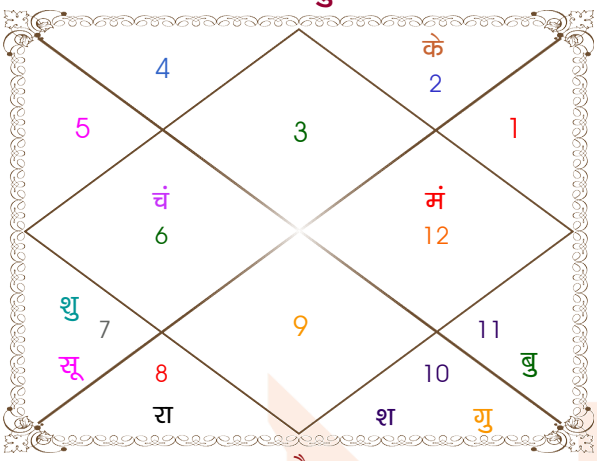

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

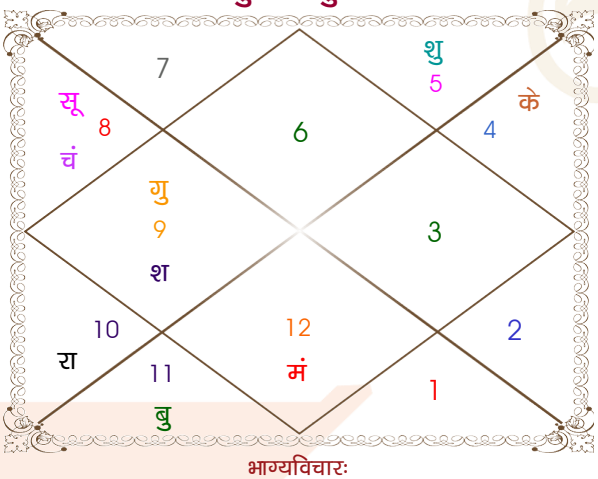

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

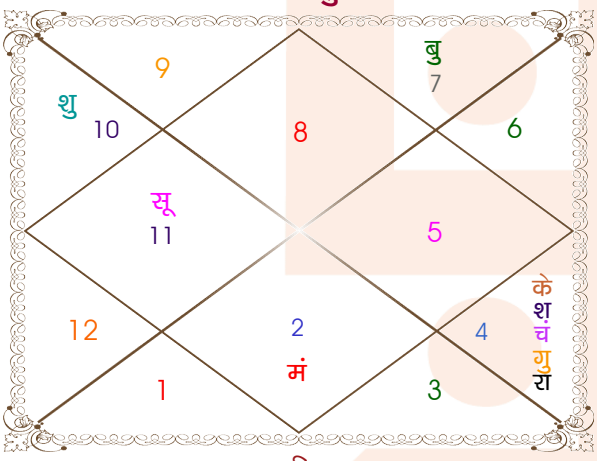

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

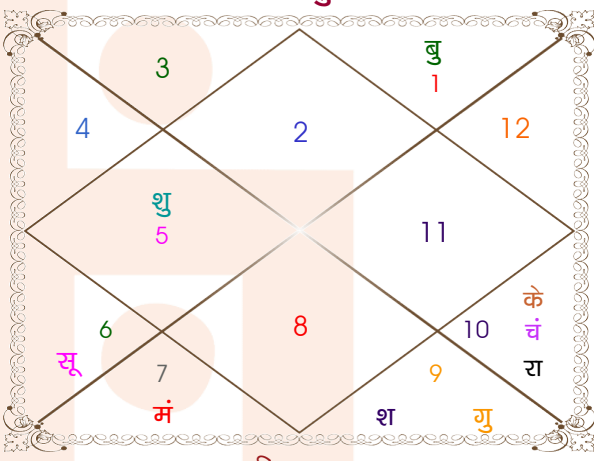

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

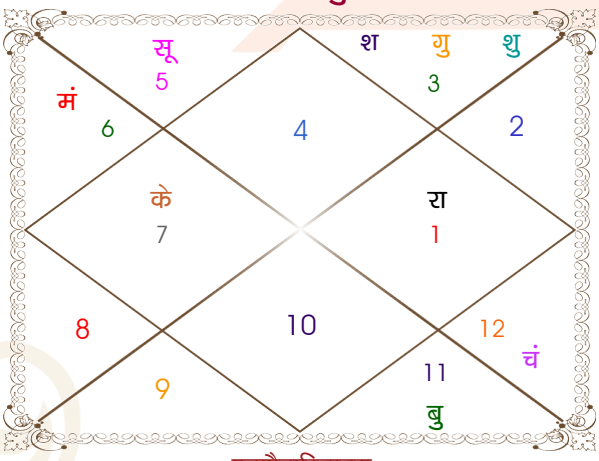

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

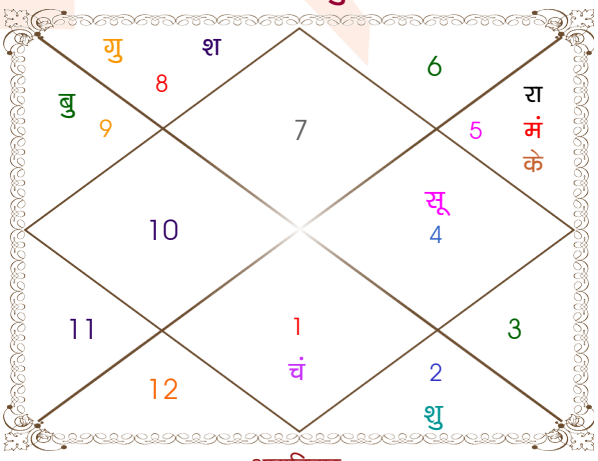

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

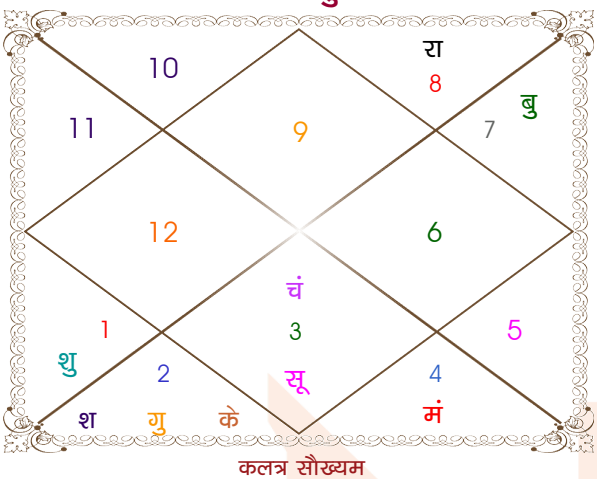

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

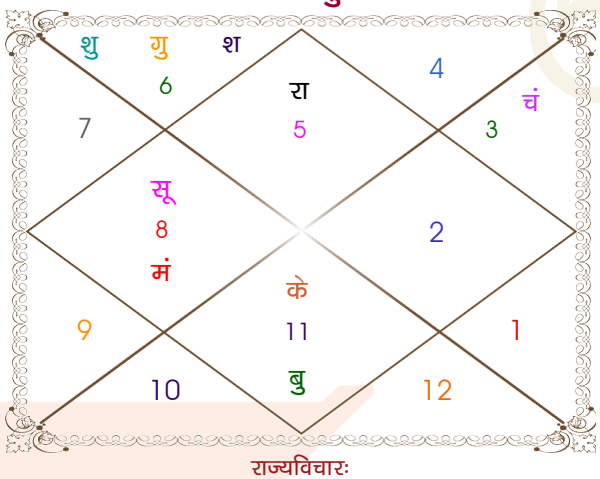

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

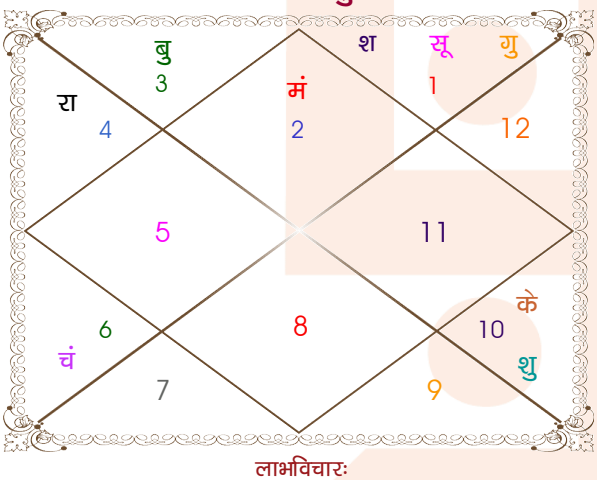

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

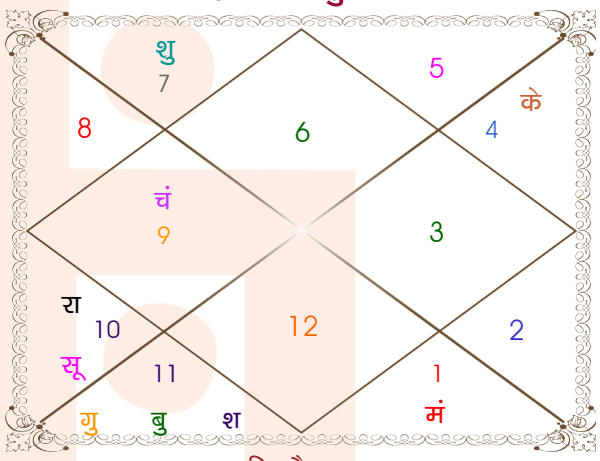

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

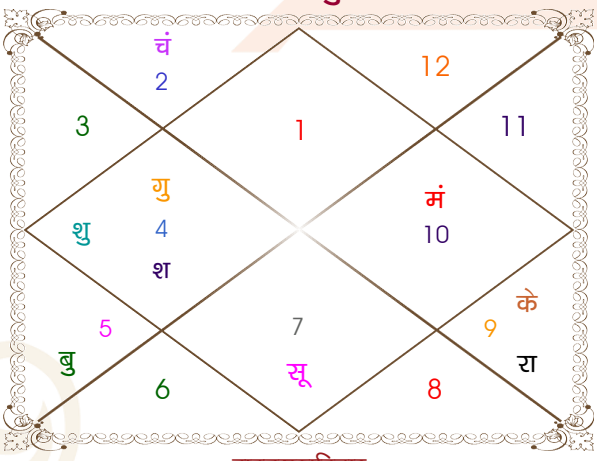

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

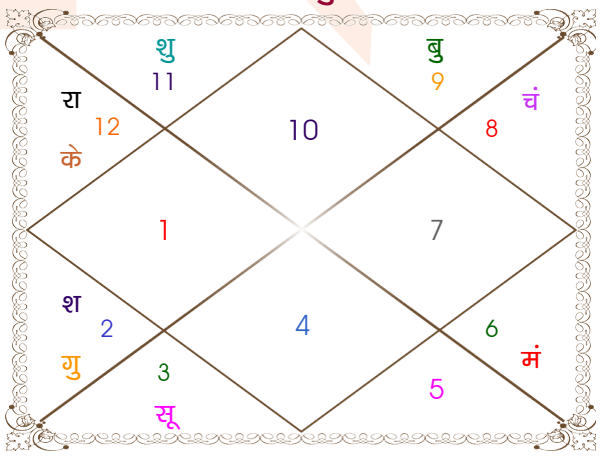

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

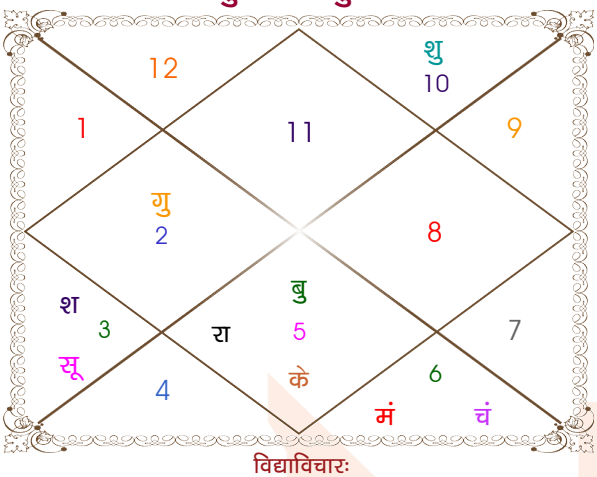

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

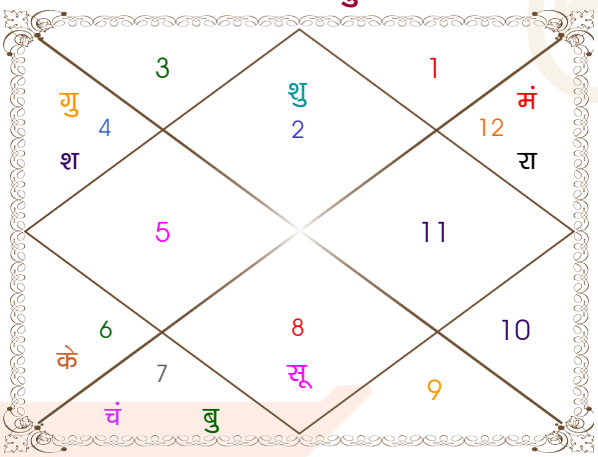

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

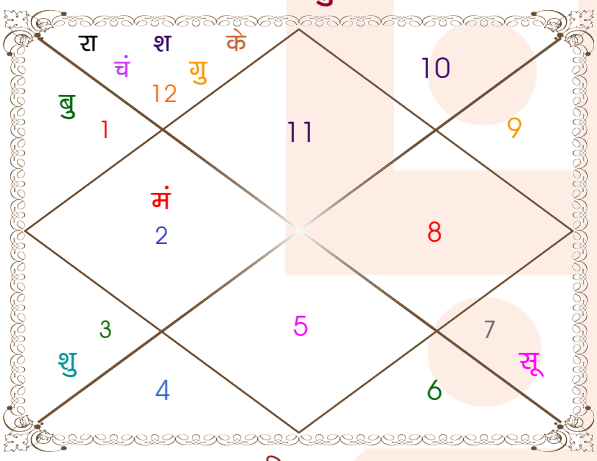

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

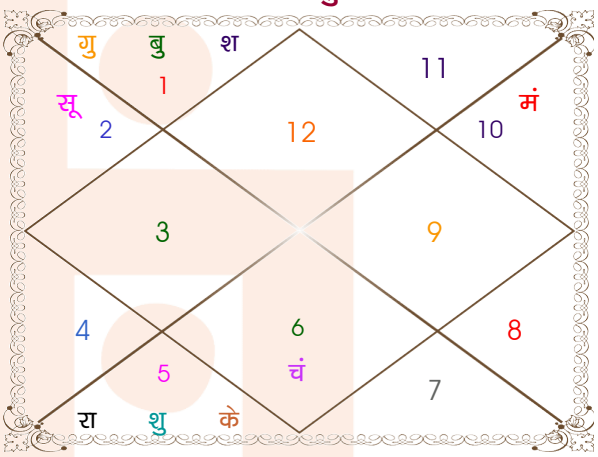

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

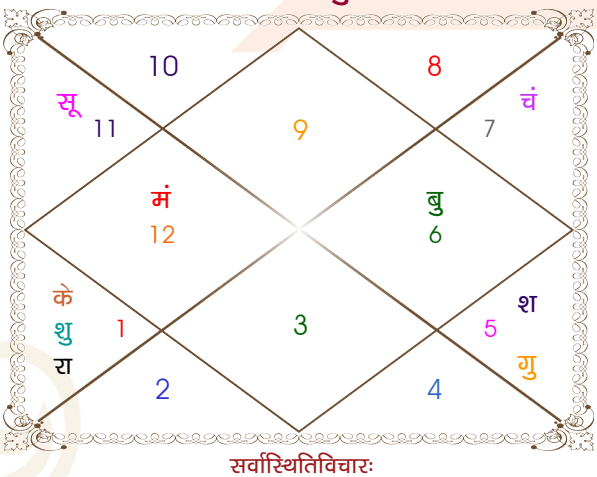

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

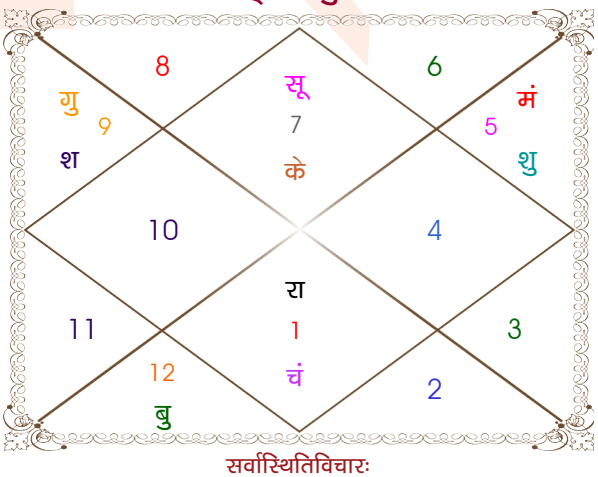

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मिथु	कुंभ	वृष	मीन	कुंभ	कन्या	कुंभ	कन्या	कर्क	मक
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मिथु	तुला	कन्या	मीन	कुंभ	मक	तुला	मक	वृश्चि	वृष
चतुर्थांश	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	मीन	कुंभ	धनु	सिंह	धनु	मक	कर्क
सप्तमांश	कर्क	सिंह	मीन	कन्या	कुंभ	मिथु	मिथु	मिथु	मेष	तुला
नवमांश	धनु	मिथु	मिथु	कर्क	तुला	वृष	मेष	वृष	वृश्चि	वृष
दशमांश	सिंह	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	कुंभ	कन्या	कन्या	कन्या	सिंह	कुंभ
द्वादशांश	कन्या	मक	धनु	मेष	कुंभ	कुंभ	तुला	कुंभ	मक	कर्क
षोडशांश	मेष	तुला	वृष	मक	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	धनु	धनु
विंशांश	मक	मिथु	वृश्चि	कन्या	धनु	वृष	कुंभ	वृष	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	कुंभ	मिथु	कन्या	कन्या	सिंह	वृष	मक	मिथु	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	वृष	वृश्चि	तुला	मीन	तुला	कर्क	वृष	कर्क	मीन	कन्या
त्रिंशांश	कुंभ	तुला	मीन	वृष	मेष	मीन	मिथु	मीन	मीन	मीन
खवेदांश	मीन	वृष	कन्या	मक	मेष	मेष	सिंह	मेष	सिंह	सिंह
अक्षवेदांश	धनु	कुंभ	तुला	मीन	कन्या	सिंह	मेष	सिंह	मेष	मेष
षष्ट्यंश	तुला	तुला	मेष	सिंह	मीन	धनु	सिंह	धनु	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	6 केरल
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	6.80	15.45	14.05	8.45	6.85	14.25	12.35	8.30	11.45
सप्तवर्ग	8.63	14.23	13.85	8.38	6.75	13.63	11.85	8.05	12.10
दशवर्ग	8.23	14.10	14.85	8.28	10.93	10.63	9.78	8.23	11.85
षोडशवर्ग	7.40	15.18	13.58	8.98	10.40	10.63	8.80	8.53	11.95

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	शत्रु	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	46	55	48	15	37	48	48
सप्तवर्गज बल	64	124	113	45	51	105	88
ओजयुग्मक बल	30	15	0	30	0	0	0
केन्द्र बल	15	15	60	15	60	15	60
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	0	15	15
कुल स्थान बल	155	209	236	105	148	183	211
कुल दिग्बल	60	27	58	17	28	2	32
नतोन्नत बल	60	0	0	60	60	60	0
पक्ष बल	34	67	34	34	26	26	34
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	51	2	28	47	26	22	34
युद्ध बल	0	0	0	0	3	0	-3
कुल कालबल	204	129	77	141	251	108	64
कुल चेष्टाबल	0	0	2	34	55	3	56
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-2	-8	-2	2	-32	-3	-32
कुल षट्बल	477	409	388	324	484	336	340
रूप षट्बल	7.9	6.8	6.5	5.4	8.1	5.6	5.7
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.1	1.3	0.8	1.2	1.0	1.1
संबंधित पद	1	4	2	7	3	6	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	35.37	38.23	8.86	22.38	45.07	11.78	51.80
कष्ट फल	21.43	12.73	25.96	34.33	10.98	26.03	7.02

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	324	409	477	477	336	388	484	340	340	340	388	336
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	50	0	40	20	30	50	40
भावदृष्टि बल	50	-11	56	24	13	4	2	17	34	18	54	66
कुल भाव बल	435	438	542	501	370	442	486	397	393	387	492	442
रूप भाव बल	7.2	7.3	9.0	8.3	6.2	7.4	8.1	6.6	6.6	6.5	8.2	7.4
संबंधित पद	8	7	1	2	12	6	4	9	10	11	3	5

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

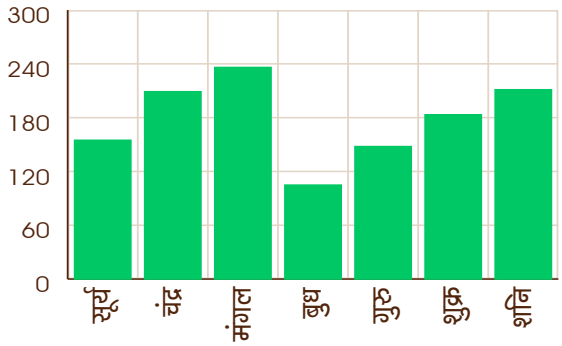

दिग्बल

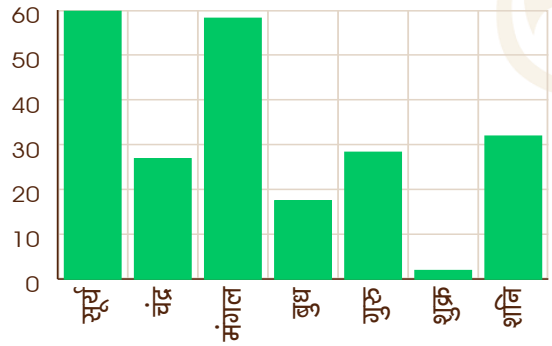

कालबल

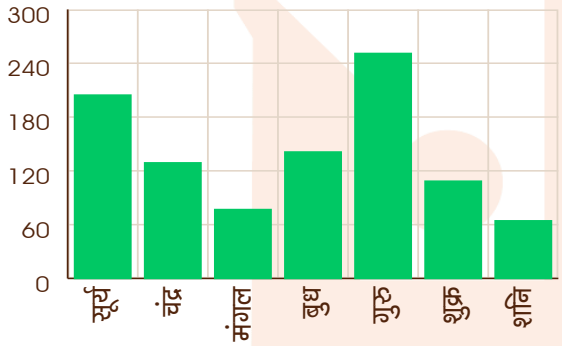

चेष्टाबल

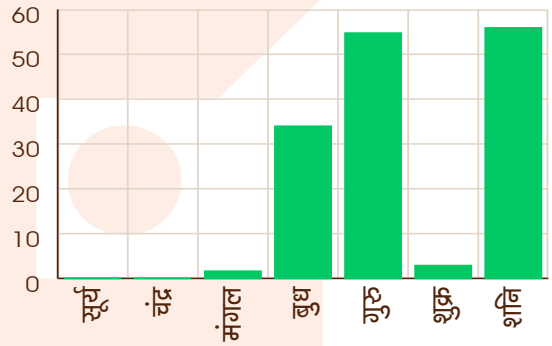

नैसर्गिक बल

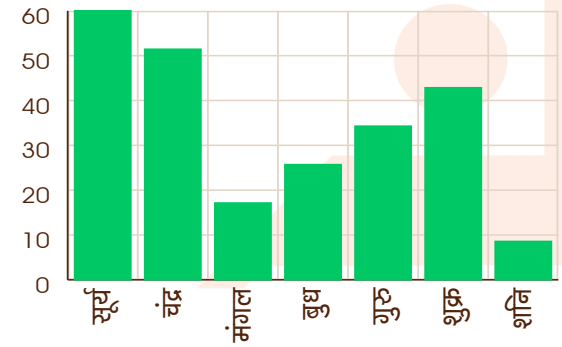

दृग्बल

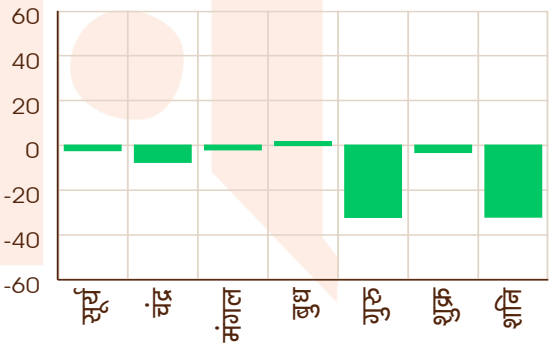

रूप षट्बल

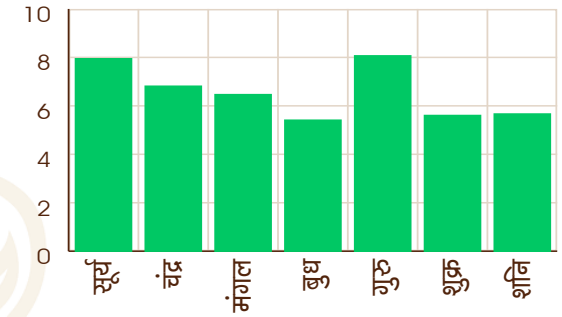

न्यूनतम षट्बल

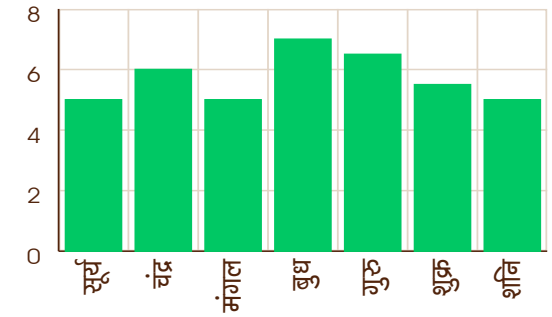

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

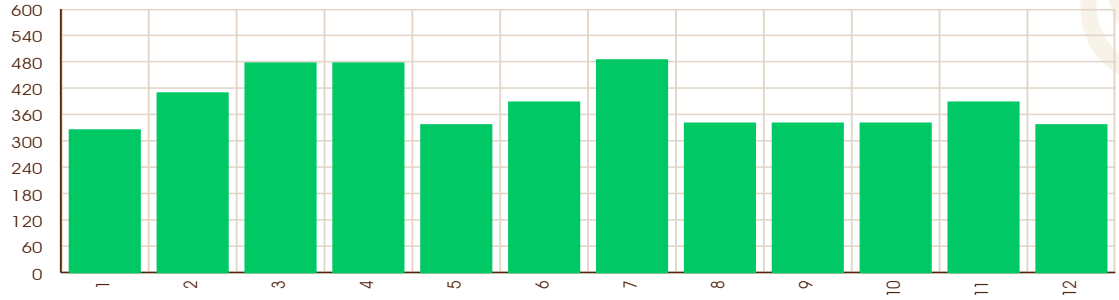

भावदिग्बल

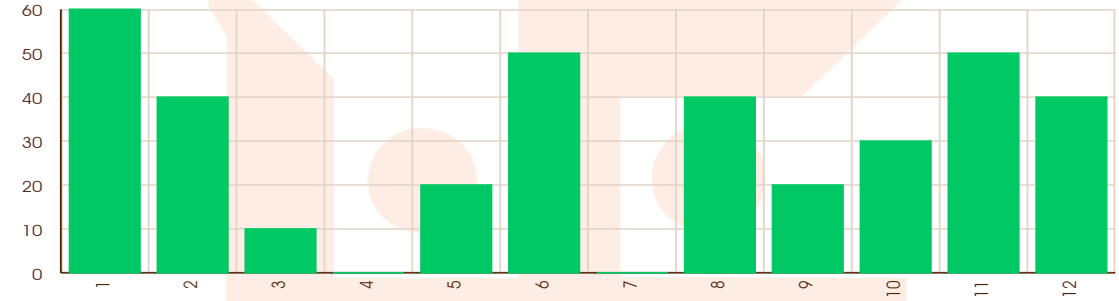

भावदृष्टि बल

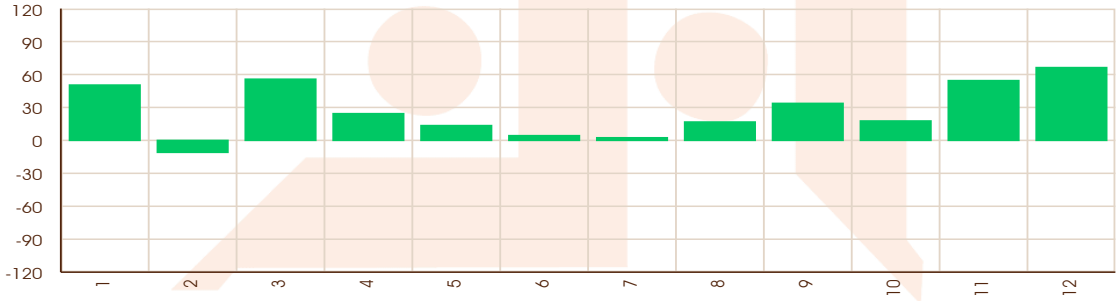

भाव बल

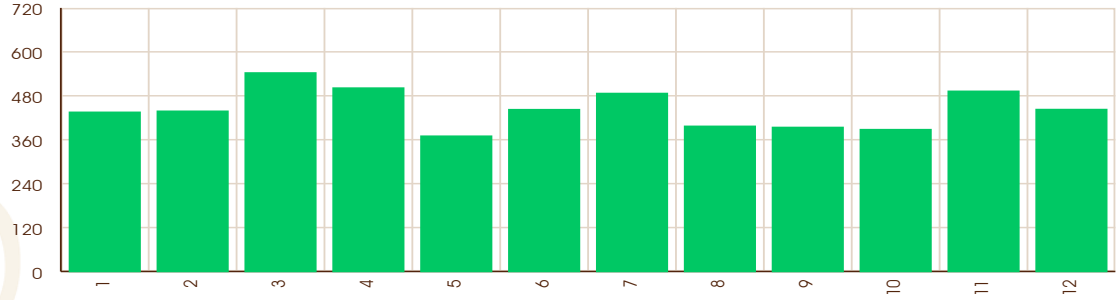

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

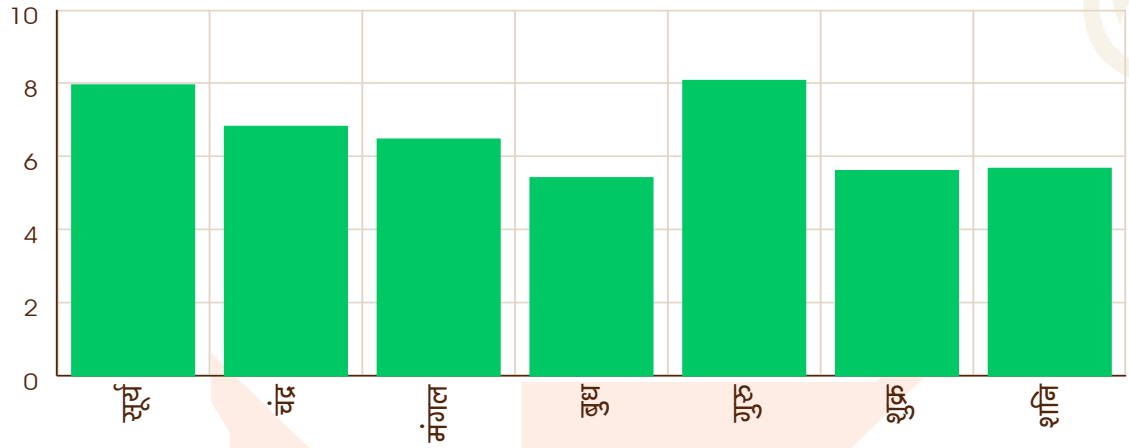

इष्ट - कष्ट फल

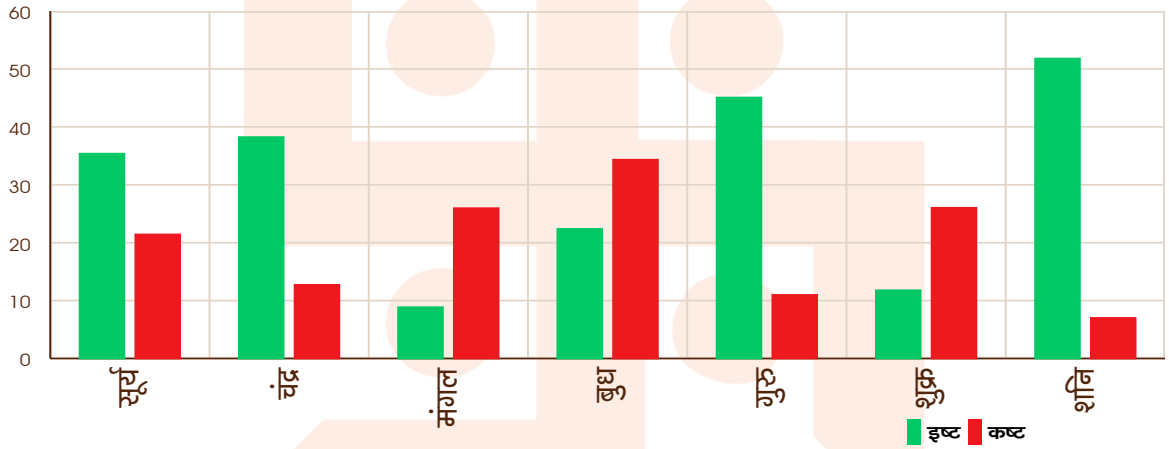

रूप भाव बल

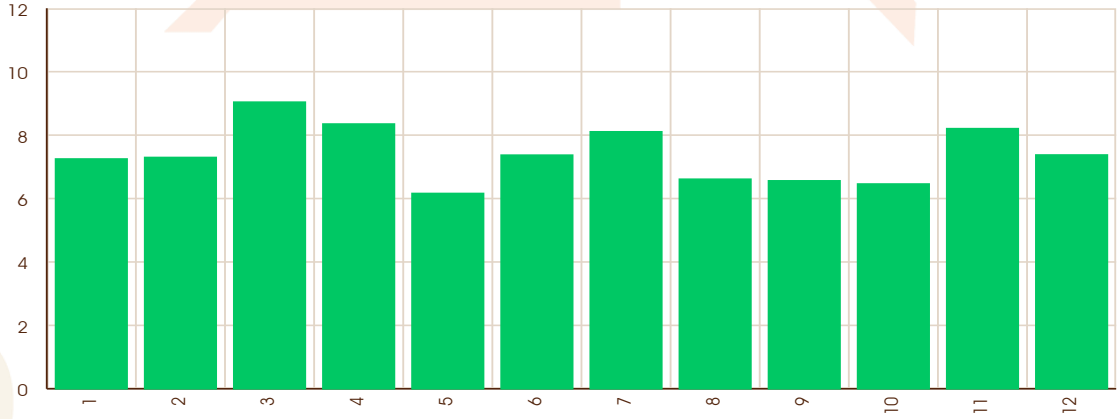

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मिथु	08:25:02	--	--	आर्द्रा	1	6
गुलिक	गु	वृष	17:59:07	--	--	रोहिणी	3	4
काल	का	मिथु	09:28:38	--	--	आर्द्रा	1	6
मृत्यु	मृ	कर्क	18:43:40	--	--	आश्लेषा	1	9
यमघंटक	यम	मीन	26:25:51	--	--	रेवती	3	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	08:52:34	--	--	मघा	3	10
धूम	धू	कर्क	11:20:21	--	--	पुष्य	3	8
व्यतिपात	व्य	धनु	18:39:39	--	--	पूर्वाषाढ़ा	2	20
परिवेश	परि	मिथु	18:39:39	उच्च	--	आर्द्रा	4	6
इन्द्रचाप	इ	मक	11:20:21	--	--	श्रवण	1	22
उपकेतु	उप	मक	28:00:21	--	--	धनिष्ठा	2	23

प्राणपद	:	कन्या	27:46:35	कारकाँश लग्न	:	मिथु	12:03:06
भाव लग्न	:	वृष	26:29:39	होरा लग्न	:	सिंह	24:58:58
घटी लग्न	:	वृष	20:26:54	वर्णद लग्न	:	सिंह	26:36:00

उपग्रह कुंडली

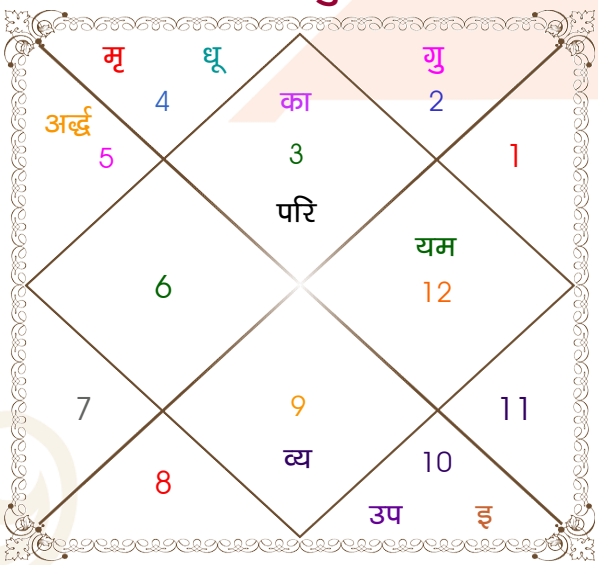

आरूढ़ कुंडली

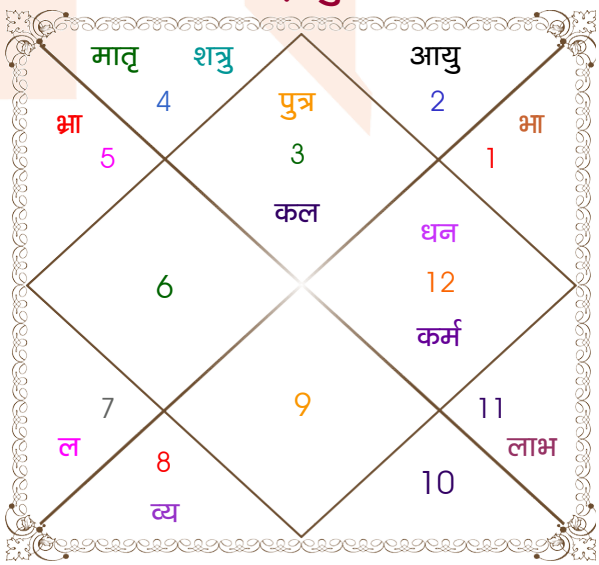

षन्नाडी चक्र

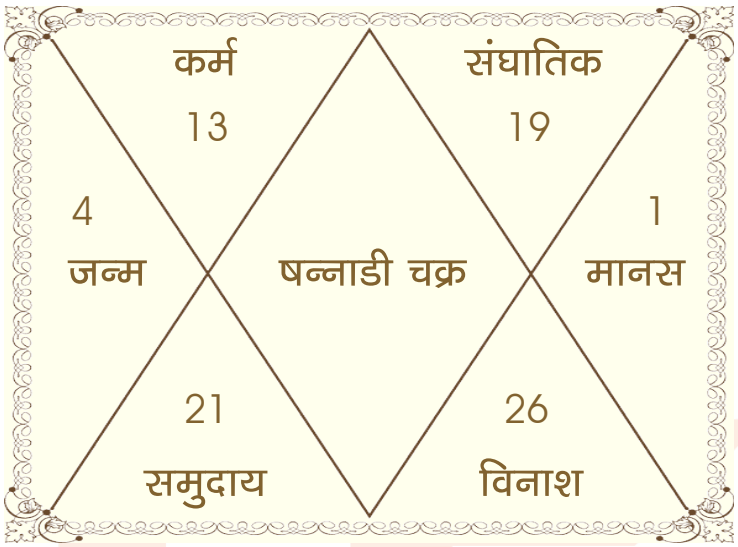

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	3	5	4	4	3	5	3	4	5	4	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
कुल	4	3	5	5	3	3	6	5	3	3	3	6	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	4	5	1	6	6	2	3	2	2	5	2	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	4	5	6	2	7	5	2	4	6	3	6	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
कुल	5	6	7	6	3	4	7	4	2	6	4	2	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
कुल	3	2	6	5	7	5	3	4	3	3	5	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
कुल	3	2	4	4	5	4	3	1	2	1	6	4	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सिं	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	5	2	4	3	4	5	3	5	6	4	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	1	6	4	3	2	4	4	5	4	3	39
गुरु	4	2	6	4	2	5	6	7	6	3	4	7	56
मंगल	5	1	6	6	2	3	2	2	5	2	1	4	39
सूर्य	4	4	3	5	3	4	5	4	4	4	3	5	48
शुक्र	6	5	7	5	3	4	3	3	5	6	3	2	52
बुध	6	2	7	5	2	4	6	3	6	4	4	5	54
चंद्र	6	4	3	5	5	3	3	6	5	3	3	3	49
बिन्दु	32	20	33	36	21	26	27	29	35	27	22	29	337
रेखा	24	36	23	20	35	30	29	27	21	29	34	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	3	3	1	1	1	3	3	3	0	18
गुरु	2	0	2	0	0	3	2	3	4	1	0	3	20
मंगल	3	0	5	4	0	2	1	0	3	1	0	2	21
सूर्य	1	0	0	1	0	0	2	0	1	0	0	1	6
शुक्र	3	1	4	3	0	0	0	1	2	2	0	0	16
बुध	4	0	3	2	0	2	2	0	4	2	0	2	21
चंद्र	1	1	0	2	0	0	0	3	0	0	0	0	7
रेखा	14	2	14	15	3	8	8	8	17	9	3	8	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	3	3	1	1	1	3	0	3	0	15
गुरु	2	0	0	0	0	3	2	1	1	1	0	3	13
मंगल	3	0	3	4	0	2	1	0	1	1	0	2	17
सूर्य	1	0	0	1	0	0	2	0	0	0	0	1	5
शुक्र	2	1	4	3	0	0	0	1	2	2	0	0	15
बुध	4	0	1	2	0	2	2	0	2	2	0	2	17
चंद्र	1	1	0	2	0	0	0	2	0	0	0	0	6
रेखा	13	2	8	15	3	8	8	5	9	6	3	8	88

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	37	41	116	120	101	104	122
ग्रह पिंड	8	5	46	46	69	5	66
शोध्य पिंड	45	46	162	166	170	109	188

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

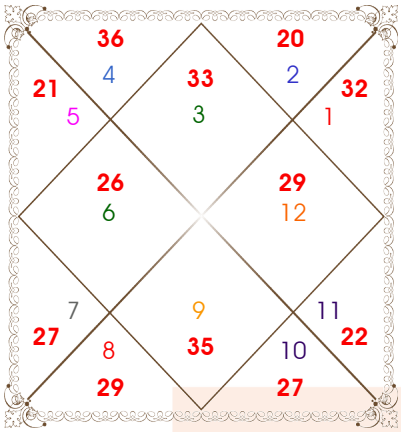

सूर्य का अष्टकवर्ग

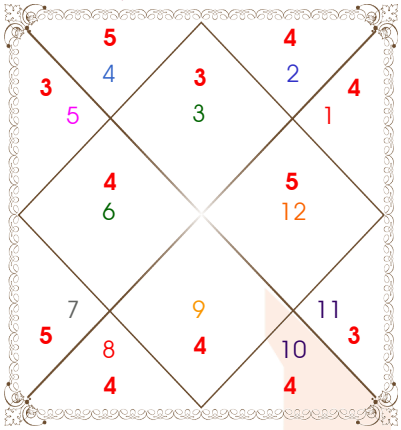

चंद्र का अष्टकवर्ग

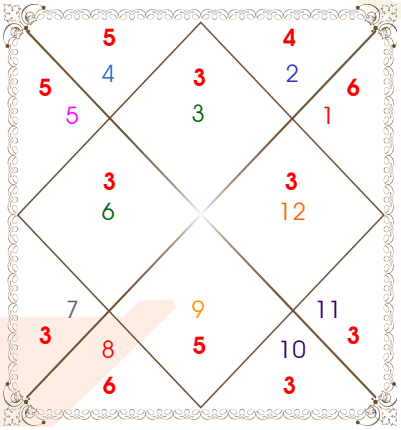

मंगल का अष्टकवर्ग

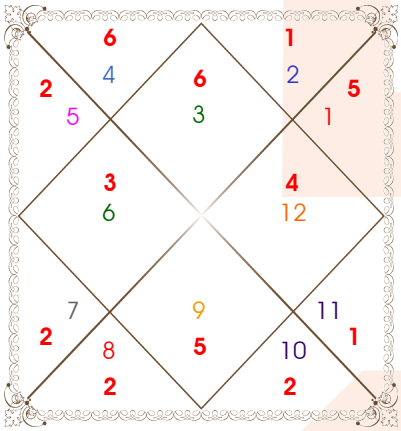

बुध का अष्टकवर्ग

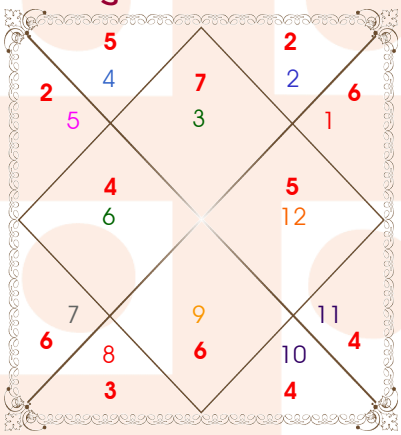

गुरु का अष्टकवर्ग

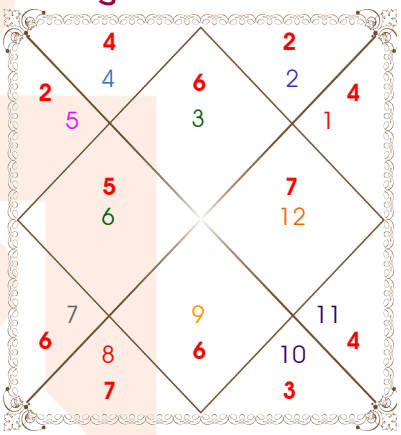

शुक्र का अष्टकवर्ग

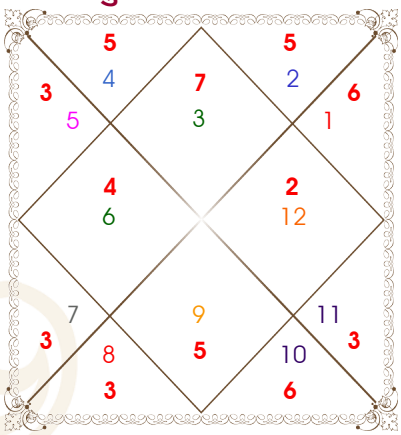

शनि का अष्टकवर्ग

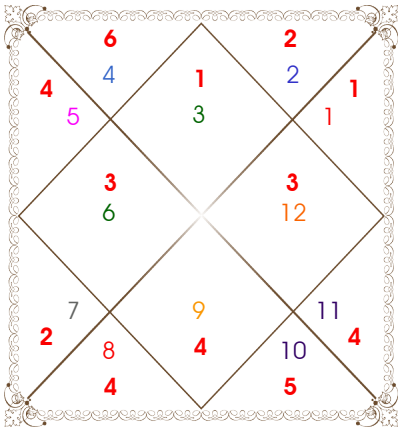

लग्न का अष्टकवर्ग

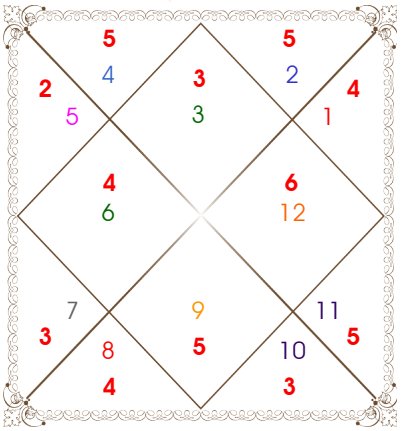

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

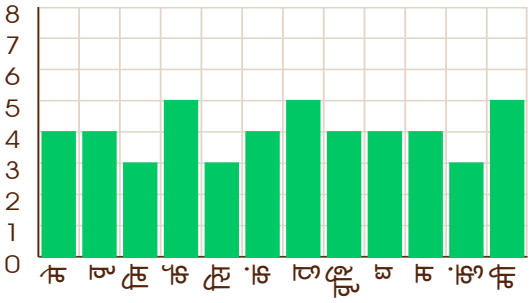

चन्द्र

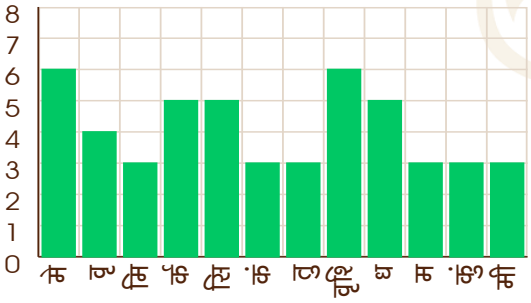

मंगल

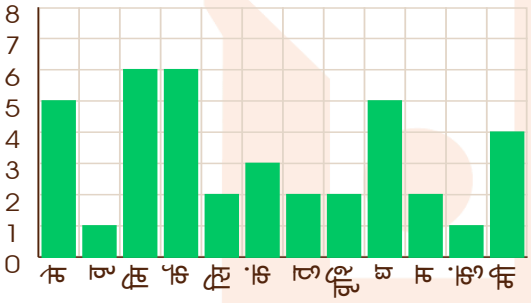

बुध

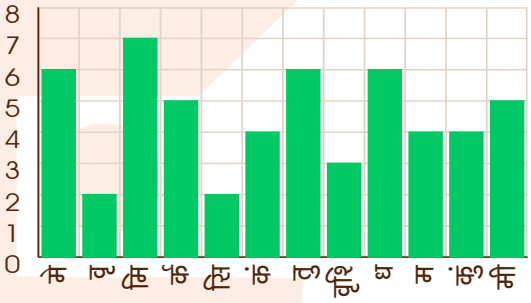

गुरु

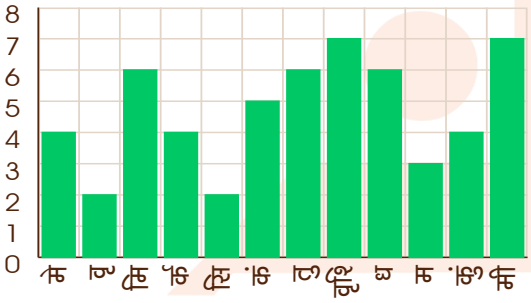

शुक्र

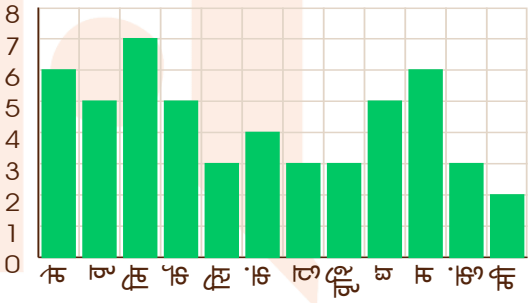

शनि

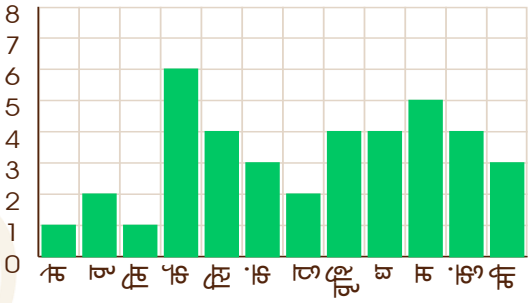

लग्न

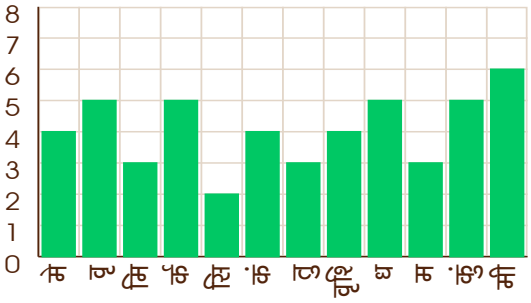

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

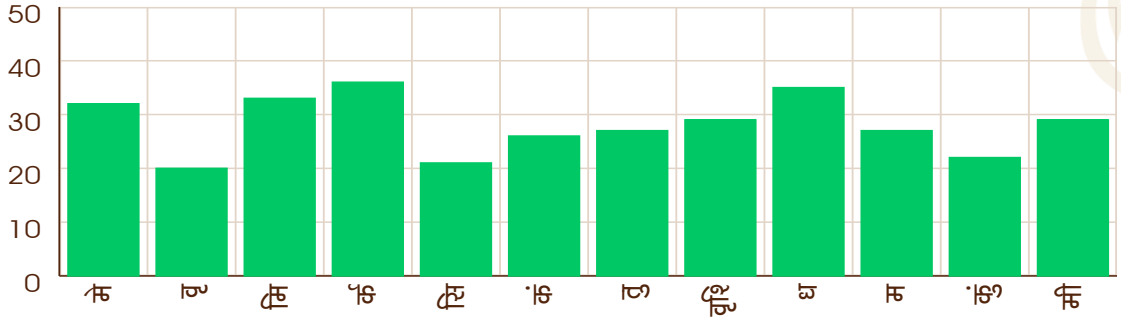

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

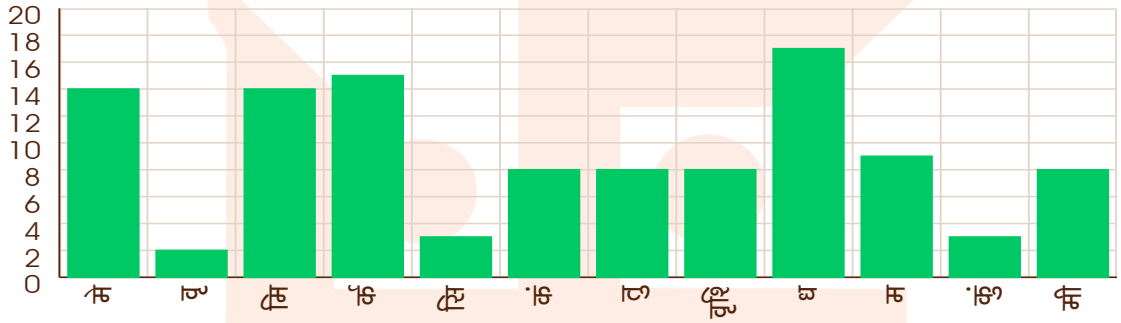

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

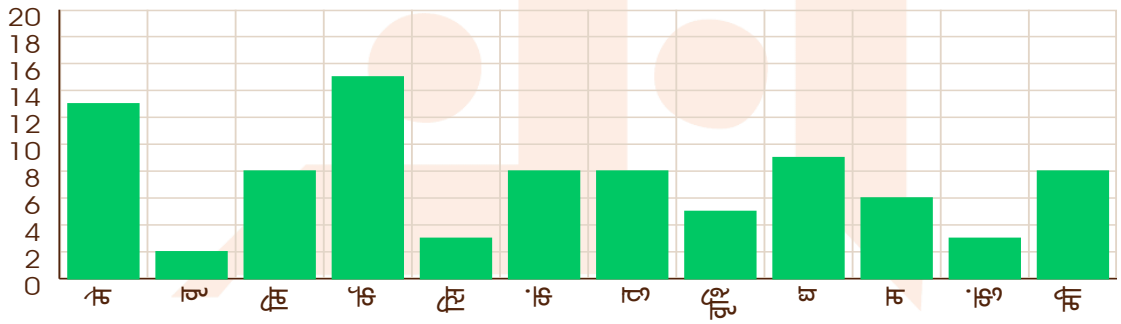

शोध्य पिंड

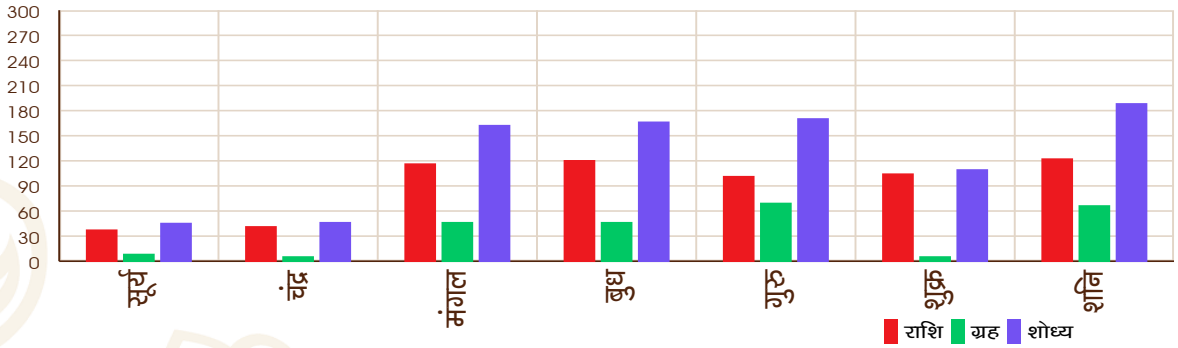

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 4 मास 14 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
12/03/1981		26/07/1985		26/07/1992		27/07/2010		27/07/2026	
26/07/1985		26/07/1992		27/07/2010		27/07/2026		26/07/2045	
	00/00/0000	मंगल	23/12/1985	राहु	08/04/1995	गुरु	13/09/2012	शनि	29/07/2029
	00/00/0000	राहु	10/01/1987	गुरु	01/09/1997	शनि	27/03/2015	बुध	08/04/2032
	00/00/0000	गुरु	17/12/1987	शनि	08/07/2000	बुध	02/07/2017	केतु	17/05/2033
	12/03/1981	शनि	25/01/1989	बुध	25/01/2003	केतु	08/06/2018	शुक्र	17/07/2036
शनि	27/05/1981	बुध	22/01/1990	केतु	13/02/2004	शुक्र	06/02/2021	सूर्य	29/06/2037
बुध	26/10/1982	केतु	20/06/1990	शुक्र	13/02/2007	सूर्य	25/11/2021	चंद्र	28/01/2039
केतु	27/05/1983	शुक्र	20/08/1991	सूर्य	07/01/2008	चंद्र	27/03/2023	मंगल	08/03/2040
शुक्र	25/01/1985	सूर्य	26/12/1991	चंद्र	08/07/2009	मंगल	02/03/2024	राहु	13/01/2043
सूर्य	26/07/1985	चंद्र	26/07/1992	मंगल	27/07/2010	राहु	27/07/2026	गुरु	26/07/2045

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
26/07/2045		27/07/2062		26/07/2069		26/07/2089		27/07/2095	
27/07/2062		26/07/2069		26/07/2089		27/07/2095		00/00/0000	
बुध	23/12/2047	केतु	23/12/2062	शुक्र	25/11/2072	सूर्य	13/11/2089	चंद्र	26/05/2096
केतु	19/12/2048	शुक्र	22/02/2064	सूर्य	25/11/2073	चंद्र	15/05/2090	मंगल	25/12/2096
शुक्र	20/10/2051	सूर्य	29/06/2064	चंद्र	27/07/2075	मंगल	19/09/2090	राहु	26/06/2098
सूर्य	26/08/2052	चंद्र	28/01/2065	मंगल	25/09/2076	राहु	14/08/2091	गुरु	26/10/2099
चंद्र	25/01/2054	मंगल	26/06/2065	राहु	26/09/2079	गुरु	01/06/2092	शनि	13/03/2101
मंगल	22/01/2055	राहु	14/07/2066	गुरु	27/05/2082	शनि	14/05/2093		00/00/0000
राहु	11/08/2057	गुरु	20/06/2067	शनि	26/07/2085	बुध	21/03/2094		00/00/0000
गुरु	17/11/2059	शनि	29/07/2068	बुध	26/05/2088	केतु	27/07/2094		00/00/0000
शनि	27/07/2062	बुध	26/07/2069	केतु	26/07/2089	शुक्र	27/07/2095		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 4 वर्ष 4 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
12/03/1981		27/05/1981		26/10/1982		27/05/1983		25/01/1985	
27/05/1981		26/10/1982		27/05/1983		25/01/1985		26/07/1985	
	00/00/0000	बुध	08/08/1981	केतु	07/11/1982	शुक्र	05/09/1983	सूर्य	03/02/1985
	00/00/0000	केतु	07/09/1981	शुक्र	13/12/1982	सूर्य	06/10/1983	चंद्र	18/02/1985
	00/00/0000	शुक्र	02/12/1981	सूर्य	24/12/1982	चंद्र	26/11/1983	मंगल	01/03/1985
	00/00/0000	सूर्य	28/12/1981	चंद्र	10/01/1983	मंगल	31/12/1983	राहु	28/03/1985
	00/00/0000	चंद्र	09/02/1982	मंगल	23/01/1983	राहु	31/03/1984	गुरु	22/04/1985
	00/00/0000	मंगल	11/03/1982	राहु	24/02/1983	गुरु	21/06/1984	शनि	20/05/1985
	00/00/0000	राहु	28/05/1982	गुरु	24/03/1983	शनि	25/09/1984	बुध	15/06/1985
	12/03/1981	गुरु	05/08/1982	शनि	27/04/1983	बुध	20/12/1984	केतु	26/06/1985
गुरु	27/05/1981	शनि	26/10/1982	बुध	27/05/1983	केतु	25/01/1985	शुक्र	26/07/1985

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
26/07/1985		23/12/1985		10/01/1987		17/12/1987		25/01/1989	
23/12/1985		10/01/1987		17/12/1987		25/01/1989		22/01/1990	
मंगल	04/08/1985	राहु	18/02/1986	गुरु	25/02/1987	शनि	19/02/1988	बुध	17/03/1989
राहु	26/08/1985	गुरु	10/04/1986	शनि	19/04/1987	बुध	16/04/1988	केतु	07/04/1989
गुरु	15/09/1985	शनि	10/06/1986	बुध	07/06/1987	केतु	10/05/1988	शुक्र	07/06/1989
शनि	09/10/1985	बुध	03/08/1986	केतु	27/06/1987	शुक्र	16/07/1988	सूर्य	25/06/1989
बुध	30/10/1985	केतु	26/08/1986	शुक्र	22/08/1987	सूर्य	06/08/1988	चंद्र	25/07/1989
केतु	08/11/1985	शुक्र	29/10/1986	सूर्य	09/09/1987	चंद्र	08/09/1988	मंगल	15/08/1989
शुक्र	03/12/1985	सूर्य	17/11/1986	चंद्र	07/10/1987	मंगल	02/10/1988	राहु	08/10/1989
सूर्य	10/12/1985	चंद्र	19/12/1986	मंगल	27/10/1987	राहु	02/12/1988	गुरु	26/11/1989
चंद्र	23/12/1985	मंगल	10/01/1987	राहु	17/12/1987	गुरु	25/01/1989	शनि	22/01/1990

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
22/01/1990		20/06/1990		20/08/1991		26/12/1991		26/07/1992	
20/06/1990		20/08/1991		26/12/1991		26/07/1992		08/04/1995	
केतु	31/01/1990	शुक्र	30/08/1990	सूर्य	27/08/1991	चंद्र	13/01/1992	राहु	21/12/1992
शुक्र	25/02/1990	सूर्य	20/09/1990	चंद्र	06/09/1991	मंगल	25/01/1992	गुरु	02/05/1993
सूर्य	04/03/1990	चंद्र	26/10/1990	मंगल	14/09/1991	राहु	26/02/1992	शनि	05/10/1993
चंद्र	16/03/1990	मंगल	20/11/1990	राहु	03/10/1991	गुरु	26/03/1992	बुध	21/02/1994
मंगल	25/03/1990	राहु	23/01/1991	गुरु	20/10/1991	शनि	28/04/1992	केतु	20/04/1994
राहु	17/04/1990	गुरु	21/03/1991	शनि	09/11/1991	बुध	29/05/1992	शुक्र	01/10/1994
गुरु	06/05/1990	शनि	27/05/1991	बुध	27/11/1991	केतु	10/06/1992	सूर्य	20/11/1994
शनि	30/05/1990	बुध	26/07/1991	केतु	05/12/1991	शुक्र	16/07/1992	चंद्र	10/02/1995
बुध	20/06/1990	केतु	20/08/1991	शुक्र	26/12/1991	सूर्य	26/07/1992	मंगल	08/04/1995

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
08/04/1995		01/09/1997		08/07/2000		25/01/2003		13/02/2004	
01/09/1997		08/07/2000		25/01/2003		13/02/2004		13/02/2007	
गुरु	03/08/1995	शनि	13/02/1998	बुध	17/11/2000	केतु	17/02/2003	शुक्र	13/08/2004
शनि	20/12/1995	बुध	10/07/1998	केतु	10/01/2001	शुक्र	22/04/2003	सूर्य	07/10/2004
बुध	22/04/1996	केतु	09/09/1998	शुक्र	14/06/2001	सूर्य	11/05/2003	चंद्र	07/01/2005
केतु	12/06/1996	शुक्र	01/03/1999	सूर्य	31/07/2001	चंद्र	12/06/2003	मंगल	11/03/2005
शुक्र	05/11/1996	सूर्य	22/04/1999	चंद्र	17/10/2001	मंगल	04/07/2003	राहु	23/08/2005
सूर्य	19/12/1996	चंद्र	18/07/1999	मंगल	10/12/2001	राहु	31/08/2003	गुरु	16/01/2006
चंद्र	02/03/1997	मंगल	17/09/1999	राहु	29/04/2002	गुरु	21/10/2003	शनि	08/07/2006
मंगल	22/04/1997	राहु	20/02/2000	गुरु	31/08/2002	शनि	20/12/2003	बुध	11/12/2006
राहु	01/09/1997	गुरु	08/07/2000	शनि	25/01/2003	बुध	13/02/2004	केतु	13/02/2007

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
13/02/2007		07/01/2008		08/07/2009		27/07/2010		13/09/2012	
07/01/2008		08/07/2009		27/07/2010		13/09/2012		27/03/2015	
सूर्य	01/03/2007	चंद्र	22/02/2008	मंगल	31/07/2009	गुरु	08/11/2010	शनि	06/02/2013
चंद्र	28/03/2007	मंगल	25/03/2008	राहु	26/09/2009	शनि	11/03/2011	बुध	17/06/2013
मंगल	17/04/2007	राहु	15/06/2008	गुरु	16/11/2009	बुध	29/06/2011	केतु	10/08/2013
राहु	05/06/2007	गुरु	27/08/2008	शनि	16/01/2010	केतु	14/08/2011	शुक्र	12/01/2014
गुरु	19/07/2007	शनि	22/11/2008	बुध	11/03/2010	शुक्र	22/12/2011	सूर्य	27/02/2014
शनि	09/09/2007	बुध	07/02/2009	केतु	03/04/2010	सूर्य	30/01/2012	चंद्र	15/05/2014
बुध	25/10/2007	केतु	11/03/2009	शुक्र	06/06/2010	चंद्र	04/04/2012	मंगल	08/07/2014
केतु	13/11/2007	शुक्र	11/06/2009	सूर्य	25/06/2010	मंगल	19/05/2012	राहु	24/11/2014
शुक्र	07/01/2008	सूर्य	08/07/2009	चंद्र	27/07/2010	राहु	13/09/2012	गुरु	27/03/2015

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
27/03/2015		02/07/2017		08/06/2018		06/02/2021		25/11/2021	
02/07/2017		08/06/2018		06/02/2021		25/11/2021		27/03/2023	
बुध	22/07/2015	केतु	22/07/2017	शुक्र	17/11/2018	सूर्य	21/02/2021	चंद्र	05/01/2022
केतु	09/09/2015	शुक्र	17/09/2017	सूर्य	05/01/2019	चंद्र	17/03/2021	मंगल	02/02/2022
शुक्र	25/01/2016	सूर्य	04/10/2017	चंद्र	27/03/2019	मंगल	03/04/2021	राहु	16/04/2022
सूर्य	06/03/2016	चंद्र	01/11/2017	मंगल	23/05/2019	राहु	17/05/2021	गुरु	20/06/2022
चंद्र	14/05/2016	मंगल	21/11/2017	राहु	16/10/2019	गुरु	25/06/2021	शनि	05/09/2022
मंगल	01/07/2016	राहु	11/01/2018	गुरु	23/02/2020	शनि	10/08/2021	बुध	13/11/2022
राहु	03/11/2016	गुरु	26/02/2018	शनि	26/07/2020	बुध	20/09/2021	केतु	12/12/2022
गुरु	21/02/2017	शनि	21/04/2018	बुध	11/12/2020	केतु	07/10/2021	शुक्र	03/03/2023
शनि	02/07/2017	बुध	08/06/2018	केतु	06/02/2021	शुक्र	25/11/2021	सूर्य	27/03/2023

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
27/03/2023		02/03/2024		27/07/2026		29/07/2029		08/04/2032	
02/03/2024		27/07/2026		29/07/2029		08/04/2032		17/05/2033	
मंगल	16/04/2023	राहु	12/07/2024	शनि	17/01/2027	बुध	16/12/2029	केतु	01/05/2032
राहु	06/06/2023	गुरु	05/11/2024	बुध	21/06/2027	केतु	11/02/2030	शुक्र	08/07/2032
गुरु	22/07/2023	शनि	24/03/2025	केतु	24/08/2027	शुक्र	25/07/2030	सूर्य	28/07/2032
शनि	14/09/2023	बुध	26/07/2025	शुक्र	24/02/2028	सूर्य	12/09/2030	चंद्र	31/08/2032
बुध	01/11/2023	केतु	16/09/2025	सूर्य	18/04/2028	चंद्र	03/12/2030	मंगल	23/09/2032
केतु	21/11/2023	शुक्र	09/02/2026	चंद्र	19/07/2028	मंगल	29/01/2031	राहु	23/11/2032
शुक्र	17/01/2024	सूर्य	24/03/2026	मंगल	21/09/2028	राहु	26/06/2031	गुरु	16/01/2033
सूर्य	03/02/2024	चंद्र	06/06/2026	राहु	05/03/2029	गुरु	04/11/2031	शनि	21/03/2033
चंद्र	02/03/2024	मंगल	27/07/2026	गुरु	29/07/2029	शनि	08/04/2032	बुध	17/05/2033

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
17/05/2033		17/07/2036		29/06/2037		28/01/2039		08/03/2040	
17/07/2036		29/06/2037		28/01/2039		08/03/2040		13/01/2043	
शुक्र	26/11/2033	सूर्य	03/08/2036	चंद्र	16/08/2037	मंगल	21/02/2039	राहु	11/08/2040
सूर्य	23/01/2034	चंद्र	01/09/2036	मंगल	19/09/2037	राहु	23/04/2039	गुरु	28/12/2040
चंद्र	29/04/2034	मंगल	22/09/2036	राहु	15/12/2037	गुरु	16/06/2039	शनि	11/06/2041
मंगल	06/07/2034	राहु	13/11/2036	गुरु	02/03/2038	शनि	19/08/2039	बुध	05/11/2041
राहु	26/12/2034	गुरु	29/12/2036	शनि	01/06/2038	बुध	15/10/2039	केतु	05/01/2042
गुरु	30/05/2035	शनि	22/02/2037	बुध	22/08/2038	केतु	08/11/2039	शुक्र	28/06/2042
शनि	29/11/2035	बुध	12/04/2037	केतु	25/09/2038	शुक्र	14/01/2040	सूर्य	19/08/2042
बुध	11/05/2036	केतु	02/05/2037	शुक्र	30/12/2038	सूर्य	03/02/2040	चंद्र	13/11/2042
केतु	17/07/2036	शुक्र	29/06/2037	सूर्य	28/01/2039	चंद्र	08/03/2040	मंगल	13/01/2043

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
13/01/2043		26/07/2045		23/12/2047		19/12/2048		20/10/2051	
26/07/2045		23/12/2047		19/12/2048		20/10/2051		26/08/2052	
गुरु	16/05/2043	बुध	28/11/2045	केतु	13/01/2048	शुक्र	10/06/2049	सूर्य	05/11/2051
शनि	10/10/2043	केतु	18/01/2046	शुक्र	14/03/2048	सूर्य	31/07/2049	चंद्र	01/12/2051
बुध	18/02/2044	शुक्र	14/06/2046	सूर्य	01/04/2048	चंद्र	26/10/2049	मंगल	19/12/2051
केतु	12/04/2044	सूर्य	28/07/2046	चंद्र	01/05/2048	मंगल	25/12/2049	राहु	03/02/2052
शुक्र	13/09/2044	चंद्र	09/10/2046	मंगल	22/05/2048	राहु	29/05/2050	गुरु	16/03/2052
सूर्य	30/10/2044	मंगल	30/11/2046	राहु	15/07/2048	गुरु	14/10/2050	शनि	04/05/2052
चंद्र	15/01/2045	राहु	10/04/2047	गुरु	02/09/2048	शनि	27/03/2051	बुध	17/06/2052
मंगल	10/03/2045	गुरु	06/08/2047	शनि	29/10/2048	बुध	21/08/2051	केतु	05/07/2052
राहु	26/07/2045	शनि	23/12/2047	बुध	19/12/2048	केतु	20/10/2051	शुक्र	26/08/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
26/08/2052		25/01/2054		22/01/2055		11/08/2057		17/11/2059	
25/01/2054		22/01/2055		11/08/2057		17/11/2059		27/07/2062	
चंद्र	08/10/2052	मंगल	15/02/2054	राहु	11/06/2055	गुरु	29/11/2057	शनि	20/04/2060
मंगल	07/11/2052	राहु	10/04/2054	गुरु	13/10/2055	शनि	09/04/2058	बुध	06/09/2060
राहु	24/01/2053	गुरु	29/05/2054	शनि	09/03/2056	बुध	04/08/2058	केतु	03/11/2060
गुरु	03/04/2053	शनि	25/07/2054	बुध	19/07/2056	केतु	22/09/2058	शुक्र	16/04/2061
शनि	23/06/2053	बुध	14/09/2054	केतु	11/09/2056	शुक्र	07/02/2059	सूर्य	04/06/2061
बुध	05/09/2053	केतु	06/10/2054	शुक्र	13/02/2057	सूर्य	20/03/2059	चंद्र	25/08/2061
केतु	05/10/2053	शुक्र	05/12/2054	सूर्य	01/04/2057	चंद्र	28/05/2059	मंगल	21/10/2061
शुक्र	30/12/2053	सूर्य	23/12/2054	चंद्र	17/06/2057	मंगल	15/07/2059	राहु	18/03/2062
सूर्य	25/01/2054	चंद्र	22/01/2055	मंगल	11/08/2057	राहु	17/11/2059	गुरु	27/07/2062

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
27/07/2062		23/12/2062		22/02/2064		29/06/2064		28/01/2065	
23/12/2062		22/02/2064		29/06/2064		28/01/2065		26/06/2065	
केतु	04/08/2062	शुक्र	04/03/2063	सूर्य	28/02/2064	चंद्र	17/07/2064	मंगल	06/02/2065
शुक्र	29/08/2062	सूर्य	25/03/2063	चंद्र	10/03/2064	मंगल	29/07/2064	राहु	28/02/2065
सूर्य	06/09/2062	चंद्र	30/04/2063	मंगल	17/03/2064	राहु	30/08/2064	गुरु	20/03/2065
चंद्र	18/09/2062	मंगल	25/05/2063	राहु	06/04/2064	गुरु	27/09/2064	शनि	12/04/2065
मंगल	27/09/2062	राहु	27/07/2063	गुरु	23/04/2064	शनि	31/10/2064	बुध	04/05/2065
राहु	19/10/2062	गुरु	22/09/2063	शनि	13/05/2064	बुध	30/11/2064	केतु	12/05/2065
गुरु	08/11/2062	शनि	29/11/2063	बुध	31/05/2064	केतु	13/12/2064	शुक्र	06/06/2065
शनि	02/12/2062	बुध	28/01/2064	केतु	07/06/2064	शुक्र	17/01/2065	सूर्य	14/06/2065
बुध	23/12/2062	केतु	22/02/2064	शुक्र	29/06/2064	सूर्य	28/01/2065	चंद्र	26/06/2065

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
26/06/2065		14/07/2066		20/06/2067		29/07/2068		26/07/2069	
14/07/2066		20/06/2067		29/07/2068		26/07/2069		25/11/2072	
राहु	23/08/2065	गुरु	29/08/2066	शनि	23/08/2067	बुध	19/09/2068	शुक्र	14/02/2070
गुरु	13/10/2065	शनि	22/10/2066	बुध	20/10/2067	केतु	10/10/2068	सूर्य	16/04/2070
शनि	12/12/2065	बुध	09/12/2066	केतु	12/11/2067	शुक्र	09/12/2068	चंद्र	27/07/2070
बुध	05/02/2066	केतु	29/12/2066	शुक्र	19/01/2068	सूर्य	27/12/2068	मंगल	06/10/2070
केतु	27/02/2066	शुक्र	24/02/2067	सूर्य	08/02/2068	चंद्र	26/01/2069	राहु	06/04/2071
शुक्र	02/05/2066	सूर्य	13/03/2067	चंद्र	13/03/2068	मंगल	16/02/2069	गुरु	16/09/2071
सूर्य	21/05/2066	चंद्र	10/04/2067	मंगल	06/04/2068	राहु	12/04/2069	शनि	26/03/2072
चंद्र	22/06/2066	मंगल	30/04/2067	राहु	05/06/2068	गुरु	30/05/2069	बुध	15/09/2072
मंगल	14/07/2066	राहु	20/06/2067	गुरु	29/07/2068	शनि	26/07/2069	केतु	25/11/2072

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
25/11/2072		25/11/2073		27/07/2075		25/09/2076		26/09/2079	
25/11/2073		27/07/2075		25/09/2076		26/09/2079		27/05/2082	
सूर्य	13/12/2072	चंद्र	15/01/2074	मंगल	21/08/2075	राहु	08/03/2077	गुरु	03/02/2080
चंद्र	13/01/2073	मंगल	19/02/2074	राहु	24/10/2075	गुरु	02/08/2077	शनि	06/07/2080
मंगल	03/02/2073	राहु	22/05/2074	गुरु	20/12/2075	शनि	22/01/2078	बुध	21/11/2080
राहु	30/03/2073	गुरु	11/08/2074	शनि	25/02/2076	बुध	26/06/2078	केतु	17/01/2081
गुरु	17/05/2073	शनि	15/11/2074	बुध	25/04/2076	केतु	29/08/2078	शुक्र	28/06/2081
शनि	14/07/2073	बुध	10/02/2075	केतु	20/05/2076	शुक्र	28/02/2079	सूर्य	16/08/2081
बुध	04/09/2073	केतु	17/03/2075	शुक्र	30/07/2076	सूर्य	24/04/2079	चंद्र	05/11/2081
केतु	25/09/2073	शुक्र	26/06/2075	सूर्य	21/08/2076	चंद्र	24/07/2079	मंगल	01/01/2082
शुक्र	25/11/2073	सूर्य	27/07/2075	चंद्र	25/09/2076	मंगल	26/09/2079	राहु	27/05/2082

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
27/05/2082		26/07/2085		26/05/2088		26/07/2089		13/11/2089	
26/07/2085		26/05/2088		26/07/2089		13/11/2089		15/05/2090	
शनि	26/11/2082	बुध	20/12/2085	केतु	20/06/2088	सूर्य	01/08/2089	चंद्र	28/11/2089
बुध	09/05/2083	केतु	18/02/2086	शुक्र	30/08/2088	चंद्र	10/08/2089	मंगल	09/12/2089
केतु	15/07/2083	शुक्र	10/08/2086	सूर्य	20/09/2088	मंगल	16/08/2089	राहु	05/01/2090
शुक्र	24/01/2084	सूर्य	01/10/2086	चंद्र	26/10/2088	राहु	02/09/2089	गुरु	30/01/2090
सूर्य	22/03/2084	चंद्र	26/12/2086	मंगल	20/11/2088	गुरु	16/09/2089	शनि	28/02/2090
चंद्र	26/06/2084	मंगल	24/02/2087	राहु	23/01/2089	शनि	04/10/2089	बुध	25/03/2090
मंगल	02/09/2084	राहु	29/07/2087	गुरु	21/03/2089	बुध	19/10/2089	केतु	05/04/2090
राहु	22/02/2085	गुरु	14/12/2087	शनि	27/05/2089	केतु	26/10/2089	शुक्र	05/05/2090
गुरु	26/07/2085	शनि	26/05/2088	बुध	26/07/2089	शुक्र	13/11/2089	सूर्य	15/05/2090

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
15/05/2090		19/09/2090		14/08/2091		01/06/2092		14/05/2093	
19/09/2090		14/08/2091		01/06/2092		14/05/2093		21/03/2094	
मंगल	22/05/2090	राहु	08/11/2090	गुरु	22/09/2091	शनि	26/07/2092	बुध	27/06/2093
राहु	10/06/2090	गुरु	22/12/2090	शनि	07/11/2091	बुध	13/09/2092	केतु	15/07/2093
गुरु	27/06/2090	शनि	12/02/2091	बुध	19/12/2091	केतु	04/10/2092	शुक्र	05/09/2093
शनि	18/07/2090	बुध	30/03/2091	केतु	05/01/2092	शुक्र	01/12/2092	सूर्य	21/09/2093
बुध	05/08/2090	केतु	18/04/2091	शुक्र	23/02/2092	सूर्य	18/12/2092	चंद्र	17/10/2093
केतु	12/08/2090	शुक्र	12/06/2091	सूर्य	08/03/2092	चंद्र	16/01/2093	मंगल	04/11/2093
शुक्र	02/09/2090	सूर्य	29/06/2091	चंद्र	02/04/2092	मंगल	05/02/2093	राहु	20/12/2093
सूर्य	09/09/2090	चंद्र	26/07/2091	मंगल	19/04/2092	राहु	29/03/2093	गुरु	31/01/2094
चंद्र	19/09/2090	मंगल	14/08/2091	राहु	01/06/2092	गुरु	14/05/2093	शनि	21/03/2094

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - राहु - शुक्र	
16/09/2025 01:09	
09/02/2026 03:33	
शुक्र	10/10/2025 09:33
सूर्य	17/10/2025 16:52
चंद्र	29/10/2025 21:04
मंगल	07/11/2025 09:36
राहु	29/11/2025 07:34
गुरु	18/12/2025 19:05
शनि	10/01/2026 22:16
बुध	31/01/2026 15:00
केतु	09/02/2026 03:33

गुरु - राहु - सूर्य	
09/02/2026 03:33	
24/03/2026 23:28	
सूर्य	11/02/2026 08:08
चंद्र	14/02/2026 23:48
मंगल	17/02/2026 13:10
राहु	24/02/2026 02:57
गुरु	01/03/2026 23:12
शनि	08/03/2026 21:46
बुध	15/03/2026 02:47
केतु	17/03/2026 16:09
शुक्र	24/03/2026 23:28

गुरु - राहु - चंद्र	
24/03/2026 23:28	
06/06/2026 00:40	
चंद्र	31/03/2026 01:34
मंगल	04/04/2026 07:50
राहु	15/04/2026 06:49
गुरु	25/04/2026 00:34
शनि	06/05/2026 14:10
बुध	16/05/2026 22:32
केतु	21/05/2026 04:48
शुक्र	02/06/2026 09:00
सूर्य	06/06/2026 00:40

गुरु - राहु - मंगल	
06/06/2026 00:40	
27/07/2026 03:54	
मंगल	09/06/2026 00:15
राहु	16/06/2026 16:20
गुरु	23/06/2026 11:58
शनि	01/07/2026 14:17
बुध	08/07/2026 20:09
केतु	11/07/2026 19:44
शुक्र	20/07/2026 08:16
सूर्य	22/07/2026 21:38
चंद्र	27/07/2026 03:54

शनि - शनि - शनि	
27/07/2026 03:54	
17/01/2027 03:19	
शनि	23/08/2026 17:01
बुध	17/09/2026 08:32
केतु	27/09/2026 12:06
शुक्र	26/10/2026 12:00
सूर्य	04/11/2026 04:46
चंद्र	18/11/2026 16:43
मंगल	28/11/2026 20:17
राहु	24/12/2026 22:36
गुरु	17/01/2027 03:19

शनि - शनि - बुध	
17/01/2027 03:19	
21/06/2027 19:13	
बुध	08/02/2027 04:34
केतु	17/02/2027 06:30
शुक्र	15/03/2027 05:09
सूर्य	22/03/2027 23:57
चंद्र	04/04/2027 23:16
मंगल	14/04/2027 01:12
राहु	07/05/2027 09:35
गुरु	28/05/2027 03:42
शनि	21/06/2027 19:13

शनि - शनि - केतु	
21/06/2027 19:13	
24/08/2027 21:32	
केतु	25/06/2027 12:57
शुक्र	06/07/2027 05:20
सूर्य	09/07/2027 10:15
चंद्र	14/07/2027 18:27
मंगल	18/07/2027 12:11
राहु	28/07/2027 02:56
गुरु	05/08/2027 16:02
शनि	15/08/2027 19:36
बुध	24/08/2027 21:32

शनि - शनि - शुक्र	
24/08/2027 21:32	
24/02/2028 00:42	
शुक्र	24/09/2027 10:04
सूर्य	03/10/2027 13:49
चंद्र	18/10/2027 20:05
मंगल	29/10/2027 12:28
राहु	25/11/2027 23:45
गुरु	20/12/2027 09:46
शनि	18/01/2028 09:40
बुध	13/02/2028 08:19
केतु	24/02/2028 00:42

शनि - शनि - सूर्य	
24/02/2028 00:42	
18/04/2028 23:15	
सूर्य	26/02/2028 18:38
चंद्र	02/03/2028 08:31
मंगल	05/03/2028 13:26
राहु	13/03/2028 19:13
गुरु	21/03/2028 03:01
शनि	29/03/2028 19:47
बुध	06/04/2028 14:35
केतु	09/04/2028 19:30
शुक्र	18/04/2028 23:15

शनि - शनि - चंद्र	
18/04/2028 23:15	
19/07/2028 12:51	
चंद्र	26/04/2028 14:23
मंगल	01/05/2028 22:35
राहु	15/05/2028 16:13
गुरु	27/05/2028 21:14
शनि	11/06/2028 09:11
बुध	24/06/2028 08:30
केतु	29/06/2028 16:42
शुक्र	14/07/2028 22:58
सूर्य	19/07/2028 12:51

शनि - शनि - मंगल	
19/07/2028 12:51	
21/09/2028 15:09	
मंगल	23/07/2028 06:35
राहु	01/08/2028 21:20
गुरु	10/08/2028 10:26
शनि	20/08/2028 14:00
बुध	29/08/2028 15:56
केतु	02/09/2028 09:40
शुक्र	13/09/2028 02:03
सूर्य	16/09/2028 06:58
चंद्र	21/09/2028 15:09

शनि - शनि - राहु	
21/09/2028 15:09	
05/03/2029 10:49	
राहु	16/10/2028 08:30
गुरु	07/11/2028 07:56
शनि	03/12/2028 10:14
बुध	26/12/2028 18:37
केतु	05/01/2029 09:22
शुक्र	01/02/2029 20:39
सूर्य	10/02/2029 02:26
चंद्र	23/02/2029 20:04
मंगल	05/03/2029 10:49

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शनि - गुरु	
05/03/2029 10:49	
29/07/2029 22:57	
गुरु	24/03/2029 23:38
शनि	17/04/2029 04:21
बुध	07/05/2029 22:28
केतु	16/05/2029 11:35
शुक्र	09/06/2029 21:36
सूर्य	17/06/2029 05:25
चंद्र	29/06/2029 10:25
मंगल	07/07/2029 23:32
राहु	29/07/2029 22:57

शनि - बुध - बुध	
29/07/2029 22:57	
16/12/2029 05:36	
बुध	18/08/2029 16:30
केतु	26/08/2029 19:29
शुक्र	19/09/2029 00:35
सूर्य	25/09/2029 23:43
चंद्र	07/10/2029 14:17
मंगल	15/10/2029 17:16
राहु	05/11/2029 14:40
गुरु	24/11/2029 04:21
शनि	16/12/2029 05:36

शनि - बुध - केतु	
16/12/2029 05:36	
11/02/2030 13:59	
केतु	19/12/2029 13:53
शुक्र	29/12/2029 03:17
सूर्य	01/01/2030 00:06
चंद्र	05/01/2030 18:48
मंगल	09/01/2030 03:06
राहु	17/01/2030 17:33
गुरु	25/01/2030 09:04
शनि	03/02/2030 11:00
बुध	11/02/2030 13:59

शनि - बुध - शुक्र	
11/02/2030 13:59	
25/07/2030 10:30	
शुक्र	10/03/2030 21:24
सूर्य	19/03/2030 02:02
चंद्र	01/04/2030 17:44
मंगल	11/04/2030 07:08
राहु	05/05/2030 21:01
गुरु	27/05/2030 17:21
शनि	22/06/2030 16:00
बुध	15/07/2030 21:07
केतु	25/07/2030 10:30

शनि - बुध - सूर्य	
25/07/2030 10:30	
12/09/2030 14:16	
सूर्य	27/07/2030 21:30
चंद्र	31/07/2030 23:49
मंगल	03/08/2030 20:38
राहु	11/08/2030 05:36
गुरु	17/08/2030 18:54
शनि	25/08/2030 13:41
बुध	01/09/2030 12:49
केतु	04/09/2030 09:38
शुक्र	12/09/2030 14:16

शनि - बुध - चंद्र	
12/09/2030 14:16	
03/12/2030 12:32	
चंद्र	19/09/2030 10:07
मंगल	24/09/2030 04:49
राहु	06/10/2030 11:46
गुरु	17/10/2030 09:56
शनि	30/10/2030 09:15
बुध	10/11/2030 23:48
केतु	15/11/2030 18:30
शुक्र	29/11/2030 10:13
सूर्य	03/12/2030 12:32

शनि - बुध - मंगल	
03/12/2030 12:32	
29/01/2031 20:55	
मंगल	06/12/2030 20:49
राहु	15/12/2030 11:16
गुरु	23/12/2030 02:48
शनि	01/01/2031 04:43
बुध	09/01/2031 07:42
केतु	12/01/2031 16:00
शुक्र	22/01/2031 05:24
सूर्य	25/01/2031 02:13
चंद्र	29/01/2031 20:55

शनि - बुध - राहु	
29/01/2031 20:55	
26/06/2031 08:11	
राहु	20/02/2031 23:48
गुरु	12/03/2031 15:42
शनि	05/04/2031 00:05
बुध	25/04/2031 21:29
केतु	04/05/2031 11:57
शुक्र	29/05/2031 01:49
सूर्य	05/06/2031 10:47
चंद्र	17/06/2031 17:44
मंगल	26/06/2031 08:11

शनि - बुध - गुरु	
26/06/2031 08:11	
04/11/2031 10:12	
गुरु	13/07/2031 19:39
शनि	03/08/2031 13:46
बुध	22/08/2031 03:28
केतु	29/08/2031 18:59
शुक्र	20/09/2031 15:19
सूर्य	27/09/2031 04:37
चंद्र	08/10/2031 02:47
मंगल	15/10/2031 18:18
राहु	04/11/2031 10:12

शनि - बुध - शनि	
04/11/2031 10:12	
08/04/2032 02:06	
शनि	29/11/2031 01:43
बुध	21/12/2031 02:58
केतु	30/12/2031 04:54
शुक्र	25/01/2032 03:33
सूर्य	01/02/2032 22:21
चंद्र	14/02/2032 21:40
मंगल	23/02/2032 23:36
राहु	18/03/2032 07:59
गुरु	08/04/2032 02:06

शनि - केतु - केतु	
08/04/2032 02:06	
01/05/2032 16:51	
केतु	09/04/2032 11:10
शुक्र	13/04/2032 09:37
सूर्य	14/04/2032 13:58
चंद्र	16/04/2032 13:11
मंगल	17/04/2032 22:15
राहु	21/04/2032 11:16
गुरु	24/04/2032 14:50
शनि	28/04/2032 08:34
बुध	01/05/2032 16:51

शनि - केतु - शुक्र	
01/05/2032 16:51	
08/07/2032 04:07	
शुक्र	12/05/2032 22:44
सूर्य	16/05/2032 07:42
चंद्र	21/05/2032 22:38
मंगल	25/05/2032 21:05
राहु	04/06/2032 23:59
गुरु	13/06/2032 23:53
शनि	24/06/2032 16:16
बुध	04/07/2032 05:40
केतु	08/07/2032 04:07

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - केतु - सूर्य	
08/07/2032 04:07	
28/07/2032 09:54	
सूर्य	09/07/2032 04:25
चंद्र	10/07/2032 20:54
मंगल	12/07/2032 01:14
राहु	15/07/2032 02:06
गुरु	17/07/2032 18:52
शनि	20/07/2032 23:47
बुध	23/07/2032 20:36
केतु	25/07/2032 00:57
शुक्र	28/07/2032 09:54

शनि - केतु - चंद्र	
28/07/2032 09:54	
31/08/2032 03:33	
चंद्र	31/07/2032 05:23
मंगल	02/08/2032 04:36
राहु	07/08/2032 06:03
गुरु	11/08/2032 18:00
शनि	17/08/2032 02:12
बुध	21/08/2032 20:54
केतु	23/08/2032 20:07
शुक्र	29/08/2032 11:04
सूर्य	31/08/2032 03:33

शनि - केतु - मंगल	
31/08/2032 03:33	
23/09/2032 18:17	
मंगल	01/09/2032 12:36
राहु	05/09/2032 01:37
गुरु	08/09/2032 05:11
शनि	11/09/2032 22:55
बुध	15/09/2032 07:12
केतु	16/09/2032 16:16
शुक्र	20/09/2032 14:43
सूर्य	21/09/2032 19:04
चंद्र	23/09/2032 18:17

शनि - केतु - राहु	
23/09/2032 18:17	
23/11/2032 11:38	
राहु	02/10/2032 20:54
गुरु	10/10/2032 23:12
शनि	20/10/2032 13:57
बुध	29/10/2032 04:25
केतु	01/11/2032 17:25
शुक्र	11/11/2032 20:19
सूर्य	14/11/2032 21:11
चंद्र	19/11/2032 22:38
मंगल	23/11/2032 11:38

शनि - केतु - गुरु	
23/11/2032 11:38	
16/01/2033 11:03	
गुरु	30/11/2032 16:22
शनि	09/12/2032 05:28
बुध	16/12/2032 20:59
केतु	20/12/2032 00:33
शुक्र	29/12/2032 00:27
सूर्य	31/12/2032 17:14
चंद्र	05/01/2033 05:11
मंगल	08/01/2033 08:45
राहु	16/01/2033 11:03

शनि - केतु - शनि	
16/01/2033 11:03	
21/03/2033 13:22	
शनि	26/01/2033 14:37
बुध	04/02/2033 16:33
केतु	08/02/2033 10:17
शुक्र	19/02/2033 02:40
सूर्य	22/02/2033 07:35
चंद्र	27/02/2033 15:47
मंगल	03/03/2033 09:31
राहु	13/03/2033 00:16
गुरु	21/03/2033 13:22

शनि - केतु - बुध	
21/03/2033 13:22	
17/05/2033 21:45	
बुध	29/03/2033 16:21
केतु	02/04/2033 00:39
शुक्र	11/04/2033 14:03
सूर्य	14/04/2033 10:52
चंद्र	19/04/2033 05:34
मंगल	22/04/2033 13:51
राहु	01/05/2033 04:18
गुरु	08/05/2033 19:50
शनि	17/05/2033 21:45

शनि - शुक्र - शुक्र	
17/05/2033 21:45	
26/11/2033 16:15	
शुक्र	19/06/2033 00:50
सूर्य	28/06/2033 16:10
चंद्र	14/07/2033 17:42
मंगल	25/07/2033 23:35
राहु	23/08/2033 21:33
गुरु	18/09/2033 14:25
शनि	19/10/2033 02:57
बुध	15/11/2033 10:22
केतु	26/11/2033 16:15

शनि - शुक्र - सूर्य	
26/11/2033 16:15	
23/01/2034 12:12	
सूर्य	29/11/2033 13:39
चंद्र	04/12/2033 09:19
मंगल	07/12/2033 18:17
राहु	16/12/2033 10:28
गुरु	24/12/2033 03:32
शनि	02/01/2034 07:17
बुध	10/01/2034 11:55
केतु	13/01/2034 20:53
शुक्र	23/01/2034 12:12

शनि - शुक्र - चंद्र	
23/01/2034 12:12	
29/04/2034 21:27	
चंद्र	31/01/2034 12:58
मंगल	06/02/2034 03:55
राहु	20/02/2034 14:54
गुरु	05/03/2034 11:20
शनि	20/03/2034 17:36
बुध	03/04/2034 09:19
केतु	09/04/2034 00:15
शुक्र	25/04/2034 01:47
सूर्य	29/04/2034 21:27

शनि - शुक्र - मंगल	
29/04/2034 21:27	
06/07/2034 08:44	
मंगल	03/05/2034 19:55
राहु	13/05/2034 22:48
गुरु	22/05/2034 22:42
शनि	02/06/2034 15:05
बुध	12/06/2034 04:29
केतु	16/06/2034 02:57
शुक्र	27/06/2034 08:49
सूर्य	30/06/2034 17:47
चंद्र	06/07/2034 08:44

शनि - शुक्र - राहु	
06/07/2034 08:44	
26/12/2034 20:35	
राहु	01/08/2034 09:18
गुरु	24/08/2034 12:29
शनि	20/09/2034 23:46
बुध	15/10/2034 13:38
केतु	25/10/2034 16:32
शुक्र	23/11/2034 14:30
सूर्य	02/12/2034 06:42
चंद्र	16/12/2034 17:41
मंगल	26/12/2034 20:35

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - गुरु		शनि - शुक्र - शनि		शनि - शुक्र - बुध		शनि - शुक्र - केतु	
26/12/2034 20:35		30/05/2035 01:47		29/11/2035 04:57		11/05/2036 01:29	
30/05/2035 01:47		29/11/2035 04:57		11/05/2036 01:29		17/07/2036 12:45	
गुरु	16/01/2035 10:04	शनि	28/06/2035 01:41	बुध	22/12/2035 10:04	केतु	14/05/2036 23:56
शनि	09/02/2035 20:06	बुध	24/07/2035 00:20	केतु	31/12/2035 23:27	शुक्र	26/05/2036 05:49
बुध	03/03/2035 16:26	केतु	03/08/2035 16:43	शुक्र	28/01/2036 06:53	सूर्य	29/05/2036 14:47
केतु	12/03/2035 16:20	शुक्र	03/09/2035 05:15	सूर्य	05/02/2036 11:30	चंद्र	04/06/2036 05:43
शुक्र	07/04/2035 09:12	सूर्य	12/09/2035 09:00	चंद्र	19/02/2036 03:13	मंगल	08/06/2036 04:11
सूर्य	15/04/2035 02:16	चंद्र	27/09/2035 15:16	मंगल	28/02/2036 16:37	राहु	18/06/2036 07:04
चंद्र	27/04/2035 22:42	मंगल	08/10/2035 07:39	राहु	24/03/2036 06:30	गुरु	27/06/2036 06:58
मंगल	06/05/2035 22:36	राहु	04/11/2035 18:56	गुरु	15/04/2036 02:50	शनि	07/07/2036 23:21
राहु	30/05/2035 01:47	गुरु	29/11/2035 04:57	शनि	11/05/2036 01:29	बुध	17/07/2036 12:45

शनि - सूर्य - सूर्य		शनि - सूर्य - चंद्र		शनि - सूर्य - मंगल		शनि - सूर्य - राहु	
17/07/2036 12:45		03/08/2036 21:08		01/09/2036 19:07		22/09/2036 00:54	
03/08/2036 21:08		01/09/2036 19:07		22/09/2036 00:54		13/11/2036 02:03	
सूर्य	18/07/2036 09:34	चंद्र	06/08/2036 06:58	मंगल	02/09/2036 23:27	राहु	29/09/2036 20:16
चंद्र	19/07/2036 20:16	मंगल	07/08/2036 23:27	राहु	06/09/2036 00:19	गुरु	06/10/2036 18:49
मंगल	20/07/2036 20:34	राहु	12/08/2036 07:33	गुरु	08/09/2036 17:05	शनि	15/10/2036 00:36
राहु	23/07/2036 11:01	गुरु	16/08/2036 04:05	शनि	11/09/2036 22:00	बुध	22/10/2036 09:34
गुरु	25/07/2036 18:32	शनि	20/08/2036 17:57	बुध	14/09/2036 18:49	केतु	25/10/2036 10:26
शनि	28/07/2036 12:28	बुध	24/08/2036 20:16	केतु	15/09/2036 23:10	शुक्र	03/11/2036 02:38
बुध	30/07/2036 23:27	केतु	26/08/2036 12:45	शुक्र	19/09/2036 08:07	सूर्य	05/11/2036 17:05
केतु	31/07/2036 23:44	शुक्र	31/08/2036 08:25	सूर्य	20/09/2036 08:25	चंद्र	10/11/2036 01:11
शुक्र	03/08/2036 21:08	सूर्य	01/09/2036 19:07	चंद्र	22/09/2036 00:54	मंगल	13/11/2036 02:03

शनि - सूर्य - गुरु		शनि - सूर्य - शनि		शनि - सूर्य - बुध		शनि - सूर्य - केतु	
13/11/2036 02:03		29/12/2036 08:25		22/02/2037 06:58		12/04/2037 10:43	
29/12/2036 08:25		22/02/2037 06:58		12/04/2037 10:43		02/05/2037 16:30	
गुरु	19/11/2036 06:06	शनि	07/01/2037 01:11	बुध	01/03/2037 06:06	केतु	13/04/2037 15:03
शनि	26/11/2036 13:54	बुध	14/01/2037 19:59	केतु	04/03/2037 02:55	शुक्र	17/04/2037 00:01
बुध	03/12/2036 03:12	केतु	18/01/2037 00:54	शुक्र	12/03/2037 07:32	सूर्य	18/04/2037 00:19
केतु	05/12/2036 19:59	शुक्र	27/01/2037 04:39	सूर्य	14/03/2037 18:32	चंद्र	19/04/2037 16:48
शुक्र	13/12/2036 13:02	सूर्य	29/01/2037 22:35	चंद्र	18/03/2037 20:51	मंगल	20/04/2037 21:08
सूर्य	15/12/2036 20:33	चंद्र	03/02/2037 12:27	मंगल	21/03/2037 17:40	राहु	23/04/2037 22:00
चंद्र	19/12/2036 17:05	मंगल	06/02/2037 17:22	राहु	29/03/2037 02:37	गुरु	26/04/2037 14:46
मंगल	22/12/2036 09:51	राहु	14/02/2037 23:09	गुरु	04/04/2037 15:56	शनि	29/04/2037 19:41
राहु	29/12/2036 08:25	गुरु	22/02/2037 06:58	शनि	12/04/2037 10:43	बुध	02/05/2037 16:30

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - राहु - शुक्र - गुरु	
29/11/2025 07:34	
18/12/2025 19:05	
गुरु	01/12/2025 21:54
शनि	04/12/2025 23:55
बुध	07/12/2025 18:09
केतु	08/12/2025 21:26
शुक्र	12/12/2025 03:21
सूर्य	13/12/2025 02:43
चंद्र	14/12/2025 17:41
मंगल	15/12/2025 20:57
राहु	18/12/2025 19:05

गुरु - राहु - शुक्र - शनि	
18/12/2025 19:05	
10/01/2026 22:16	
शनि	22/12/2025 10:59
बुध	25/12/2025 17:38
केतु	27/12/2025 02:01
शुक्र	30/12/2025 22:33
सूर्य	01/01/2026 02:19
चंद्र	03/01/2026 00:35
मंगल	04/01/2026 08:58
राहु	07/01/2026 20:14
गुरु	10/01/2026 22:16

गुरु - राहु - शुक्र - बुध	
10/01/2026 22:16	
31/01/2026 15:00	
बुध	13/01/2026 20:38
केतु	15/01/2026 01:37
शुक्र	18/01/2026 12:24
सूर्य	19/01/2026 13:14
चंद्र	21/01/2026 06:38
मंगल	22/01/2026 11:37
राहु	25/01/2026 14:07
गुरु	28/01/2026 08:21
शनि	31/01/2026 15:00

गुरु - राहु - शुक्र - केतु	
31/01/2026 15:00	
09/02/2026 03:33	
केतु	01/02/2026 02:56
शुक्र	02/02/2026 13:01
सूर्य	02/02/2026 23:15
चंद्र	03/02/2026 16:18
मंगल	04/02/2026 04:14
राहु	05/02/2026 10:55
गुरु	06/02/2026 14:11
शनि	07/02/2026 22:34
बुध	09/02/2026 03:33

गुरु - राहु - सूर्य - सूर्य	
09/02/2026 03:33	
11/02/2026 08:08	
सूर्य	09/02/2026 06:10
चंद्र	09/02/2026 10:33
मंगल	09/02/2026 13:37
राहु	09/02/2026 21:31
गुरु	10/02/2026 04:32
शनि	10/02/2026 12:51
बुध	10/02/2026 20:18
केतु	10/02/2026 23:22
शुक्र	11/02/2026 08:08

गुरु - राहु - सूर्य - चंद्र	
11/02/2026 08:08	
14/02/2026 23:48	
चंद्र	11/02/2026 15:27
मंगल	11/02/2026 20:33
राहु	12/02/2026 09:42
गुरु	12/02/2026 21:24
शनि	13/02/2026 11:16
बुध	13/02/2026 23:42
केतु	14/02/2026 04:48
शुक्र	14/02/2026 19:25
सूर्य	14/02/2026 23:48

गुरु - राहु - सूर्य - मंगल	
14/02/2026 23:48	
17/02/2026 13:10	
मंगल	15/02/2026 03:23
राहु	15/02/2026 12:35
गुरु	15/02/2026 20:46
शनि	16/02/2026 06:29
बुध	16/02/2026 15:10
केतु	16/02/2026 18:45
शुक्र	17/02/2026 04:59
सूर्य	17/02/2026 08:03
चंद्र	17/02/2026 13:10

गुरु - राहु - सूर्य - राहु	
17/02/2026 13:10	
24/02/2026 02:57	
राहु	18/02/2026 12:50
गुरु	19/02/2026 09:52
शनि	20/02/2026 10:51
बुध	21/02/2026 09:12
केतु	21/02/2026 18:25
शुक्र	22/02/2026 20:42
सूर्य	23/02/2026 04:36
चंद्र	23/02/2026 17:45
मंगल	24/02/2026 02:57

गुरु - राहु - सूर्य - गुरु	
24/02/2026 02:57	
01/03/2026 23:12	
गुरु	24/02/2026 21:39
शनि	25/02/2026 19:51
बुध	26/02/2026 15:44
केतु	26/02/2026 23:55
शुक्र	27/02/2026 23:17
सूर्य	28/02/2026 06:18
चंद्र	28/02/2026 17:59
मंगल	01/03/2026 02:10
राहु	01/03/2026 23:12

गुरु - राहु - सूर्य - शनि	
01/03/2026 23:12	
08/03/2026 21:46	
शनि	03/03/2026 01:35
बुध	04/03/2026 01:10
केतु	04/03/2026 10:53
शुक्र	05/03/2026 14:39
सूर्य	05/03/2026 22:58
चंद्र	06/03/2026 12:51
मंगल	06/03/2026 22:34
राहु	07/03/2026 23:33
गुरु	08/03/2026 21:46

गुरु - राहु - सूर्य - बुध	
08/03/2026 21:46	
15/03/2026 02:47	
बुध	09/03/2026 18:52
केतु	10/03/2026 03:34
शुक्र	11/03/2026 04:24
सूर्य	11/03/2026 11:51
चंद्र	12/03/2026 00:16
मंगल	12/03/2026 08:58
राहु	13/03/2026 07:19
गुरु	14/03/2026 03:11
शनि	15/03/2026 02:47

गुरु - राहु - सूर्य - केतु	
15/03/2026 02:47	
17/03/2026 16:09	
केतु	15/03/2026 06:22
शुक्र	15/03/2026 16:35
सूर्य	15/03/2026 19:39
चंद्र	16/03/2026 00:46
मंगल	16/03/2026 04:21
राहु	16/03/2026 13:33
गुरु	16/03/2026 21:44
शनि	17/03/2026 07:27
बुध	17/03/2026 16:09

विंशोत्तरी दशा - प्राण

गुरु - राहु - सूर्य - शुक्र	
17/03/2026 16:09	
24/03/2026 23:28	
शुक्र	18/03/2026 21:22
सूर्य	19/03/2026 06:08
चंद्र	19/03/2026 20:44
मंगल	20/03/2026 06:58
राहु	21/03/2026 09:16
गुरु	22/03/2026 08:38
शनि	23/03/2026 12:24
बुध	24/03/2026 13:14
केतु	24/03/2026 23:28

गुरु - राहु - चंद्र - चंद्र	
24/03/2026 23:28	
31/03/2026 01:34	
चंद्र	25/03/2026 11:38
मंगल	25/03/2026 20:10
राहु	26/03/2026 18:05
गुरु	27/03/2026 13:33
शनि	28/03/2026 12:41
बुध	29/03/2026 09:23
केतु	29/03/2026 17:54
शुक्र	30/03/2026 18:15
सूर्य	31/03/2026 01:34

गुरु - राहु - चंद्र - मंगल	
31/03/2026 01:34	
04/04/2026 07:50	
मंगल	31/03/2026 07:32
राहु	31/03/2026 22:52
गुरु	01/04/2026 12:30
शनि	02/04/2026 04:42
बुध	02/04/2026 19:11
केतु	03/04/2026 01:09
शुक्र	03/04/2026 18:12
सूर्य	03/04/2026 23:19
चंद्र	04/04/2026 07:50

गुरु - राहु - चंद्र - राहु	
04/04/2026 07:50	
15/04/2026 06:49	
राहु	05/04/2026 23:17
गुरु	07/04/2026 10:21
शनि	09/04/2026 03:59
बुध	10/04/2026 17:14
केतु	11/04/2026 08:35
शुक्र	13/04/2026 04:25
सूर्य	13/04/2026 17:33
चंद्र	14/04/2026 15:28
मंगल	15/04/2026 06:49

गुरु - राहु - चंद्र - गुरु	
15/04/2026 06:49	
25/04/2026 00:34	
गुरु	16/04/2026 13:59
शनि	18/04/2026 03:00
बुध	19/04/2026 12:07
केतु	20/04/2026 01:45
शुक्र	21/04/2026 16:42
सूर्य	22/04/2026 04:24
चंद्र	22/04/2026 23:52
मंगल	23/04/2026 13:31
राहु	25/04/2026 00:34

गुरु - राहु - चंद्र - शनि	
25/04/2026 00:34	
06/05/2026 14:10	
शनि	26/04/2026 20:31
बुध	28/04/2026 11:51
केतु	29/04/2026 04:03
शुक्र	01/05/2026 02:18
सूर्य	01/05/2026 16:11
चंद्र	02/05/2026 15:19
मंगल	03/05/2026 07:31
राहु	05/05/2026 01:09
गुरु	06/05/2026 14:10

गुरु - राहु - चंद्र - बुध	
06/05/2026 14:10	
16/05/2026 22:32	
बुध	08/05/2026 01:21
केतु	08/05/2026 15:50
शुक्र	10/05/2026 09:14
सूर्य	10/05/2026 21:39
चंद्र	11/05/2026 18:21
मंगल	12/05/2026 08:50
राहु	13/05/2026 22:06
गुरु	15/05/2026 07:12
शनि	16/05/2026 22:32

गुरु - राहु - चंद्र - केतु	
16/05/2026 22:32	
21/05/2026 04:48	
केतु	17/05/2026 04:30
शुक्र	17/05/2026 21:33
सूर्य	18/05/2026 02:39
चंद्र	18/05/2026 11:11
मंगल	18/05/2026 17:09
राहु	19/05/2026 08:29
गुरु	19/05/2026 22:07
शनि	20/05/2026 14:19
बुध	21/05/2026 04:48

गुरु - राहु - चंद्र - शुक्र	
21/05/2026 04:48	
02/06/2026 09:00	
शुक्र	23/05/2026 05:30
सूर्य	23/05/2026 20:07
चंद्र	24/05/2026 20:28
मंगल	25/05/2026 13:30
राहु	27/05/2026 09:20
गुरु	29/05/2026 00:18
शनि	30/05/2026 22:34
बुध	01/06/2026 15:57
केतु	02/06/2026 09:00

गुरु - राहु - चंद्र - सूर्य	
02/06/2026 09:00	
06/06/2026 00:40	
सूर्य	02/06/2026 13:23
चंद्र	02/06/2026 20:41
मंगल	03/06/2026 01:48
राहु	03/06/2026 14:57
गुरु	04/06/2026 02:38
शनि	04/06/2026 16:31
बुध	05/06/2026 04:56
केतु	05/06/2026 10:03
शुक्र	06/06/2026 00:40

गुरु - राहु - मंगल - मंगल	
06/06/2026 00:40	
09/06/2026 00:15	
मंगल	06/06/2026 04:50
राहु	06/06/2026 15:35
गुरु	07/06/2026 01:07
शनि	07/06/2026 12:27
बुध	07/06/2026 22:36
केतु	08/06/2026 02:47
शुक्र	08/06/2026 14:42
सूर्य	08/06/2026 18:17
चंद्र	09/06/2026 00:15

गुरु - राहु - मंगल - राहु	
09/06/2026 00:15	
16/06/2026 16:20	
राहु	10/06/2026 03:52
गुरु	11/06/2026 04:25
शनि	12/06/2026 09:33
बुध	13/06/2026 11:38
केतु	13/06/2026 22:22
शुक्र	15/06/2026 05:03
सूर्य	15/06/2026 14:16
चंद्र	16/06/2026 05:36
मंगल	16/06/2026 16:20

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 6 मास 21 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
12/03/1981		03/10/1987		03/10/2003		02/10/2020		03/10/2038	
03/10/1987		03/10/2003		02/10/2020		03/10/2038		03/10/2049	
	00/00/0000	चंद्र	17/12/1989	बुध	31/03/2006	शुक्र	20/07/2023	सूर्य	19/10/2039
	00/00/0000	बुध	22/04/1992	शुक्र	19/11/2008	सूर्य	03/04/2025	मंगल	07/12/2040
	12/03/1981	शुक्र	15/10/1994	सूर्य	30/06/2010	मंगल	12/02/2027	गुरु	03/03/2042
शुक्र	16/04/1981	सूर्य	22/04/1996	मंगल	03/04/2012	गुरु	18/02/2029	शनि	01/07/2043
सूर्य	17/09/1982	मंगल	17/12/1997	गुरु	28/02/2014	शनि	22/04/2031	केतु	01/12/2044
मंगल	06/04/1984	गुरु	03/10/1999	शनि	18/03/2016	केतु	20/08/2033	चंद्र	08/06/2046
गुरु	11/12/1985	शनि	07/09/2001	केतु	30/05/2018	चंद्र	12/02/2036	बुध	18/01/2048
शनि	03/10/1987	केतु	03/10/2003	चंद्र	02/10/2020	बुध	03/10/2038	शुक्र	03/10/2049

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
03/10/2049		03/10/2061		03/10/2074		02/10/2088	
03/10/2061		03/10/2074		02/10/2088		00/00/0000	
मंगल	30/12/2050	गुरु	19/03/2063	शनि	11/06/2076	केतु	11/09/2090
गुरु	04/05/2052	शनि	12/10/2064	केतु	03/04/2078	चंद्र	06/10/2092
शनि	15/10/2053	केतु	18/06/2066	चंद्र	09/03/2080	बुध	17/12/2094
केतु	05/05/2055	चंद्र	03/04/2068	बुध	28/03/2082	शुक्र	12/03/2097
चंद्र	30/12/2056	बुध	28/02/2070	शुक्र	29/05/2084		00/00/0000
बुध	03/10/2058	शुक्र	05/03/2072	सूर्य	26/09/2085		00/00/0000
शुक्र	13/08/2060	सूर्य	30/05/2073	मंगल	09/03/2087		00/00/0000
सूर्य	03/10/2061	मंगल	03/10/2074	गुरु	02/10/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि	
12/03/1981		16/04/1981		17/09/1982		06/04/1984		11/12/1985	
16/04/1981		17/09/1982		06/04/1984		11/12/1985		03/10/1987	
	00/00/0000	सूर्य	04/06/1981	मंगल	15/11/1982	गुरु	14/06/1984	शनि	01/03/1986
	00/00/0000	मंगल	28/07/1981	गुरु	17/01/1983	शनि	27/08/1984	केतु	25/05/1986
	00/00/0000	गुरु	24/09/1981	शनि	27/03/1983	केतु	14/11/1984	चंद्र	24/08/1986
	00/00/0000	शनि	26/11/1981	केतु	08/06/1983	चंद्र	07/02/1985	बुध	29/11/1986
	00/00/0000	केतु	01/02/1982	चंद्र	25/08/1983	बुध	08/05/1985	शुक्र	12/03/1987
	00/00/0000	चंद्र	13/04/1982	बुध	16/11/1983	शुक्र	11/08/1985	सूर्य	14/05/1987
	12/03/1981	बुध	29/06/1982	शुक्र	12/02/1984	सूर्य	08/10/1985	मंगल	21/07/1987
बुध	16/04/1981	शुक्र	17/09/1982	सूर्य	06/04/1984	मंगल	11/12/1985	गुरु	03/10/1987

चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल	
03/10/1987		17/12/1989		22/04/1992		15/10/1994		22/04/1996	
17/12/1989		22/04/1992		15/10/1994		22/04/1996		17/12/1997	
चंद्र	22/01/1988	बुध	22/04/1990	शुक्र	09/09/1992	सूर्य	07/12/1994	मंगल	23/06/1996
बुध	19/05/1988	शुक्र	02/09/1990	सूर्य	04/12/1992	मंगल	02/02/1995	गुरु	30/08/1996
शुक्र	22/09/1988	सूर्य	22/11/1990	मंगल	08/03/1993	गुरु	05/04/1995	शनि	11/11/1996
सूर्य	07/12/1988	मंगल	18/02/1991	गुरु	18/06/1993	शनि	11/06/1995	केतु	28/01/1997
मंगल	28/02/1989	गुरु	25/05/1991	शनि	05/10/1993	केतु	22/08/1995	चंद्र	21/04/1997
गुरु	30/05/1989	शनि	06/09/1991	केतु	30/01/1994	चंद्र	06/11/1995	बुध	19/07/1997
शनि	04/09/1989	केतु	26/12/1991	चंद्र	05/06/1994	बुध	27/01/1996	शुक्र	21/10/1997
केतु	17/12/1989	चंद्र	22/04/1992	बुध	15/10/1994	शुक्र	22/04/1996	सूर्य	17/12/1997

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र	
17/12/1997		03/10/1999		07/09/2001		03/10/2003		31/03/2006	
03/10/1999		07/09/2001		03/10/2003		31/03/2006		19/11/2008	
गुरु	01/03/1998	शनि	27/12/1999	केतु	14/12/2001	बुध	13/02/2004	शुक्र	28/08/2006
शनि	19/05/1998	केतु	27/03/2000	चंद्र	28/03/2002	शुक्र	04/07/2004	सूर्य	27/11/2006
केतु	11/08/1998	चंद्र	03/07/2000	बुध	17/07/2002	सूर्य	28/09/2004	मंगल	07/03/2007
चंद्र	10/11/1998	बुध	14/10/2000	शुक्र	11/11/2002	मंगल	31/12/2004	गुरु	23/06/2007
बुध	14/02/1999	शुक्र	01/02/2001	सूर्य	22/01/2003	गुरु	12/04/2005	शनि	17/10/2007
शुक्र	26/05/1999	सूर्य	08/04/2001	मंगल	10/04/2003	शनि	31/07/2005	केतु	19/02/2008
सूर्य	27/07/1999	मंगल	20/06/2001	गुरु	04/07/2003	केतु	26/11/2005	चंद्र	30/06/2008
मंगल	03/10/1999	गुरु	07/09/2001	शनि	03/10/2003	चंद्र	31/03/2006	बुध	19/11/2008

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु	
19/11/2008		30/06/2010		03/04/2012		28/02/2014		18/03/2016	
30/06/2010		03/04/2012		28/02/2014		18/03/2016		30/05/2018	
सूर्य	13/01/2009	मंगल	05/09/2010	गुरु	20/06/2012	शनि	29/05/2014	केतु	30/06/2016
मंगल	15/03/2009	गुरु	16/11/2010	शनि	12/09/2012	केतु	03/09/2014	चंद्र	19/10/2016
गुरु	20/05/2009	शनि	01/02/2011	केतु	11/12/2012	चंद्र	15/12/2014	बुध	13/02/2017
शनि	30/07/2009	केतु	25/04/2011	चंद्र	17/03/2013	बुध	04/04/2015	शुक्र	18/06/2017
केतु	15/10/2009	चंद्र	23/07/2011	बुध	27/06/2013	शुक्र	29/07/2015	सूर्य	02/09/2017
चंद्र	04/01/2010	बुध	25/10/2011	शुक्र	13/10/2013	सूर्य	08/10/2015	मंगल	24/11/2017
बुध	31/03/2010	शुक्र	02/02/2012	सूर्य	18/12/2013	मंगल	25/12/2015	गुरु	22/02/2018
शुक्र	30/06/2010	सूर्य	03/04/2012	मंगल	28/02/2014	गुरु	18/03/2016	शनि	30/05/2018

बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु	
30/05/2018		02/10/2020		20/07/2023		03/04/2025		12/02/2027	
02/10/2020		20/07/2023		03/04/2025		12/02/2027		18/02/2029	
चंद्र	25/09/2018	शुक्र	10/03/2021	सूर्य	17/09/2023	मंगल	12/06/2025	गुरु	06/05/2027
बुध	29/01/2019	सूर्य	14/06/2021	मंगल	20/11/2023	गुरु	28/08/2025	शनि	03/08/2027
शुक्र	10/06/2019	मंगल	28/09/2021	गुरु	29/01/2024	शनि	18/11/2025	केतु	06/11/2027
सूर्य	31/08/2019	गुरु	20/01/2022	शनि	13/04/2024	केतु	14/02/2026	चंद्र	16/02/2028
मंगल	27/11/2019	शनि	23/05/2022	केतु	03/07/2024	चंद्र	18/05/2026	बुध	02/06/2028
गुरु	02/03/2020	केतु	02/10/2022	चंद्र	27/09/2024	बुध	26/08/2026	शुक्र	25/09/2028
शनि	14/06/2020	चंद्र	20/02/2023	बुध	27/12/2024	शुक्र	10/12/2026	सूर्य	04/12/2028
केतु	02/10/2020	बुध	20/07/2023	शुक्र	03/04/2025	सूर्य	12/02/2027	मंगल	18/02/2029

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
18/02/2029		22/04/2031		20/08/2033		12/02/2036		03/10/2038	
22/04/2031		20/08/2033		12/02/2036		03/10/2038		19/10/2039	
शनि	25/05/2029	केतु	10/08/2031	चंद्र	23/12/2033	बुध	03/07/2036	सूर्य	08/11/2038
केतु	04/09/2029	चंद्र	06/12/2031	बुध	05/05/2034	शुक्र	29/11/2036	मंगल	17/12/2038
चंद्र	23/12/2029	बुध	08/04/2032	शुक्र	22/09/2034	सूर्य	28/02/2037	गुरु	29/01/2039
बुध	18/04/2030	शुक्र	18/08/2032	सूर्य	17/12/2034	मंगल	08/06/2037	शनि	16/03/2039
शुक्र	19/08/2030	सूर्य	07/11/2032	मंगल	21/03/2035	गुरु	24/09/2037	केतु	04/05/2039
सूर्य	02/11/2030	मंगल	03/02/2033	गुरु	01/07/2035	शनि	18/01/2038	चंद्र	26/06/2039
मंगल	23/01/2031	गुरु	09/05/2033	शनि	18/10/2035	केतु	23/05/2038	बुध	21/08/2039
गुरु	22/04/2031	शनि	20/08/2033	केतु	12/02/2036	चंद्र	03/10/2038	शुक्र	19/10/2039

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
19/10/2039		07/12/2040		03/03/2042		01/07/2043		01/12/2044	
07/12/2040		03/03/2042		01/07/2043		01/12/2044		08/06/2046	
मंगल	01/12/2039	गुरु	27/01/2041	शनि	30/04/2042	केतु	06/09/2043	चंद्र	16/02/2045
गुरु	16/01/2040	शनि	22/03/2041	केतु	02/07/2042	चंद्र	17/11/2043	बुध	08/05/2045
शनि	07/03/2040	केतु	20/05/2041	चंद्र	07/09/2042	बुध	01/02/2044	शुक्र	02/08/2045
केतु	29/04/2040	चंद्र	21/07/2041	बुध	17/11/2042	शुक्र	21/04/2044	सूर्य	23/09/2045
चंद्र	26/06/2040	बुध	25/09/2041	शुक्र	31/01/2043	सूर्य	10/06/2044	मंगल	20/11/2045
बुध	26/08/2040	शुक्र	03/12/2041	सूर्य	18/03/2043	मंगल	02/08/2044	गुरु	21/01/2046
शुक्र	29/10/2040	सूर्य	15/01/2042	मंगल	07/05/2043	गुरु	29/09/2044	शनि	29/03/2046
सूर्य	07/12/2040	मंगल	03/03/2042	गुरु	01/07/2043	शनि	01/12/2044	केतु	08/06/2046

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
08/06/2046		18/01/2048		03/10/2049		30/12/2050		04/05/2052	
18/01/2048		03/10/2049		30/12/2050		04/05/2052		15/10/2053	
बुध	03/09/2046	शुक्र	24/04/2048	मंगल	19/11/2049	गुरु	23/02/2051	शनि	07/07/2052
शुक्र	03/12/2046	सूर्य	22/06/2048	गुरु	08/01/2050	शनि	23/04/2051	केतु	13/09/2052
सूर्य	28/01/2047	मंगल	26/08/2048	शनि	04/03/2050	केतु	26/06/2051	चंद्र	25/11/2052
मंगल	30/03/2047	गुरु	03/11/2048	केतु	02/05/2050	चंद्र	02/09/2051	बुध	11/02/2053
गुरु	04/06/2047	शनि	18/01/2049	चंद्र	03/07/2050	बुध	13/11/2051	शुक्र	04/05/2053
शनि	14/08/2047	केतु	08/04/2049	बुध	08/09/2050	शुक्र	28/01/2052	सूर्य	23/06/2053
केतु	29/10/2047	चंद्र	03/07/2049	शुक्र	17/11/2050	सूर्य	14/03/2052	मंगल	17/08/2053
चंद्र	18/01/2048	बुध	03/10/2049	सूर्य	30/12/2050	मंगल	04/05/2052	गुरु	15/10/2053

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
15/10/2053		05/05/2055		30/12/2056		03/10/2058		13/08/2060	
05/05/2055		30/12/2056		03/10/2058		13/08/2060		03/10/2061	
केतु	28/12/2053	चंद्र	27/07/2055	बुध	03/04/2057	शुक्र	16/01/2059	सूर्य	21/09/2060
चंद्र	16/03/2054	बुध	24/10/2055	शुक्र	11/07/2057	सूर्य	22/03/2059	मंगल	03/11/2060
बुध	07/06/2054	शुक्र	26/01/2056	सूर्य	10/09/2057	मंगल	31/05/2059	गुरु	20/12/2060
शुक्र	03/09/2054	सूर्य	23/03/2056	मंगल	16/11/2057	गुरु	15/08/2059	शनि	08/02/2061
सूर्य	26/10/2054	मंगल	25/05/2056	गुरु	27/01/2058	शनि	06/11/2059	केतु	03/04/2061
मंगल	24/12/2054	गुरु	31/07/2056	शनि	14/04/2058	केतु	02/02/2060	चंद्र	30/05/2061
गुरु	26/02/2055	शनि	12/10/2056	केतु	06/07/2058	चंद्र	05/05/2060	बुध	30/07/2061
शनि	05/05/2055	केतु	30/12/2056	चंद्र	03/10/2058	बुध	13/08/2060	शुक्र	03/10/2061

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
03/10/2061		19/03/2063		12/10/2064		18/06/2066		03/04/2068	
19/03/2063		12/10/2064		18/06/2066		03/04/2068		28/02/2070	
गुरु	01/12/2061	शनि	27/05/2063	केतु	30/12/2064	चंद्र	16/09/2066	बुध	14/07/2068
शनि	03/02/2062	केतु	09/08/2063	चंद्र	25/03/2065	बुध	21/12/2066	शुक्र	30/10/2068
केतु	13/04/2062	चंद्र	27/10/2063	बुध	23/06/2065	शुक्र	02/04/2067	सूर्य	04/01/2069
चंद्र	26/06/2062	बुध	19/01/2064	शुक्र	26/09/2065	सूर्य	03/06/2067	मंगल	17/03/2069
बुध	12/09/2062	शुक्र	17/04/2064	सूर्य	23/11/2065	मंगल	10/08/2067	गुरु	03/06/2069
शुक्र	03/12/2062	सूर्य	10/06/2064	मंगल	26/01/2066	गुरु	22/10/2067	शनि	26/08/2069
सूर्य	23/01/2063	मंगल	09/08/2064	गुरु	05/04/2066	शनि	09/01/2068	केतु	24/11/2069
मंगल	19/03/2063	गुरु	12/10/2064	शनि	18/06/2066	केतु	03/04/2068	चंद्र	28/02/2070

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
28/02/2070		05/03/2072		30/05/2073		03/10/2074		11/06/2076	
05/03/2072		30/05/2073		03/10/2074		11/06/2076		03/04/2078	
शुक्र	22/06/2070	सूर्य	17/04/2072	मंगल	19/07/2073	शनि	16/12/2074	केतु	05/09/2076
सूर्य	31/08/2070	मंगल	03/06/2072	गुरु	13/09/2073	केतु	06/03/2075	चंद्र	05/12/2076
मंगल	15/11/2070	गुरु	23/07/2072	शनि	11/11/2073	चंद्र	30/05/2075	बुध	12/03/2077
गुरु	06/02/2071	शनि	15/09/2072	केतु	13/01/2074	बुध	29/08/2075	शुक्र	22/06/2077
शनि	06/05/2071	केतु	13/11/2072	चंद्र	22/03/2074	शुक्र	02/12/2075	सूर्य	24/08/2077
केतु	09/08/2071	चंद्र	14/01/2073	बुध	02/06/2074	सूर्य	30/01/2076	मंगल	31/10/2077
चंद्र	18/11/2071	बुध	21/03/2073	शुक्र	17/08/2074	मंगल	03/04/2076	गुरु	13/01/2078
बुध	05/03/2072	शुक्र	30/05/2073	सूर्य	03/10/2074	गुरु	11/06/2076	शनि	03/04/2078

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
03/04/2078		09/03/2080		28/03/2082		29/05/2084		26/09/2085	
09/03/2080		28/03/2082		29/05/2084		26/09/2085		09/03/2087	
चंद्र	10/07/2078	बुध	26/06/2080	शुक्र	29/07/2082	सूर्य	14/07/2084	मंगल	20/11/2085
बुध	21/10/2078	शुक्र	21/10/2080	सूर्य	12/10/2082	मंगल	03/09/2084	गुरु	18/01/2086
शुक्र	07/02/2079	सूर्य	31/12/2080	मंगल	02/01/2083	गुरु	27/10/2084	शनि	23/03/2086
सूर्य	15/04/2079	मंगल	18/03/2081	गुरु	01/04/2083	शनि	24/12/2084	केतु	31/05/2086
मंगल	27/06/2079	गुरु	10/06/2081	शनि	06/07/2083	केतु	25/02/2085	चंद्र	12/08/2086
गुरु	14/09/2079	शनि	09/09/2081	केतु	17/10/2083	चंद्र	03/05/2085	बुध	28/10/2086
शनि	08/12/2079	केतु	15/12/2081	चंद्र	03/02/2084	बुध	13/07/2085	शुक्र	18/01/2087
केतु	09/03/2080	चंद्र	28/03/2082	बुध	29/05/2084	शुक्र	26/09/2085	सूर्य	09/03/2087

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 2 वर्ष 10 मास 30 दिन

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
12/03/1981		10/02/1984		10/10/1988		10/10/2000		11/06/2011	
10/02/1984		10/10/1988		10/10/2000		11/06/2011		10/02/2024	
	00/00/0000	मंगल	19/05/1984	राहु	30/07/1990	गुरु	14/03/2002	शनि	13/06/2013
	00/00/0000	राहु	30/01/1985	गुरु	05/03/1992	शनि	21/11/2003	बुध	30/03/2015
	00/00/0000	गुरु	14/09/1985	शनि	28/01/1994	बुध	26/05/2005	केतु	25/12/2015
	12/03/1981	शनि	11/06/1986	बुध	11/10/1995	केतु	08/01/2006	शुक्र	03/02/2018
शनि	01/05/1981	बुध	08/02/1987	केतु	23/06/1996	शुक्र	19/10/2007	सूर्य	23/09/2018
बुध	11/04/1982	केतु	18/05/1987	शुक्र	23/06/1998	सूर्य	01/05/2008	चंद्र	13/10/2019
केतु	31/08/1982	शुक्र	26/02/1988	सूर्य	29/01/1999	चंद्र	22/03/2009	मंगल	09/07/2020
शुक्र	11/10/1983	सूर्य	21/05/1988	चंद्र	29/01/2000	मंगल	04/11/2009	राहु	03/06/2022
सूर्य	10/02/1984	चंद्र	10/10/1988	मंगल	10/10/2000	राहु	11/06/2011	गुरु	10/02/2024

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
10/02/2024		11/06/2035		10/02/2040		11/06/2053		11/06/2057	
11/06/2035		10/02/2040		11/06/2053		11/06/2057		00/00/0000	
बुध	18/09/2025	केतु	19/09/2035	शुक्र	02/05/2042	सूर्य	23/08/2053	चंद्र	31/12/2057
केतु	18/05/2026	शुक्र	29/06/2036	सूर्य	31/12/2042	चंद्र	23/12/2053	मंगल	22/05/2058
शुक्र	07/04/2028	सूर्य	22/09/2036	चंद्र	10/02/2044	मंगल	18/03/2054	राहु	22/05/2059
सूर्य	31/10/2028	चंद्र	11/02/2037	मंगल	20/11/2044	राहु	23/10/2054	गुरु	11/04/2060
चंद्र	11/10/2029	मंगल	22/05/2037	राहु	21/11/2046	गुरु	06/05/2055	शनि	12/03/2061
मंगल	09/06/2030	राहु	01/02/2038	गुरु	31/08/2048	शनि	23/12/2055		00/00/0000
राहु	20/02/2032	गुरु	17/09/2038	शनि	11/10/2050	बुध	17/07/2056		00/00/0000
गुरु	25/08/2033	शनि	13/06/2039	बुध	31/08/2052	केतु	10/10/2056		00/00/0000
शनि	11/06/2035	बुध	10/02/2040	केतु	11/06/2053	शुक्र	11/06/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
12/03/1981		01/05/1981		11/04/1982		31/08/1982		11/10/1983	
01/05/1981		11/04/1982		31/08/1982		11/10/1983		10/02/1984	
	00/00/0000	बुध	19/06/1981	केतु	20/04/1982	शुक्र	07/11/1982	सूर्य	17/10/1983
	00/00/0000	केतु	09/07/1981	शुक्र	13/05/1982	सूर्य	27/11/1982	चंद्र	27/10/1983
	00/00/0000	शुक्र	05/09/1981	सूर्य	20/05/1982	चंद्र	31/12/1982	मंगल	04/11/1983
	00/00/0000	सूर्य	22/09/1981	चंद्र	01/06/1982	मंगल	24/01/1983	राहु	22/11/1983
	00/00/0000	चंद्र	21/10/1981	मंगल	09/06/1982	राहु	26/03/1983	गुरु	08/12/1983
	00/00/0000	मंगल	10/11/1981	राहु	01/07/1982	गुरु	19/05/1983	शनि	27/12/1983
	00/00/0000	राहु	01/01/1982	गुरु	20/07/1982	शनि	22/07/1983	बुध	14/01/1984
	12/03/1981	गुरु	16/02/1982	शनि	11/08/1982	बुध	18/09/1983	केतु	21/01/1984
गुरु	01/05/1981	शनि	11/04/1982	बुध	31/08/1982	केतु	11/10/1983	शुक्र	10/02/1984

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
10/02/1984		19/05/1984		30/01/1985		14/09/1985		11/06/1986	
19/05/1984		30/01/1985		14/09/1985		11/06/1986		08/02/1987	
मंगल	16/02/1984	राहु	27/06/1984	गुरु	01/03/1985	शनि	27/10/1985	बुध	15/07/1986
राहु	02/03/1984	गुरु	31/07/1984	शनि	06/04/1985	बुध	04/12/1985	केतु	29/07/1986
गुरु	15/03/1984	शनि	09/09/1984	बुध	09/05/1985	केतु	20/12/1985	शुक्र	08/09/1986
शनि	31/03/1984	बुध	16/10/1984	केतु	22/05/1985	शुक्र	03/02/1986	सूर्य	20/09/1986
बुध	14/04/1984	केतु	30/10/1984	शुक्र	29/06/1985	सूर्य	16/02/1986	चंद्र	10/10/1986
केतु	20/04/1984	शुक्र	12/12/1984	सूर्य	10/07/1985	चंद्र	11/03/1986	मंगल	24/10/1986
शुक्र	06/05/1984	सूर्य	25/12/1984	चंद्र	29/07/1985	मंगल	27/03/1986	राहु	29/11/1986
सूर्य	11/05/1984	चंद्र	15/01/1985	मंगल	11/08/1985	राहु	06/05/1986	गुरु	31/12/1986
चंद्र	19/05/1984	मंगल	30/01/1985	राहु	14/09/1985	गुरु	11/06/1986	शनि	08/02/1987

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
08/02/1987		18/05/1987		26/02/1988		21/05/1988		10/10/1988	
18/05/1987		26/02/1988		21/05/1988		10/10/1988		30/07/1990	
केतु	13/02/1987	शुक्र	04/07/1987	सूर्य	01/03/1988	चंद्र	02/06/1988	राहु	17/01/1989
शुक्र	02/03/1987	सूर्य	19/07/1987	चंद्र	09/03/1988	मंगल	11/06/1988	गुरु	15/04/1989
सूर्य	07/03/1987	चंद्र	11/08/1987	मंगल	14/03/1988	राहु	02/07/1988	शनि	28/07/1989
चंद्र	15/03/1987	मंगल	28/08/1987	राहु	26/03/1988	गुरु	21/07/1988	बुध	29/10/1989
मंगल	21/03/1987	राहु	09/10/1987	गुरु	07/04/1988	शनि	12/08/1988	केतु	06/12/1989
राहु	05/04/1987	गुरु	16/11/1987	शनि	20/04/1988	बुध	01/09/1988	शुक्र	26/03/1990
गुरु	18/04/1987	शनि	31/12/1987	बुध	02/05/1988	केतु	10/09/1988	सूर्य	28/04/1990
शनि	04/05/1987	बुध	10/02/1988	केतु	07/05/1988	शुक्र	03/10/1988	चंद्र	22/06/1990
बुध	18/05/1987	केतु	26/02/1988	शुक्र	21/05/1988	सूर्य	10/10/1988	मंगल	30/07/1990

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
30/07/1990		05/03/1992		28/01/1994		11/10/1995		23/06/1996	
05/03/1992		28/01/1994		11/10/1995		23/06/1996		23/06/1998	
गुरु	16/10/1990	शनि	23/06/1992	बुध	26/04/1994	केतु	26/10/1995	शुक्र	23/10/1996
शनि	16/01/1991	बुध	29/09/1992	केतु	01/06/1994	शुक्र	08/12/1995	सूर्य	28/11/1996
बुध	09/04/1991	केतु	09/11/1992	शुक्र	13/09/1994	सूर्य	21/12/1995	चंद्र	28/01/1997
केतु	13/05/1991	शुक्र	05/03/1993	सूर्य	14/10/1994	चंद्र	11/01/1996	मंगल	12/03/1997
शुक्र	19/08/1991	सूर्य	08/04/1993	चंद्र	05/12/1994	मंगल	26/01/1996	राहु	29/06/1997
सूर्य	17/09/1991	चंद्र	05/06/1993	मंगल	10/01/1995	राहु	04/03/1996	गुरु	05/10/1997
चंद्र	05/11/1991	मंगल	16/07/1993	राहु	13/04/1995	गुरु	07/04/1996	शनि	28/01/1998
मंगल	09/12/1991	राहु	28/10/1993	गुरु	05/07/1995	शनि	18/05/1996	बुध	12/05/1998
राहु	05/03/1992	गुरु	28/01/1994	शनि	11/10/1995	बुध	23/06/1996	केतु	23/06/1998

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
23/06/1998		29/01/1999		29/01/2000		10/10/2000		14/03/2002	
29/01/1999		29/01/2000		10/10/2000		14/03/2002		21/11/2003	
सूर्य	04/07/1998	चंद्र	28/02/1999	मंगल	13/02/2000	गुरु	19/12/2000	शनि	20/06/2002
चंद्र	23/07/1998	मंगल	21/03/1999	राहु	22/03/2000	शनि	11/03/2001	बुध	15/09/2002
मंगल	04/08/1998	राहु	15/05/1999	गुरु	25/04/2000	बुध	24/05/2001	केतु	21/10/2002
राहु	06/09/1998	गुरु	03/07/1999	शनि	05/06/2000	केतु	23/06/2001	शुक्र	01/02/2003
गुरु	05/10/1998	शनि	30/08/1999	बुध	11/07/2000	शुक्र	17/09/2001	सूर्य	04/03/2003
शनि	09/11/1998	बुध	20/10/1999	केतु	26/07/2000	सूर्य	13/10/2001	चंद्र	24/04/2003
बुध	10/12/1998	केतु	11/11/1999	शुक्र	06/09/2000	चंद्र	26/11/2001	मंगल	30/05/2003
केतु	23/12/1998	शुक्र	11/01/2000	सूर्य	19/09/2000	मंगल	26/12/2001	राहु	31/08/2003
शुक्र	29/01/1999	सूर्य	29/01/2000	चंद्र	10/10/2000	राहु	14/03/2002	गुरु	21/11/2003

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
21/11/2003		26/05/2005		08/01/2006		19/10/2007		01/05/2008	
26/05/2005		08/01/2006		19/10/2007		01/05/2008		22/03/2009	
बुध	07/02/2004	केतु	08/06/2005	शुक्र	26/04/2006	सूर्य	29/10/2007	चंद्र	28/05/2008
केतु	10/03/2004	शुक्र	16/07/2005	सूर्य	29/05/2006	चंद्र	14/11/2007	मंगल	16/06/2008
शुक्र	10/06/2004	सूर्य	27/07/2005	चंद्र	22/07/2006	मंगल	26/11/2007	राहु	04/08/2008
सूर्य	08/07/2004	चंद्र	15/08/2005	मंगल	29/08/2006	राहु	25/12/2007	गुरु	16/09/2008
चंद्र	23/08/2004	मंगल	28/08/2005	राहु	04/12/2006	गुरु	20/01/2008	शनि	06/11/2008
मंगल	24/09/2004	राहु	01/10/2005	गुरु	01/03/2007	शनि	20/02/2008	बुध	22/12/2008
राहु	16/12/2004	गुरु	01/11/2005	शनि	11/06/2007	बुध	18/03/2008	केतु	10/01/2009
गुरु	27/02/2005	शनि	07/12/2005	बुध	11/09/2007	केतु	30/03/2008	शुक्र	06/03/2009
शनि	26/05/2005	बुध	08/01/2006	केतु	19/10/2007	शुक्र	01/05/2008	सूर्य	22/03/2009

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
22/03/2009		04/11/2009		11/06/2011		13/06/2013		30/03/2015	
04/11/2009		11/06/2011		13/06/2013		30/03/2015		25/12/2015	
मंगल	04/04/2009	राहु	31/01/2010	शनि	05/10/2011	बुध	14/09/2013	केतु	15/04/2015
राहु	08/05/2009	गुरु	19/04/2010	बुध	17/01/2012	केतु	22/10/2013	शुक्र	30/05/2015
गुरु	07/06/2009	शनि	20/07/2010	केतु	29/02/2012	शुक्र	08/02/2014	सूर्य	13/06/2015
शनि	13/07/2009	बुध	11/10/2010	शुक्र	30/06/2012	सूर्य	13/03/2014	चंद्र	05/07/2015
बुध	15/08/2009	केतु	14/11/2010	सूर्य	06/08/2012	चंद्र	07/05/2014	मंगल	21/07/2015
केतु	28/08/2009	शुक्र	19/02/2011	चंद्र	06/10/2012	मंगल	14/06/2014	राहु	30/08/2015
शुक्र	05/10/2009	सूर्य	21/03/2011	मंगल	17/11/2012	राहु	20/09/2014	गुरु	05/10/2015
सूर्य	16/10/2009	चंद्र	08/05/2011	राहु	07/03/2013	गुरु	17/12/2014	शनि	17/11/2015
चंद्र	04/11/2009	मंगल	11/06/2011	गुरु	13/06/2013	शनि	30/03/2015	बुध	25/12/2015

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
25/12/2015		03/02/2018		23/09/2018		13/10/2019		09/07/2020	
03/02/2018		23/09/2018		13/10/2019		09/07/2020		03/06/2022	
शुक्र	02/05/2016	सूर्य	15/02/2018	चंद्र	25/10/2018	मंगल	29/10/2019	राहु	21/10/2020
सूर्य	09/06/2016	चंद्र	06/03/2018	मंगल	16/11/2018	राहु	08/12/2019	गुरु	22/01/2021
चंद्र	13/08/2016	मंगल	20/03/2018	राहु	13/01/2019	गुरु	13/01/2020	शनि	12/05/2021
मंगल	27/09/2016	राहु	23/04/2018	गुरु	06/03/2019	शनि	25/02/2020	बुध	18/08/2021
राहु	20/01/2017	गुरु	24/05/2018	शनि	06/05/2019	बुध	03/04/2020	केतु	27/09/2021
गुरु	03/05/2017	शनि	30/06/2018	बुध	29/06/2019	केतु	19/04/2020	शुक्र	21/01/2022
शनि	02/09/2017	बुध	02/08/2018	केतु	22/07/2019	शुक्र	03/06/2020	सूर्य	25/02/2022
बुध	20/12/2017	केतु	15/08/2018	शुक्र	24/09/2019	सूर्य	17/06/2020	चंद्र	24/04/2022
केतु	03/02/2018	शुक्र	23/09/2018	सूर्य	13/10/2019	चंद्र	09/07/2020	मंगल	03/06/2022

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
03/06/2022		10/02/2024		18/09/2025		18/05/2026		07/04/2028	
10/02/2024		18/09/2025		18/05/2026		07/04/2028		31/10/2028	
गुरु	24/08/2022	बुध	03/05/2024	केतु	02/10/2025	शुक्र	10/09/2026	सूर्य	17/04/2028
शनि	30/11/2022	केतु	06/06/2024	शुक्र	12/11/2025	सूर्य	14/10/2026	चंद्र	04/05/2028
बुध	25/02/2023	शुक्र	12/09/2024	सूर्य	24/11/2025	चंद्र	11/12/2026	मंगल	16/05/2028
केतु	02/04/2023	सूर्य	11/10/2024	चंद्र	14/12/2025	मंगल	20/01/2027	राहु	16/06/2028
शुक्र	14/07/2023	चंद्र	29/11/2024	मंगल	28/12/2025	राहु	04/05/2027	गुरु	14/07/2028
सूर्य	14/08/2023	मंगल	02/01/2025	राहु	02/02/2026	गुरु	04/08/2027	शनि	16/08/2028
चंद्र	04/10/2023	राहु	31/03/2025	गुरु	06/03/2026	शनि	21/11/2027	बुध	14/09/2028
मंगल	09/11/2023	गुरु	18/06/2025	शनि	14/04/2026	बुध	27/02/2028	केतु	26/09/2028
राहु	10/02/2024	शनि	18/09/2025	बुध	18/05/2026	केतु	07/04/2028	शुक्र	31/10/2028

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
31/10/2028		11/10/2029		09/06/2030		20/02/2032		25/08/2033	
11/10/2029		09/06/2030		20/02/2032		25/08/2033		11/06/2035	
चंद्र	28/11/2028	मंगल	25/10/2029	राहु	10/09/2030	गुरु	04/05/2032	शनि	07/12/2033
मंगल	19/12/2028	राहु	30/11/2029	गुरु	02/12/2030	शनि	30/07/2032	बुध	10/03/2034
राहु	08/02/2029	गुरु	01/01/2030	शनि	10/03/2031	बुध	16/10/2032	केतु	17/04/2034
गुरु	26/03/2029	शनि	08/02/2030	बुध	06/06/2031	केतु	17/11/2032	शुक्र	04/08/2034
शनि	20/05/2029	बुध	15/03/2030	केतु	13/07/2031	शुक्र	17/02/2033	सूर्य	06/09/2034
बुध	08/07/2029	केतु	29/03/2030	शुक्र	24/10/2031	सूर्य	17/03/2033	चंद्र	31/10/2034
केतु	28/07/2029	शुक्र	08/05/2030	सूर्य	24/11/2031	चंद्र	02/05/2033	मंगल	08/12/2034
शुक्र	23/09/2029	सूर्य	20/05/2030	चंद्र	15/01/2032	मंगल	03/06/2033	राहु	16/03/2035
सूर्य	11/10/2029	चंद्र	09/06/2030	मंगल	20/02/2032	राहु	25/08/2033	गुरु	11/06/2035

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
11/06/2035		19/09/2035		29/06/2036		22/09/2036		11/02/2037	
19/09/2035		29/06/2036		22/09/2036		11/02/2037		22/05/2037	
केतु	17/06/2035	शुक्र	05/11/2035	सूर्य	03/07/2036	चंद्र	04/10/2036	मंगल	17/02/2037
शुक्र	04/07/2035	सूर्य	19/11/2035	चंद्र	10/07/2036	मंगल	12/10/2036	राहु	04/03/2037
सूर्य	09/07/2035	चंद्र	13/12/2035	मंगल	15/07/2036	राहु	03/11/2036	गुरु	17/03/2037
चंद्र	17/07/2035	मंगल	30/12/2035	राहु	28/07/2036	गुरु	22/11/2036	शनि	02/04/2037
मंगल	23/07/2035	राहु	10/02/2036	गुरु	08/08/2036	शनि	14/12/2036	बुध	16/04/2037
राहु	07/08/2035	गुरु	19/03/2036	शनि	22/08/2036	बुध	03/01/2037	केतु	22/04/2037
गुरु	20/08/2035	शनि	03/05/2036	बुध	03/09/2036	केतु	11/01/2037	शुक्र	08/05/2037
शनि	05/09/2035	बुध	12/06/2036	केतु	08/09/2036	शुक्र	04/02/2037	सूर्य	13/05/2037
बुध	19/09/2035	केतु	29/06/2036	शुक्र	22/09/2036	सूर्य	11/02/2037	चंद्र	22/05/2037

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
22/05/2037		01/02/2038		17/09/2038		13/06/2039		10/02/2040	
01/02/2038		17/09/2038		13/06/2039		10/02/2040		02/05/2042	
राहु	29/06/2037	गुरु	04/03/2038	शनि	29/10/2038	बुध	18/07/2039	शुक्र	24/06/2040
गुरु	02/08/2037	शनि	09/04/2038	बुध	07/12/2038	केतु	01/08/2039	सूर्य	04/08/2040
शनि	12/09/2037	बुध	11/05/2038	केतु	22/12/2038	शुक्र	10/09/2039	चंद्र	10/10/2040
बुध	18/10/2037	केतु	24/05/2038	शुक्र	05/02/2039	सूर्य	22/09/2039	मंगल	27/11/2040
केतु	02/11/2037	शुक्र	01/07/2038	सूर्य	19/02/2039	चंद्र	12/10/2039	राहु	29/03/2041
शुक्र	14/12/2037	सूर्य	12/07/2038	चंद्र	13/03/2039	मंगल	26/10/2039	गुरु	15/07/2041
सूर्य	27/12/2037	चंद्र	31/07/2038	मंगल	29/03/2039	राहु	02/12/2039	शनि	20/11/2041
चंद्र	17/01/2038	मंगल	14/08/2038	राहु	08/05/2039	गुरु	03/01/2040	बुध	15/03/2042
मंगल	01/02/2038	राहु	17/09/2038	गुरु	13/06/2039	शनि	10/02/2040	केतु	02/05/2042

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
02/05/2042		31/12/2042		10/02/2044		20/11/2044		21/11/2046	
31/12/2042		10/02/2044		20/11/2044		21/11/2046		31/08/2048	
सूर्य	14/05/2042	चंद्र	03/02/2043	मंगल	27/02/2044	राहु	10/03/2045	गुरु	15/02/2047
चंद्र	03/06/2042	मंगल	27/02/2043	राहु	09/04/2044	गुरु	15/06/2045	शनि	29/05/2047
मंगल	17/06/2042	राहु	28/04/2043	गुरु	17/05/2044	शनि	09/10/2045	बुध	29/08/2047
राहु	24/07/2042	गुरु	22/06/2043	शनि	01/07/2044	बुध	20/01/2046	केतु	06/10/2047
गुरु	25/08/2042	शनि	25/08/2043	बुध	10/08/2044	केतु	04/03/2046	शुक्र	22/01/2048
शनि	03/10/2042	बुध	21/10/2043	केतु	27/08/2044	शुक्र	04/07/2046	सूर्य	23/02/2048
बुध	06/11/2042	केतु	14/11/2043	शुक्र	13/10/2044	सूर्य	09/08/2046	चंद्र	18/04/2048
केतु	21/11/2042	शुक्र	21/01/2044	सूर्य	27/10/2044	चंद्र	09/10/2046	मंगल	25/05/2048
शुक्र	31/12/2042	सूर्य	10/02/2044	चंद्र	20/11/2044	मंगल	21/11/2046	राहु	31/08/2048

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
31/08/2048		11/10/2050		31/08/2052		11/06/2053		23/08/2053	
11/10/2050		31/08/2052		11/06/2053		23/08/2053		23/12/2053	
शनि	31/12/2048	बुध	17/01/2051	केतु	16/09/2052	सूर्य	15/06/2053	चंद्र	02/09/2053
बुध	19/04/2049	केतु	26/02/2051	शुक्र	03/11/2052	चंद्र	21/06/2053	मंगल	09/09/2053
केतु	03/06/2049	शुक्र	21/06/2051	सूर्य	17/11/2052	मंगल	25/06/2053	राहु	28/09/2053
शुक्र	10/10/2049	सूर्य	25/07/2051	चंद्र	11/12/2052	राहु	06/07/2053	गुरु	14/10/2053
सूर्य	17/11/2049	चंद्र	21/09/2051	मंगल	27/12/2052	गुरु	16/07/2053	शनि	02/11/2053
चंद्र	20/01/2050	मंगल	31/10/2051	राहु	08/02/2053	शनि	27/07/2053	बुध	19/11/2053
मंगल	06/03/2050	राहु	12/02/2052	गुरु	18/03/2053	बुध	07/08/2053	केतु	26/11/2053
राहु	30/06/2050	गुरु	14/05/2052	शनि	02/05/2053	केतु	11/08/2053	शुक्र	17/12/2053
गुरु	11/10/2050	शनि	31/08/2052	बुध	11/06/2053	शुक्र	23/08/2053	सूर्य	23/12/2053

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
23/12/2053		18/03/2054		23/10/2054		06/05/2055		23/12/2055	
18/03/2054		23/10/2054		06/05/2055		23/12/2055		17/07/2056	
मंगल	28/12/2053	राहु	20/04/2054	गुरु	18/11/2054	शनि	12/06/2055	बुध	22/01/2056
राहु	09/01/2054	गुरु	19/05/2054	शनि	19/12/2054	बुध	14/07/2055	केतु	03/02/2056
गुरु	21/01/2054	शनि	23/06/2054	बुध	16/01/2055	केतु	28/07/2055	शुक्र	08/03/2056
शनि	03/02/2054	बुध	24/07/2054	केतु	27/01/2055	शुक्र	04/09/2055	सूर्य	18/03/2056
बुध	15/02/2054	केतु	06/08/2054	शुक्र	28/02/2055	सूर्य	16/09/2055	चंद्र	05/04/2056
केतु	20/02/2054	शुक्र	11/09/2054	सूर्य	10/03/2055	चंद्र	05/10/2055	मंगल	17/04/2056
शुक्र	07/03/2054	सूर्य	22/09/2054	चंद्र	26/03/2055	मंगल	19/10/2055	राहु	18/05/2056
सूर्य	11/03/2054	चंद्र	10/10/2054	मंगल	07/04/2055	राहु	22/11/2055	गुरु	14/06/2056
चंद्र	18/03/2054	मंगल	23/10/2054	राहु	06/05/2055	गुरु	23/12/2055	शनि	17/07/2056

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 10 मास 15 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
12/03/1981		26/01/1984		26/01/1999		26/01/2007		26/01/2024	
26/01/1984		26/01/1999		26/01/2007		26/01/2024		25/01/2034	
	00/00/0000	चंद्र	25/02/1986	मंगल	30/08/1999	बुध	29/09/2009	शनि	29/12/2024
	00/00/0000	मंगल	07/04/1987	बुध	02/12/2000	शनि	27/04/2011	गुरु	03/10/2026
	00/00/0000	बुध	16/08/1989	शनि	30/08/2001	गुरु	23/04/2014	राहु	13/11/2027
	00/00/0000	शनि	05/01/1991	गुरु	26/01/2003	राहु	13/03/2016	शुक्र	23/10/2029
	12/03/1981	गुरु	26/08/1993	राहु	16/12/2003	शुक्र	04/07/2019	सूर्य	14/05/2030
गुरु	27/03/1982	राहु	27/04/1995	शुक्र	07/07/2005	सूर्य	13/06/2020	चंद्र	03/10/2031
राहु	26/11/1982	शुक्र	27/03/1998	सूर्य	16/12/2005	चंद्र	23/10/2022	मंगल	30/06/2032
शुक्र	26/01/1984	सूर्य	26/01/1999	चंद्र	26/01/2007	मंगल	26/01/2024	बुध	25/01/2034

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
25/01/2034		25/01/2053		25/01/2065		25/01/2086	
25/01/2053		25/01/2065		25/01/2086		00/00/0000	
गुरु	30/05/2037	राहु	27/05/2054	शुक्र	25/02/2069	सूर्य	27/05/2086
राहु	10/07/2039	शुक्र	25/09/2056	सूर्य	27/04/2070	चंद्र	28/03/2087
शुक्र	21/03/2043	सूर्य	27/05/2057	चंद्र	27/03/2073	मंगल	06/09/2087
सूर्य	09/04/2044	चंद्र	26/01/2059	मंगल	16/10/2074	बुध	16/08/2088
चंद्र	29/11/2046	मंगल	16/12/2059	बुध	05/02/2078	शनि	07/03/2089
मंगल	26/04/2048	बुध	05/11/2061	शनि	16/01/2080	गुरु	12/03/2089
बुध	24/04/2051	शनि	16/12/2062	गुरु	26/09/2083		00/00/0000
शनि	25/01/2053	गुरु	25/01/2065	राहु	25/01/2086		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
12/03/1981		27/03/1982		26/11/1982		26/01/1984		25/02/1986	
27/03/1982		26/11/1982		26/01/1984		25/02/1986		07/04/1987	
गुरु	14/05/1981	राहु	23/04/1982	शुक्र	17/02/1983	चंद्र	11/05/1984	मंगल	27/03/1986
राहु	25/06/1981	शुक्र	10/06/1982	सूर्य	12/03/1983	मंगल	06/07/1984	बुध	30/05/1986
शुक्र	08/09/1981	सूर्य	23/06/1982	चंद्र	11/05/1983	बुध	03/11/1984	शनि	06/07/1986
सूर्य	30/09/1981	चंद्र	27/07/1982	मंगल	11/06/1983	शनि	12/01/1985	गुरु	16/09/1986
चंद्र	22/11/1981	मंगल	14/08/1982	बुध	17/08/1983	गुरु	26/05/1985	राहु	31/10/1986
मंगल	21/12/1981	बुध	21/09/1982	शनि	26/09/1983	राहु	19/08/1985	शुक्र	18/01/1987
बुध	20/02/1982	शनि	14/10/1982	गुरु	10/12/1983	शुक्र	14/01/1986	सूर्य	09/02/1987
शनि	27/03/1982	गुरु	26/11/1982	राहु	26/01/1984	सूर्य	25/02/1986	चंद्र	07/04/1987

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
07/04/1987		16/08/1989		05/01/1991		26/08/1993		27/04/1995	
16/08/1989		05/01/1991		26/08/1993		27/04/1995		27/03/1998	
बुध	20/08/1987	शनि	02/10/1989	गुरु	24/06/1991	राहु	02/11/1993	शुक्र	20/11/1995
शनि	08/11/1987	गुरु	30/12/1989	राहु	09/10/1991	शुक्र	28/02/1994	सूर्य	18/01/1996
गुरु	08/04/1988	राहु	25/02/1990	शुक्र	14/04/1992	सूर्य	03/04/1994	चंद्र	14/06/1996
राहु	13/07/1988	शुक्र	03/06/1990	सूर्य	06/06/1992	चंद्र	27/06/1994	मंगल	01/09/1996
शुक्र	28/12/1988	सूर्य	02/07/1990	चंद्र	18/10/1992	मंगल	11/08/1994	बुध	16/02/1997
सूर्य	13/02/1989	चंद्र	10/09/1990	मंगल	28/12/1992	बुध	15/11/1994	शनि	26/05/1997
चंद्र	13/06/1989	मंगल	18/10/1990	बुध	29/05/1993	शनि	10/01/1995	गुरु	29/11/1997
मंगल	16/08/1989	बुध	05/01/1991	शनि	26/08/1993	गुरु	27/04/1995	राहु	27/03/1998

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
27/03/1998		26/01/1999		30/08/1999		02/12/2000		30/08/2001	
26/01/1999		30/08/1999		02/12/2000		30/08/2001		26/01/2003	
सूर्य	13/04/1998	मंगल	11/02/1999	बुध	11/11/1999	शनि	27/12/2000	गुरु	28/11/2001
चंद्र	26/05/1998	बुध	17/03/1999	शनि	23/12/1999	गुरु	13/02/2001	राहु	24/01/2002
मंगल	17/06/1998	शनि	06/04/1999	गुरु	13/03/2000	राहु	15/03/2001	शुक्र	04/05/2002
बुध	04/08/1998	गुरु	14/05/1999	राहु	03/05/2000	शुक्र	06/05/2001	सूर्य	02/06/2002
शनि	01/09/1998	राहु	07/06/1999	शुक्र	01/08/2000	सूर्य	21/05/2001	चंद्र	12/08/2002
गुरु	25/10/1998	शुक्र	19/07/1999	सूर्य	26/08/2000	चंद्र	28/06/2001	मंगल	19/09/2002
राहु	28/11/1998	सूर्य	31/07/1999	चंद्र	29/10/2000	मंगल	18/07/2001	बुध	09/12/2002
शुक्र	26/01/1999	चंद्र	30/08/1999	मंगल	02/12/2000	बुध	30/08/2001	शनि	26/01/2003

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
26/01/2003		16/12/2003		07/07/2005		16/12/2005		26/01/2007	
16/12/2003		07/07/2005		16/12/2005		26/01/2007		29/09/2009	
राहु	03/03/2003	शुक्र	05/04/2004	सूर्य	16/07/2005	चंद्र	10/02/2006	बुध	29/06/2007
शुक्र	05/05/2003	सूर्य	06/05/2004	चंद्र	07/08/2005	मंगल	12/03/2006	शनि	27/09/2007
सूर्य	23/05/2003	चंद्र	24/07/2004	मंगल	19/08/2005	बुध	15/05/2006	गुरु	17/03/2008
चंद्र	07/07/2003	मंगल	04/09/2004	बुध	14/09/2005	शनि	22/06/2006	राहु	04/07/2008
मंगल	31/07/2003	बुध	03/12/2004	शनि	29/09/2005	गुरु	01/09/2006	शुक्र	10/01/2009
बुध	20/09/2003	शनि	24/01/2005	गुरु	27/10/2005	राहु	16/10/2006	सूर्य	05/03/2009
शनि	20/10/2003	गुरु	04/05/2005	राहु	14/11/2005	शुक्र	03/01/2007	चंद्र	19/07/2009
गुरु	16/12/2003	राहु	07/07/2005	शुक्र	16/12/2005	सूर्य	26/01/2007	मंगल	29/09/2009

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
29/09/2009		27/04/2011		23/04/2014		13/03/2016		04/07/2019	
27/04/2011		23/04/2014		13/03/2016		04/07/2019		13/06/2020	
शनि	21/11/2009	गुरु	05/11/2011	राहु	09/07/2014	शुक्र	03/11/2016	सूर्य	23/07/2019
गुरु	02/03/2010	राहु	06/03/2012	शुक्र	20/11/2014	सूर्य	09/01/2017	चंद्र	09/09/2019
राहु	05/05/2010	शुक्र	04/10/2012	सूर्य	29/12/2014	चंद्र	26/06/2017	मंगल	04/10/2019
शुक्र	25/08/2010	सूर्य	04/12/2012	चंद्र	03/04/2015	मंगल	23/09/2017	बुध	28/11/2019
सूर्य	26/09/2010	चंद्र	04/05/2013	मंगल	24/05/2015	बुध	01/04/2018	शनि	30/12/2019
चंद्र	15/12/2010	मंगल	24/07/2013	बुध	10/09/2015	शनि	22/07/2018	गुरु	28/02/2020
मंगल	27/01/2011	बुध	12/01/2014	शनि	13/11/2015	गुरु	20/02/2019	राहु	07/04/2020
बुध	27/04/2011	शनि	23/04/2014	गुरु	13/03/2016	राहु	04/07/2019	शुक्र	13/06/2020

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
13/06/2020		23/10/2022		26/01/2024		29/12/2024		03/10/2026	
23/10/2022		26/01/2024		29/12/2024		03/10/2026		13/11/2027	
चंद्र	10/10/2020	मंगल	26/11/2022	शनि	26/02/2024	गुरु	21/04/2025	राहु	17/11/2026
मंगल	13/12/2020	बुध	07/02/2023	गुरु	26/04/2024	राहु	02/07/2025	शुक्र	04/02/2027
बुध	28/04/2021	शनि	21/03/2023	राहु	02/06/2024	शुक्र	04/11/2025	सूर्य	26/02/2027
शनि	17/07/2021	गुरु	10/06/2023	शुक्र	07/08/2024	सूर्य	09/12/2025	चंद्र	24/04/2027
गुरु	16/12/2021	राहु	31/07/2023	सूर्य	26/08/2024	चंद्र	09/03/2026	मंगल	24/05/2027
राहु	21/03/2022	शुक्र	29/10/2023	चंद्र	12/10/2024	मंगल	25/04/2026	बुध	27/07/2027
शुक्र	05/09/2022	सूर्य	23/11/2023	मंगल	06/11/2024	बुध	04/08/2026	शनि	02/09/2027
सूर्य	23/10/2022	चंद्र	26/01/2024	बुध	29/12/2024	शनि	03/10/2026	गुरु	13/11/2027

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
13/11/2027		23/10/2029		14/05/2030		03/10/2031		30/06/2032	
23/10/2029		14/05/2030		03/10/2031		30/06/2032		25/01/2034	
शुक्र	30/03/2028	सूर्य	03/11/2029	चंद्र	23/07/2030	मंगल	23/10/2031	बुध	28/09/2032
सूर्य	08/05/2028	चंद्र	01/12/2029	मंगल	30/08/2030	बुध	05/12/2031	शनि	20/11/2032
चंद्र	15/08/2028	मंगल	16/12/2029	बुध	18/11/2030	शनि	30/12/2031	गुरु	01/03/2033
मंगल	06/10/2028	बुध	17/01/2030	शनि	04/01/2031	गुरु	15/02/2032	राहु	04/05/2033
बुध	26/01/2029	शनि	05/02/2030	गुरु	03/04/2031	राहु	16/03/2032	शुक्र	24/08/2033
शनि	02/04/2029	गुरु	13/03/2030	राहु	29/05/2031	शुक्र	08/05/2032	सूर्य	25/09/2033
गुरु	05/08/2029	राहु	04/04/2030	शुक्र	05/09/2031	सूर्य	23/05/2032	चंद्र	14/12/2033
राहु	23/10/2029	शुक्र	14/05/2030	सूर्य	03/10/2031	चंद्र	30/06/2032	मंगल	25/01/2034

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
25/01/2034		30/05/2037		10/07/2039		21/03/2043		09/04/2044	
30/05/2037		10/07/2039		21/03/2043		09/04/2044		29/11/2046	
गुरु	28/08/2034	राहु	24/08/2037	शुक्र	29/03/2040	सूर्य	11/04/2043	चंद्र	21/08/2044
राहु	11/01/2035	शुक्र	21/01/2038	सूर्य	12/06/2040	चंद्र	04/06/2043	मंगल	01/11/2044
शुक्र	05/09/2035	सूर्य	05/03/2038	चंद्र	16/12/2040	मंगल	02/07/2043	बुध	01/04/2045
सूर्य	12/11/2035	चंद्र	20/06/2038	मंगल	26/03/2041	बुध	01/09/2043	शनि	30/06/2045
चंद्र	30/04/2036	मंगल	16/08/2038	बुध	25/10/2041	शनि	07/10/2043	गुरु	16/12/2045
मंगल	29/07/2036	बुध	15/12/2038	शनि	27/02/2042	गुरु	14/12/2043	राहु	02/04/2046
बुध	06/02/2037	शनि	25/02/2039	गुरु	22/10/2042	राहु	25/01/2044	शुक्र	07/10/2046
शनि	30/05/2037	गुरु	10/07/2039	राहु	21/03/2043	शुक्र	09/04/2044	सूर्य	29/11/2046

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
29/11/2046		26/04/2048		24/04/2051		25/01/2053		27/05/2054	
26/04/2048		24/04/2051		25/01/2053		27/05/2054		25/09/2056	
मंगल	06/01/2047	बुध	15/10/2048	शनि	22/06/2051	राहु	20/03/2053	शुक्र	09/11/2054
बुध	28/03/2047	शनि	24/01/2049	गुरु	13/10/2051	शुक्र	23/06/2053	सूर्य	26/12/2054
शनि	15/05/2047	गुरु	05/08/2049	राहु	24/12/2051	सूर्य	20/07/2053	चंद्र	24/04/2055
गुरु	13/08/2047	राहु	04/12/2049	शुक्र	27/04/2052	चंद्र	26/09/2053	मंगल	26/06/2055
राहु	09/10/2047	शुक्र	04/07/2050	सूर्य	01/06/2052	मंगल	01/11/2053	बुध	07/11/2055
शुक्र	17/01/2048	सूर्य	03/09/2050	चंद्र	29/08/2052	बुध	16/01/2054	शनि	25/01/2056
सूर्य	15/02/2048	चंद्र	02/02/2051	मंगल	16/10/2052	शनि	03/03/2054	गुरु	23/06/2056
चंद्र	26/04/2048	मंगल	24/04/2051	बुध	25/01/2053	गुरु	27/05/2054	राहु	25/09/2056

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
25/09/2056		27/05/2057		26/01/2059		16/12/2059		05/11/2061	
27/05/2057		26/01/2059		16/12/2059		05/11/2061		16/12/2062	
सूर्य	09/10/2056	चंद्र	20/08/2057	मंगल	19/02/2059	बुध	03/04/2060	शनि	13/12/2061
चंद्र	12/11/2056	मंगल	04/10/2057	बुध	11/04/2059	शनि	06/06/2060	गुरु	22/02/2062
मंगल	30/11/2056	बुध	07/01/2058	शनि	11/05/2059	गुरु	05/10/2060	राहु	08/04/2062
बुध	07/01/2057	शनि	05/03/2058	गुरु	07/07/2059	राहु	21/12/2060	शुक्र	26/06/2062
शनि	30/01/2057	गुरु	20/06/2058	राहु	12/08/2059	शुक्र	04/05/2061	सूर्य	19/07/2062
गुरु	14/03/2057	राहु	27/08/2058	शुक्र	14/10/2059	सूर्य	11/06/2061	चंद्र	13/09/2062
राहु	10/04/2057	शुक्र	23/12/2058	सूर्य	01/11/2059	चंद्र	15/09/2061	मंगल	13/10/2062
शुक्र	27/05/2057	सूर्य	26/01/2059	चंद्र	16/12/2059	मंगल	05/11/2061	बुध	16/12/2062

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
16/12/2062		25/01/2065		25/02/2069		27/04/2070		27/03/2073	
25/01/2065		25/02/2069		27/04/2070		27/03/2073		16/10/2074	
गुरु	01/05/2063	शुक्र	11/11/2065	सूर्य	20/03/2069	चंद्र	22/09/2070	मंगल	08/05/2073
राहु	25/07/2063	सूर्य	02/02/2066	चंद्र	19/05/2069	मंगल	10/12/2070	बुध	06/08/2073
शुक्र	22/12/2063	चंद्र	28/08/2066	मंगल	19/06/2069	बुध	26/05/2071	शनि	27/09/2073
सूर्य	03/02/2064	मंगल	17/12/2066	बुध	25/08/2069	शनि	02/09/2071	गुरु	05/01/2074
चंद्र	20/05/2064	बुध	08/08/2067	शनि	04/10/2069	गुरु	07/03/2072	राहु	09/03/2074
मंगल	16/07/2064	शनि	25/12/2067	गुरु	18/12/2069	राहु	04/07/2072	शुक्र	28/06/2074
बुध	15/11/2064	गुरु	12/09/2068	राहु	03/02/2070	शुक्र	27/01/2073	सूर्य	29/07/2074
शनि	25/01/2065	राहु	25/02/2069	शुक्र	27/04/2070	सूर्य	27/03/2073	चंद्र	16/10/2074

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
16/10/2074		05/02/2078		16/01/2080		26/09/2083		25/01/2086	
05/02/2078		16/01/2080		26/09/2083		25/01/2086		27/05/2086	
बुध	24/04/2075	शनि	11/04/2078	गुरु	09/09/2080	राहु	30/12/2083	सूर्य	01/02/2086
शनि	14/08/2075	गुरु	14/08/2078	राहु	06/02/2081	शुक्र	13/06/2084	चंद्र	18/02/2086
गुरु	14/03/2076	राहु	01/11/2078	शुक्र	27/10/2081	सूर्य	30/07/2084	मंगल	27/02/2086
राहु	26/07/2076	शुक्र	19/03/2079	सूर्य	10/01/2082	चंद्र	25/11/2084	बुध	18/03/2086
शुक्र	17/03/2077	सूर्य	28/04/2079	चंद्र	16/07/2082	मंगल	27/01/2085	शनि	30/03/2086
सूर्य	24/05/2077	चंद्र	04/08/2079	मंगल	24/10/2082	बुध	11/06/2085	गुरु	20/04/2086
चंद्र	07/11/2077	मंगल	26/09/2079	बुध	24/05/2083	शनि	29/08/2085	राहु	04/05/2086
मंगल	05/02/2078	बुध	16/01/2080	शनि	26/09/2083	गुरु	25/01/2086	शुक्र	27/05/2086

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 3 वर्ष 0 मास 22 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
12/03/1981		03/04/1984		03/04/1992		03/04/1993		04/04/1995	
03/04/1984		03/04/1992		03/04/1993		04/04/1995		04/04/1998	
	00/00/0000	संक	13/01/1986	मंग	13/04/1992	पिंग	14/05/1993	धांय	04/07/1995
	00/00/0000	मंग	04/04/1986	पिंग	04/05/1992	धांय	14/07/1993	भ्राम	03/11/1995
	00/00/0000	पिंग	13/09/1986	धांय	03/06/1992	भ्राम	03/10/1993	भद्रि	03/04/1996
	12/03/1981	धांय	15/05/1987	भ्राम	14/07/1992	भद्रि	13/01/1994	उल्क	03/10/1996
धांय	04/05/1981	भ्राम	03/04/1988	भद्रि	02/09/1992	उल्क	14/05/1994	सिद्ध	04/05/1997
भ्राम	12/02/1982	भद्रि	14/05/1989	उल्क	02/11/1992	सिद्ध	03/10/1994	संक	02/01/1998
भद्रि	02/02/1983	उल्क	13/09/1990	सिद्ध	12/01/1993	संक	15/03/1995	मंग	02/02/1998
उल्क	03/04/1984	सिद्ध	03/04/1992	संक	03/04/1993	मंग	04/04/1995	पिंग	04/04/1998

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
04/04/1998		04/04/2002		04/04/2007		03/04/2013		03/04/2020	
04/04/2002		04/04/2007		03/04/2013		03/04/2020		03/04/2028	
भ्राम	13/09/1998	भद्रि	13/12/2002	उल्क	03/04/2008	सिद्ध	14/08/2014	संक	13/01/2022
भद्रि	04/04/1999	उल्क	14/10/2003	सिद्ध	03/06/2009	संक	04/03/2016	मंग	04/04/2022
उल्क	03/12/1999	सिद्ध	03/10/2004	संक	03/10/2010	मंग	14/05/2016	पिंग	13/09/2022
सिद्ध	13/09/2000	संक	13/11/2005	मंग	03/12/2010	पिंग	03/10/2016	धांय	15/05/2023
संक	03/08/2001	मंग	02/01/2006	पिंग	04/04/2011	धांय	04/05/2017	भ्राम	03/04/2024
मंग	13/09/2001	पिंग	14/04/2006	धांय	04/10/2011	भ्राम	12/02/2018	भद्रि	14/05/2025
पिंग	03/12/2001	धांय	13/09/2006	भ्राम	03/06/2012	भद्रि	02/02/2019	उल्क	13/09/2026
धांय	04/04/2002	भ्राम	04/04/2007	भद्रि	03/04/2013	उल्क	03/04/2020	सिद्ध	03/04/2028

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
03/04/2028		03/04/2029		04/04/2031		04/04/2034		04/04/2038	
03/04/2029		04/04/2031		04/04/2034		04/04/2038		04/04/2043	
मंग	13/04/2028	पिंग	14/05/2029	धांय	04/07/2031	भ्राम	13/09/2034	भद्रि	13/12/2038
पिंग	04/05/2028	धांय	14/07/2029	भ्राम	03/11/2031	भद्रि	04/04/2035	उल्क	14/10/2039
धांय	03/06/2028	भ्राम	03/10/2029	भद्रि	03/04/2032	उल्क	03/12/2035	सिद्ध	03/10/2040
भ्राम	14/07/2028	भद्रि	13/01/2030	उल्क	03/10/2032	सिद्ध	13/09/2036	संक	13/11/2041
भद्रि	02/09/2028	उल्क	14/05/2030	सिद्ध	04/05/2033	संक	03/08/2037	मंग	02/01/2042
उल्क	02/11/2028	सिद्ध	03/10/2030	संक	02/01/2034	मंग	13/09/2037	पिंग	14/04/2042
सिद्ध	12/01/2029	संक	15/03/2031	मंग	02/02/2034	पिंग	03/12/2037	धांय	13/09/2042
संक	03/04/2029	मंग	04/04/2031	पिंग	04/04/2034	धांय	04/04/2038	भ्राम	04/04/2043

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
04/04/2043		03/04/2049		03/04/2056		03/04/2064		03/04/2065	
03/04/2049		03/04/2056		03/04/2064		03/04/2065		04/04/2067	
उल्क	03/04/2044	सिद्ध	14/08/2050	संक	13/01/2058	मंग	13/04/2064	पिंग	14/05/2065
सिद्ध	03/06/2045	संक	04/03/2052	मंग	04/04/2058	पिंग	04/05/2064	धांय	14/07/2065
संक	03/10/2046	मंग	14/05/2052	पिंग	13/09/2058	धांय	03/06/2064	भ्राम	03/10/2065
मंग	03/12/2046	पिंग	03/10/2052	धांय	15/05/2059	भ्राम	14/07/2064	भद्रि	13/01/2066
पिंग	04/04/2047	धांय	04/05/2053	भ्राम	03/04/2060	भद्रि	02/09/2064	उल्क	14/05/2066
धांय	04/10/2047	भ्राम	12/02/2054	भद्रि	14/05/2061	उल्क	02/11/2064	सिद्ध	03/10/2066
भ्राम	03/06/2048	भद्रि	02/02/2055	उल्क	13/09/2062	सिद्ध	12/01/2065	संक	15/03/2067
भद्रि	03/04/2049	उल्क	03/04/2056	सिद्ध	03/04/2064	संक	03/04/2065	मंग	04/04/2067

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
04/04/2067		04/04/2070		04/04/2074		04/04/2079		03/04/2085	
04/04/2070		04/04/2074		04/04/2079		03/04/2085		00/00/0000	
धांय	04/07/2067	भ्राम	13/09/2070	भद्रि	13/12/2074	उल्क	03/04/2080	सिद्ध	14/08/2086
भ्राम	03/11/2067	भद्रि	04/04/2071	उल्क	14/10/2075	सिद्ध	03/06/2081	संक	04/03/2088
भद्रि	03/04/2068	उल्क	03/12/2071	सिद्ध	03/10/2076	संक	03/10/2082	मंग	14/05/2088
उल्क	03/10/2068	सिद्ध	13/09/2072	संक	13/11/2077	मंग	03/12/2082	पिंग	03/10/2088
सिद्ध	04/05/2069	संक	03/08/2073	मंग	02/01/2078	पिंग	04/04/2083	धांय	12/03/2089
संक	02/01/2070	मंग	13/09/2073	पिंग	14/04/2078	धांय	04/10/2083		00/00/0000
मंग	02/02/2070	पिंग	03/12/2073	धांय	13/09/2078	भ्राम	03/06/2084		00/00/0000
पिंग	04/04/2070	धांय	04/04/2074	भ्राम	04/04/2079	भद्रि	03/04/2085		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - उल्क	संक - सिद्ध	मंग - मंग	मंग - पिंग	मंग - धांय
14/05/2025	13/09/2026	03/04/2028	13/04/2028	04/05/2028
13/09/2026	03/04/2028	13/04/2028	04/05/2028	03/06/2028
उल्क 03/08/2025	सिद्ध 01/01/2027	मंग 03/04/2028	पिंग 14/04/2028	धांय 06/05/2028
सिद्ध 06/11/2025	संक 08/05/2027	पिंग 04/04/2028	धांय 16/04/2028	भ्राम 10/05/2028
संक 22/02/2026	मंग 24/05/2027	धांय 05/04/2028	भ्राम 18/04/2028	भद्रि 14/05/2028
मंग 08/03/2026	पिंग 24/06/2027	भ्राम 06/04/2028	भद्रि 21/04/2028	उल्क 19/05/2028
पिंग 04/04/2026	धांय 10/08/2027	भद्रि 07/04/2028	उल्क 25/04/2028	सिद्ध 25/05/2028
धांय 14/05/2026	भ्राम 13/10/2027	उल्क 09/04/2028	सिद्ध 29/04/2028	संक 01/06/2028
भ्राम 07/07/2026	भद्रि 30/12/2027	सिद्ध 11/04/2028	संक 03/05/2028	मंग 01/06/2028
भद्रि 13/09/2026	उल्क 03/04/2028	संक 13/04/2028	मंग 04/05/2028	पिंग 03/06/2028

मंग - भ्राम	मंग - भद्रि	मंग - उल्क	मंग - सिद्ध	मंग - संक
03/06/2028	14/07/2028	02/09/2028	02/11/2028	12/01/2029
14/07/2028	02/09/2028	02/11/2028	12/01/2029	03/04/2029
भ्राम 08/06/2028	भद्रि 21/07/2028	उल्क 13/09/2028	सिद्ध 16/11/2028	संक 30/01/2029
भद्रि 13/06/2028	उल्क 29/07/2028	सिद्ध 24/09/2028	संक 02/12/2028	मंग 02/02/2029
उल्क 20/06/2028	सिद्ध 08/08/2028	संक 08/10/2028	मंग 04/12/2028	पिंग 06/02/2029
सिद्ध 28/06/2028	संक 19/08/2028	मंग 10/10/2028	पिंग 08/12/2028	धांय 13/02/2029
संक 07/07/2028	मंग 21/08/2028	पिंग 13/10/2028	धांय 14/12/2028	भ्राम 22/02/2029
मंग 08/07/2028	पिंग 24/08/2028	धांय 18/10/2028	भ्राम 22/12/2028	भद्रि 05/03/2029
पिंग 10/07/2028	धांय 28/08/2028	भ्राम 25/10/2028	भद्रि 31/12/2028	उल्क 19/03/2029
धांय 14/07/2028	भ्राम 02/09/2028	भद्रि 02/11/2028	उल्क 12/01/2029	सिद्ध 03/04/2029

पिंग - पिंग	पिंग - धांय	पिंग - भ्राम	पिंग - भद्रि	पिंग - उल्क
03/04/2029	14/05/2029	14/07/2029	03/10/2029	13/01/2030
14/05/2029	14/07/2029	03/10/2029	13/01/2030	14/05/2030
पिंग 06/04/2029	धांय 19/05/2029	भ्राम 23/07/2029	भद्रि 17/10/2029	उल्क 02/02/2030
धांय 09/04/2029	भ्राम 26/05/2029	भद्रि 03/08/2029	उल्क 03/11/2029	सिद्ध 25/02/2030
भ्राम 14/04/2029	भद्रि 03/06/2029	उल्क 17/08/2029	सिद्ध 23/11/2029	संक 25/03/2030
भद्रि 19/04/2029	उल्क 13/06/2029	सिद्ध 01/09/2029	संक 15/12/2029	मंग 28/03/2030
उल्क 26/04/2029	सिद्ध 25/06/2029	संक 20/09/2029	मंग 18/12/2029	पिंग 04/04/2030
सिद्ध 04/05/2029	संक 09/07/2029	मंग 22/09/2029	पिंग 24/12/2029	धांय 14/04/2030
संक 13/05/2029	मंग 11/07/2029	पिंग 26/09/2029	धांय 01/01/2030	भ्राम 27/04/2030
मंग 14/05/2029	पिंग 14/07/2029	धांय 03/10/2029	भ्राम 13/01/2030	भद्रि 14/05/2030

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम	
14/05/2030		03/10/2030		15/03/2031		04/04/2031		04/07/2031	
03/10/2030		15/03/2031		04/04/2031		04/07/2031		03/11/2031	
सिद्ध	11/06/2030	संक	08/11/2030	मंग	15/03/2031	धांय	12/04/2031	भ्राम	18/07/2031
संक	12/07/2030	मंग	13/11/2030	पिंग	16/03/2031	भ्राम	22/04/2031	भद्रि	04/08/2031
मंग	16/07/2030	पिंग	22/11/2030	धांय	18/03/2031	भद्रि	04/05/2031	उल्क	24/08/2031
पिंग	24/07/2030	धांय	05/12/2030	भ्राम	20/03/2031	उल्क	20/05/2031	सिद्ध	17/09/2031
धांय	05/08/2030	भ्राम	23/12/2030	भद्रि	23/03/2031	सिद्ध	06/06/2031	संक	14/10/2031
भ्राम	21/08/2030	भद्रि	15/01/2031	उल्क	26/03/2031	संक	27/06/2031	मंग	17/10/2031
भद्रि	10/09/2030	उल्क	11/02/2031	सिद्ध	30/03/2031	मंग	29/06/2031	पिंग	24/10/2031
उल्क	03/10/2030	सिद्ध	15/03/2031	संक	04/04/2031	पिंग	04/07/2031	धांय	03/11/2031

धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग	
03/11/2031		03/04/2032		03/10/2032		04/05/2033		02/01/2034	
03/04/2032		03/10/2032		04/05/2033		02/01/2034		02/02/2034	
भद्रि	24/11/2031	उल्क	04/05/2032	सिद्ध	13/11/2032	संक	27/06/2033	मंग	03/01/2034
उल्क	20/12/2031	सिद्ध	08/06/2032	संक	31/12/2032	मंग	04/07/2033	पिंग	05/01/2034
सिद्ध	18/01/2032	संक	19/07/2032	मंग	06/01/2033	पिंग	17/07/2033	धांय	07/01/2034
संक	21/02/2032	मंग	24/07/2032	पिंग	17/01/2033	धांय	07/08/2033	भ्राम	11/01/2034
मंग	25/02/2032	पिंग	03/08/2032	धांय	04/02/2033	भ्राम	03/09/2033	भद्रि	15/01/2034
पिंग	05/03/2032	धांय	18/08/2032	भ्राम	28/02/2033	भद्रि	06/10/2033	उल्क	20/01/2034
धांय	17/03/2032	भ्राम	07/09/2032	भद्रि	29/03/2033	उल्क	16/11/2033	सिद्ध	26/01/2034
भ्राम	03/04/2032	भद्रि	03/10/2032	उल्क	04/05/2033	सिद्ध	02/01/2034	संक	02/02/2034

धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध	
02/02/2034		04/04/2034		13/09/2034		04/04/2035		03/12/2035	
04/04/2034		13/09/2034		04/04/2035		03/12/2035		13/09/2036	
पिंग	05/02/2034	भ्राम	22/04/2034	भद्रि	11/10/2034	उल्क	15/05/2035	सिद्ध	28/01/2036
धांय	10/02/2034	भद्रि	14/05/2034	उल्क	14/11/2034	सिद्ध	01/07/2035	संक	31/03/2036
भ्राम	17/02/2034	उल्क	10/06/2034	सिद्ध	23/12/2034	संक	24/08/2035	मंग	08/04/2036
भद्रि	25/02/2034	सिद्ध	12/07/2034	संक	07/02/2035	मंग	31/08/2035	पिंग	23/04/2036
उल्क	08/03/2034	संक	17/08/2034	मंग	12/02/2035	पिंग	13/09/2035	धांय	17/05/2036
सिद्ध	19/03/2034	मंग	21/08/2034	पिंग	23/02/2035	धांय	04/10/2035	भ्राम	18/06/2036
संक	02/04/2034	पिंग	30/08/2034	धांय	12/03/2035	भ्राम	31/10/2035	भद्रि	27/07/2036
मंग	04/04/2034	धांय	13/09/2034	भ्राम	04/04/2035	भद्रि	03/12/2035	उल्क	13/09/2036

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 13 वर्ष 8 मास 11 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : रोहिणी - 3 अपसव्य
देह : कुम्भ जीव : कन्या

कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
12/03/1981		22/11/1994		23/11/2003		23/11/2019		22/11/2026	
22/11/1994		23/11/2003		23/11/2019		22/11/2026		22/11/2036	
	12/03/1981	मिथु	05/11/1995	वृष	27/11/2006	मेष	20/06/2020	धनु	26/01/2028
मिथु	21/04/1981	वृष	16/07/1997	मेष	22/03/2008	धनु	17/04/2021	मक	16/07/2028
वृष	04/04/1985	मेष	13/04/1998	धनु	07/02/2010	मक	15/08/2021	कुंभ	04/01/2029
मेष	27/12/1986	धनु	05/05/1999	मक	10/11/2010	कुंभ	14/12/2021	कन्या	26/01/2030
धनु	16/06/1989	मक	06/10/1999	कुंभ	12/08/2011	कन्या	10/09/2022	सिंह	28/08/2030
मक	12/06/1990	कुंभ	09/03/2000	कन्या	21/04/2013	सिंह	08/02/2023	कर्क	16/02/2033
कुंभ	08/06/1991	कन्या	20/02/2001	सिंह	31/03/2014	कर्क	31/10/2024	मिथु	10/03/2034
कन्या	28/08/1993	सिंह	02/09/2001	कर्क	14/03/2018	मिथु	29/07/2025	वृष	26/01/2036
सिंह	22/11/1994	कर्क	23/11/2003	मिथु	23/11/2019	वृष	22/11/2026	मेष	22/11/2036

मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
22/11/2036		22/11/2040		22/11/2044		22/11/2053		22/11/2058	
22/11/2040		22/11/2044		22/11/2053		22/11/2058		00/00/0000	
मक	30/01/2037	कुंभ	30/01/2041	कन्या	05/11/2045	सिंह	10/03/2054	कर्क	30/01/2064
कुंभ	08/04/2037	कन्या	03/07/2041	सिंह	17/05/2046	कर्क	04/06/2055	मिथु	12/03/2066
कन्या	10/09/2037	सिंह	27/09/2041	कर्क	06/08/2048	मिथु	14/12/2055		00/00/0000
सिंह	05/12/2037	कर्क	23/09/2042	मिथु	21/07/2049	वृष	22/11/2056		00/00/0000
कर्क	01/12/2038	मिथु	25/02/2043	वृष	31/03/2051	मेष	21/04/2057		00/00/0000
मिथु	05/05/2039	वृष	27/11/2043	मेष	27/12/2051	धनु	22/11/2057		00/00/0000
वृष	04/02/2040	मेष	26/03/2044	धनु	17/01/2053	मक	16/02/2058		00/00/0000
मेष	03/06/2040	धनु	14/09/2044	मक	20/06/2053	कुंभ	13/05/2058		00/00/0000
धनु	22/11/2040	मक	22/11/2044	कुंभ	22/11/2053	कन्या	22/11/2058		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - वृष		धनु - धनु		धनु - मक		धनु - कुंभ		धनु - कन्या	
29/07/2025		22/11/2026		26/01/2028		16/07/2028		04/01/2029	
22/11/2026		26/01/2028		16/07/2028		04/01/2029		26/01/2030	
वृष	28/10/2025	धनु	12/01/2027	मक	03/02/2028	कुंभ	24/07/2028	कन्या	14/02/2029
मेष	06/12/2025	मक	01/02/2027	कुंभ	11/02/2028	कन्या	11/08/2028	सिंह	09/03/2029
धनु	01/02/2026	कुंभ	21/02/2027	कन्या	29/02/2028	सिंह	21/08/2028	कर्क	12/06/2029
मक	24/02/2026	कन्या	08/04/2027	सिंह	11/03/2028	कर्क	03/10/2028	मिथु	23/07/2029
कुंभ	18/03/2026	सिंह	03/05/2027	कर्क	22/04/2028	मिथु	21/10/2028	वृष	04/10/2029
कन्या	08/05/2026	कर्क	17/08/2027	मिथु	10/05/2028	वृष	22/11/2028	मेष	05/11/2029
सिंह	06/06/2026	मिथु	02/10/2027	वृष	12/06/2028	मेष	07/12/2028	धनु	20/12/2029
कर्क	02/10/2026	वृष	22/12/2027	मेष	26/06/2028	धनु	27/12/2028	मक	07/01/2030
मिथु	22/11/2026	मेष	26/01/2028	धनु	16/07/2028	मक	04/01/2029	कुंभ	26/01/2030

धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष	
26/01/2030		28/08/2030		16/02/2033		10/03/2034		26/01/2036	
28/08/2030		16/02/2033		10/03/2034		26/01/2036		22/11/2036	
सिंह	07/02/2030	कर्क	08/04/2031	मिथु	29/03/2033	वृष	17/07/2034	मेष	20/02/2036
कर्क	01/04/2030	मिथु	13/07/2031	वृष	10/06/2033	मेष	12/09/2034	धनु	26/03/2036
मिथु	24/04/2030	वृष	30/12/2031	मेष	11/07/2033	धनु	01/12/2034	मक	09/04/2036
वृष	04/06/2030	मेष	13/03/2032	धनु	26/08/2033	मक	03/01/2035	कुंभ	24/04/2036
मेष	21/06/2030	धनु	27/06/2032	मक	13/09/2033	कुंभ	04/02/2035	कन्या	25/05/2036
धनु	16/07/2030	मक	09/08/2032	कुंभ	01/10/2033	कन्या	18/04/2035	सिंह	12/06/2036
मक	27/07/2030	कुंभ	20/09/2032	कन्या	11/11/2033	सिंह	28/05/2035	कर्क	25/08/2036
कुंभ	06/08/2030	कन्या	25/12/2032	सिंह	04/12/2033	कर्क	14/11/2035	मिथु	26/09/2036
कन्या	28/08/2030	सिंह	16/02/2033	कर्क	10/03/2034	मिथु	26/01/2036	वृष	22/11/2036

मक - मक		मक - कुंभ		मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क	
22/11/2036		30/01/2037		08/04/2037		10/09/2037		05/12/2037	
30/01/2037		08/04/2037		10/09/2037		05/12/2037		01/12/2038	
मक	25/11/2036	कुंभ	02/02/2037	कन्या	25/04/2037	सिंह	15/09/2037	कर्क	04/03/2038
कुंभ	28/11/2036	कन्या	09/02/2037	सिंह	04/05/2037	कर्क	06/10/2037	मिथु	11/04/2038
कन्या	06/12/2036	सिंह	13/02/2037	कर्क	11/06/2037	मिथु	15/10/2037	वृष	18/06/2038
सिंह	10/12/2036	कर्क	02/03/2037	मिथु	27/06/2037	वृष	01/11/2037	मेष	18/07/2038
कर्क	27/12/2036	मिथु	09/03/2037	वृष	27/07/2037	मेष	08/11/2037	धनु	30/08/2038
मिथु	03/01/2037	वृष	22/03/2037	मेष	08/08/2037	धनु	18/11/2037	मक	16/09/2038
वृष	16/01/2037	मेष	28/03/2037	धनु	27/08/2037	मक	22/11/2037	कुंभ	03/10/2038
मेष	22/01/2037	धनु	05/04/2037	मक	03/09/2037	कुंभ	26/11/2037	कन्या	10/11/2038
धनु	30/01/2037	मक	08/04/2037	कुंभ	10/09/2037	कन्या	05/12/2037	सिंह	01/12/2038

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मक - मिथु		मक - वृष		मक - मेष		मक - धनु		कुंभ - कुंभ	
01/12/2038		05/05/2039		04/02/2040		03/06/2040		22/11/2040	
05/05/2039		04/02/2040		03/06/2040		22/11/2040		30/01/2041	
मिथु	17/12/2038	वृष	25/06/2039	मेष	14/02/2040	धनु	23/06/2040	कुंभ	25/11/2040
वृष	15/01/2039	मेष	18/07/2039	धनु	28/02/2040	मक	01/07/2040	कन्या	02/12/2040
मेष	28/01/2039	धनु	19/08/2039	मक	04/03/2040	कुंभ	09/07/2040	सिंह	06/12/2040
धनु	15/02/2039	मक	01/09/2039	कुंभ	10/03/2040	कन्या	28/07/2040	कर्क	23/12/2040
मक	23/02/2039	कुंभ	14/09/2039	कन्या	23/03/2040	सिंह	07/08/2040	मिथु	31/12/2040
कुंभ	02/03/2039	कन्या	13/10/2039	सिंह	30/03/2040	कर्क	18/09/2040	वृष	13/01/2041
कन्या	18/03/2039	सिंह	30/10/2039	कर्क	29/04/2040	मिथु	06/10/2040	मेष	18/01/2041
सिंह	27/03/2039	कर्क	06/01/2040	मिथु	11/05/2040	वृष	08/11/2040	धनु	26/01/2041
कर्क	05/05/2039	मिथु	04/02/2040	वृष	03/06/2040	मेष	22/11/2040	मक	30/01/2041

कुंभ - कन्या		कुंभ - सिंह		कुंभ - कर्क		कुंभ - मिथु		कुंभ - वृष	
30/01/2041		03/07/2041		27/09/2041		23/09/2042		25/02/2043	
03/07/2041		27/09/2041		23/09/2042		25/02/2043		27/11/2043	
कन्या	15/02/2041	सिंह	08/07/2041	कर्क	25/12/2041	मिथु	10/10/2042	वृष	18/04/2043
सिंह	24/02/2041	कर्क	30/07/2041	मिथु	02/02/2042	वृष	08/11/2042	मेष	10/05/2043
कर्क	03/04/2041	मिथु	08/08/2041	वृष	11/04/2042	मेष	20/11/2042	धनु	12/06/2043
मिथु	20/04/2041	वृष	24/08/2041	मेष	10/05/2042	धनु	09/12/2042	मक	25/06/2043
वृष	19/05/2041	मेष	31/08/2041	धनु	22/06/2042	मक	16/12/2042	कुंभ	08/07/2043
मेष	01/06/2041	धनु	10/09/2041	मक	09/07/2042	कुंभ	23/12/2042	कन्या	06/08/2043
धनु	19/06/2041	मक	14/09/2041	कुंभ	26/07/2042	कन्या	09/01/2043	सिंह	22/08/2043
मक	26/06/2041	कुंभ	18/09/2041	कन्या	02/09/2042	सिंह	18/01/2043	कर्क	29/10/2043
कुंभ	03/07/2041	कन्या	27/09/2041	सिंह	23/09/2042	कर्क	25/02/2043	मिथु	27/11/2043

कुंभ - मेष		कुंभ - धनु		कुंभ - मक		कन्या - कन्या		कन्या - सिंह	
27/11/2043		26/03/2044		14/09/2044		22/11/2044		05/11/2045	
26/03/2044		14/09/2044		22/11/2044		05/11/2045		17/05/2046	
मेष	07/12/2043	धनु	15/04/2044	मक	17/09/2044	कन्या	29/12/2044	सिंह	16/11/2045
धनु	21/12/2043	मक	24/04/2044	कुंभ	21/09/2044	सिंह	18/01/2045	कर्क	03/01/2046
मक	27/12/2043	कुंभ	02/05/2044	कन्या	28/09/2044	कर्क	14/04/2045	मिथु	24/01/2046
कुंभ	01/01/2044	कन्या	20/05/2044	सिंह	02/10/2044	मिथु	21/05/2045	वृष	01/03/2046
कन्या	14/01/2044	सिंह	30/05/2044	कर्क	19/10/2044	वृष	26/07/2045	मेष	17/03/2046
सिंह	21/01/2044	कर्क	11/07/2044	मिथु	26/10/2044	मेष	23/08/2045	धनु	09/04/2046
कर्क	20/02/2044	मिथु	30/07/2044	वृष	08/11/2044	धनु	03/10/2045	मक	18/04/2046
मिथु	04/03/2044	वृष	31/08/2044	मेष	14/11/2044	मक	20/10/2045	कुंभ	27/04/2046
वृष	26/03/2044	मेष	14/09/2044	धनु	22/11/2044	कुंभ	05/11/2045	कन्या	17/05/2046

चर दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 8 वर्ष 0 मास 0 दिन

मिथुन 8 वर्ष	
12/03/1981	
12/03/1989	
वृष	10/11/1981
मेष	12/07/1982
मीन	12/03/1983
कुंभ	11/11/1983
मक	11/07/1984
धनु	12/03/1985
वृश्चि	10/11/1985
तुला	12/07/1986
कन्या	12/03/1987
सिंह	11/11/1987
कर्क	11/07/1988
मिथु	12/03/1989

वृष 9 वर्ष	
12/03/1989	
12/03/1998	
मेष	11/12/1989
मीन	11/09/1990
कुंभ	12/06/1991
मक	12/03/1992
धनु	11/12/1992
वृश्चि	11/09/1993
तुला	12/06/1994
कन्या	12/03/1995
सिंह	11/12/1995
कर्क	10/09/1996
मिथु	11/06/1997
वृष	12/03/1998

मेष 11 वर्ष	
12/03/1998	
12/03/2009	
वृष	10/02/1999
मिथु	11/01/2000
कर्क	11/12/2000
सिंह	10/11/2001
कन्या	11/10/2002
तुला	11/09/2003
वृश्चि	11/08/2004
धनु	12/07/2005
मक	12/06/2006
कुंभ	12/05/2007
मीन	11/04/2008
मेष	12/03/2009

मीन 6 वर्ष	
12/03/2009	
12/03/2015	
मेष	11/09/2009
वृष	12/03/2010
मिथु	11/09/2010
कर्क	12/03/2011
सिंह	11/09/2011
कन्या	12/03/2012
तुला	10/09/2012
वृश्चि	12/03/2013
धनु	11/09/2013
मक	12/03/2014
कुंभ	11/09/2014
मीन	12/03/2015

कुम्भ 5 वर्ष	
12/03/2015	
12/03/2020	
मीन	12/08/2015
मेष	11/01/2016
वृष	11/06/2016
मिथु	10/11/2016
कर्क	11/04/2017
सिंह	11/09/2017
कन्या	10/02/2018
तुला	12/07/2018
वृश्चि	11/12/2018
धनु	12/05/2019
मक	12/10/2019
कुंभ	12/03/2020

मकर 4 वर्ष	
12/03/2020	
12/03/2024	
धनु	11/07/2020
वृश्चि	10/11/2020
तुला	12/03/2021
कन्या	12/07/2021
सिंह	10/11/2021
कर्क	12/03/2022
मिथु	12/07/2022
वृष	11/11/2022
मेष	12/03/2023
मीन	12/07/2023
कुंभ	11/11/2023
मक	12/03/2024

धनु 9 वर्ष	
12/03/2024	
12/03/2033	
वृश्चि	11/12/2024
तुला	11/09/2025
कन्या	12/06/2026
सिंह	12/03/2027
कर्क	11/12/2027
मिथु	10/09/2028
वृष	11/06/2029
मेष	12/03/2030
मीन	11/12/2030
कुंभ	11/09/2031
मक	11/06/2032
धनु	12/03/2033

वृश्चिक 2 वर्ष	
12/03/2033	
12/03/2035	
तुला	12/05/2033
कन्या	12/07/2033
सिंह	11/09/2033
कर्क	10/11/2033
मिथु	10/01/2034
वृष	12/03/2034
मेष	12/05/2034
मीन	12/07/2034
कुंभ	11/09/2034
मक	11/11/2034
धनु	11/01/2035
वृश्चि	12/03/2035

तुला 4 वर्ष	
12/03/2035	
12/03/2039	
वृश्चि	12/07/2035
धनु	11/11/2035
मक	12/03/2036
कुंभ	11/07/2036
मीन	10/11/2036
मेष	12/03/2037
वृष	12/07/2037
मिथु	10/11/2037
कर्क	12/03/2038
सिंह	12/07/2038
कन्या	11/11/2038
तुला	12/03/2039

कन्या 7 वर्ष	
12/03/2039	
12/03/2046	
तुला	12/10/2039
वृश्चि	12/05/2040
धनु	11/12/2040
मक	12/07/2041
कुंभ	10/02/2042
मीन	11/09/2042
मेष	12/04/2043
वृष	11/11/2043
मिथु	11/06/2044
कर्क	10/01/2045
सिंह	11/08/2045
कन्या	12/03/2046

सिंह 6 वर्ष	
12/03/2046	
12/03/2052	
कन्या	11/09/2046
तुला	12/03/2047
वृश्चि	11/09/2047
धनु	12/03/2048
मक	10/09/2048
कुंभ	12/03/2049
मीन	11/09/2049
मेष	12/03/2050
वृष	11/09/2050
मिथु	12/03/2051
कर्क	11/09/2051
सिंह	12/03/2052

कर्क 2 वर्ष	
12/03/2052	
12/03/2054	
मिथु	12/05/2052
वृष	11/07/2052
मेष	10/09/2052
मीन	10/11/2052
कुंभ	10/01/2053
मक	12/03/2053
धनु	12/05/2053
वृश्चि	12/07/2053
तुला	11/09/2053
कन्या	10/11/2053
सिंह	10/01/2054
कर्क	12/03/2054

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

धनु - कन्या		धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष	
11/09/2025		12/06/2026		12/03/2027		11/12/2027		10/09/2028	
12/06/2026		12/03/2027		11/12/2027		10/09/2028		11/06/2029	
तुला	03/10/2025	कन्या	04/07/2026	मिथु	04/04/2027	वृष	03/01/2028	मेष	03/10/2028
वृश्चि	26/10/2025	तुला	27/07/2026	वृष	27/04/2027	मेष	26/01/2028	मीन	26/10/2028
धनु	18/11/2025	वृश्चि	19/08/2026	मेष	20/05/2027	मीन	18/02/2028	कुंभ	18/11/2028
मक	11/12/2025	धनु	11/09/2026	मीन	12/06/2027	कुंभ	12/03/2028	मक	11/12/2028
कुंभ	03/01/2026	मक	04/10/2026	कुंभ	05/07/2027	मक	04/04/2028	धनु	03/01/2029
मीन	26/01/2026	कुंभ	27/10/2026	मक	27/07/2027	धनु	26/04/2028	वृश्चि	25/01/2029
मेष	17/02/2026	मीन	18/11/2026	धनु	19/08/2027	वृश्चि	19/05/2028	तुला	17/02/2029
वृष	12/03/2026	मेष	11/12/2026	वृश्चि	11/09/2027	तुला	11/06/2028	कन्या	12/03/2029
मिथु	04/04/2026	वृष	03/01/2027	तुला	04/10/2027	कन्या	04/07/2028	सिंह	04/04/2029
कर्क	27/04/2026	मिथु	26/01/2027	कन्या	27/10/2027	सिंह	27/07/2028	कर्क	27/04/2029
सिंह	20/05/2026	कर्क	18/02/2027	सिंह	19/11/2027	कर्क	19/08/2028	मिथु	19/05/2029
कन्या	12/06/2026	सिंह	12/03/2027	कर्क	11/12/2027	मिथु	10/09/2028	वृष	11/06/2029

धनु - मेष		धनु - मीन		धनु - कुंभ		धनु - मक		धनु - धनु	
11/06/2029		12/03/2030		11/12/2030		11/09/2031		11/06/2032	
12/03/2030		11/12/2030		11/09/2031		11/06/2032		12/03/2033	
वृष	04/07/2029	मेष	04/04/2030	मीन	03/01/2031	धनु	04/10/2031	वृश्चि	04/07/2032
मिथु	27/07/2029	वृष	27/04/2030	मेष	26/01/2031	वृश्चि	27/10/2031	तुला	27/07/2032
कर्क	19/08/2029	मिथु	20/05/2030	वृष	18/02/2031	तुला	19/11/2031	कन्या	19/08/2032
सिंह	11/09/2029	कर्क	12/06/2030	मिथु	12/03/2031	कन्या	11/12/2031	सिंह	10/09/2032
कन्या	03/10/2029	सिंह	04/07/2030	कर्क	04/04/2031	सिंह	03/01/2032	कर्क	03/10/2032
तुला	26/10/2029	कन्या	27/07/2030	सिंह	27/04/2031	कर्क	26/01/2032	मिथु	26/10/2032
वृश्चि	18/11/2029	तुला	19/08/2030	कन्या	20/05/2031	मिथु	18/02/2032	वृष	18/11/2032
धनु	11/12/2029	वृश्चि	11/09/2030	तुला	12/06/2031	वृष	12/03/2032	मेष	11/12/2032
मक	03/01/2030	धनु	04/10/2030	वृश्चि	05/07/2031	मेष	04/04/2032	मीन	03/01/2033
कुंभ	26/01/2030	मक	27/10/2030	धनु	27/07/2031	मीन	26/04/2032	कुंभ	25/01/2033
मीन	17/02/2030	कुंभ	18/11/2030	मक	19/08/2031	कुंभ	19/05/2032	मक	17/02/2033
मेष	12/03/2030	मीन	11/12/2030	कुंभ	11/09/2031	मक	11/06/2032	धनु	12/03/2033

वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - मिथु	
12/03/2033		12/05/2033		12/07/2033		11/09/2033		10/11/2033	
12/05/2033		12/07/2033		11/09/2033		10/11/2033		10/01/2034	
वृश्चि	17/03/2033	तुला	17/05/2033	कन्या	17/07/2033	मिथु	16/09/2033	वृष	16/11/2033
धनु	22/03/2033	वृश्चि	22/05/2033	तुला	22/07/2033	वृष	21/09/2033	मेष	21/11/2033
मक	27/03/2033	धनु	27/05/2033	वृश्चि	27/07/2033	मेष	26/09/2033	मीन	26/11/2033
कुंभ	01/04/2033	मक	01/06/2033	धनु	01/08/2033	मीन	01/10/2033	कुंभ	01/12/2033
मीन	06/04/2033	कुंभ	06/06/2033	मक	06/08/2033	कुंभ	06/10/2033	मक	06/12/2033
मेष	11/04/2033	मीन	11/06/2033	कुंभ	11/08/2033	मक	11/10/2033	धनु	11/12/2033
वृष	17/04/2033	मेष	16/06/2033	मीन	16/08/2033	धनु	16/10/2033	वृश्चि	16/12/2033
मिथु	22/04/2033	वृष	21/06/2033	मेष	21/08/2033	वृश्चि	21/10/2033	तुला	21/12/2033
कर्क	27/04/2033	मिथु	27/06/2033	वृष	26/08/2033	तुला	26/10/2033	कन्या	26/12/2033
सिंह	02/05/2033	कर्क	02/07/2033	मिथु	31/08/2033	कन्या	31/10/2033	सिंह	31/12/2033
कन्या	07/05/2033	सिंह	07/07/2033	कर्क	06/09/2033	सिंह	05/11/2033	कर्क	05/01/2034
तुला	12/05/2033	कन्या	12/07/2033	सिंह	11/09/2033	कर्क	10/11/2033	मिथु	10/01/2034

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ		वृश्चि - मक	
10/01/2034		12/03/2034		12/05/2034		12/07/2034		11/09/2034	
12/03/2034		12/05/2034		12/07/2034		11/09/2034		11/11/2034	
मेष	15/01/2034	वृष	17/03/2034	मेष	17/05/2034	मीन	17/07/2034	धनु	16/09/2034
मीन	21/01/2034	मिथु	22/03/2034	वृष	22/05/2034	मेष	22/07/2034	वृश्चि	21/09/2034
कुंभ	26/01/2034	कर्क	27/03/2034	मिथु	27/05/2034	वृष	27/07/2034	तुला	26/09/2034
मक	31/01/2034	सिंह	02/04/2034	कर्क	01/06/2034	मिथु	01/08/2034	कन्या	01/10/2034
धनु	05/02/2034	कन्या	07/04/2034	सिंह	06/06/2034	कर्क	06/08/2034	सिंह	06/10/2034
वृश्चि	10/02/2034	तुला	12/04/2034	कन्या	12/06/2034	सिंह	11/08/2034	कर्क	11/10/2034
तुला	15/02/2034	वृश्चि	17/04/2034	तुला	17/06/2034	कन्या	17/08/2034	मिथु	16/10/2034
कन्या	20/02/2034	धनु	22/04/2034	वृश्चि	22/06/2034	तुला	22/08/2034	वृष	21/10/2034
सिंह	25/02/2034	मक	27/04/2034	धनु	27/06/2034	वृश्चि	27/08/2034	मेष	27/10/2034
कर्क	02/03/2034	कुंभ	02/05/2034	मक	02/07/2034	धनु	01/09/2034	मीन	01/11/2034
मिथु	07/03/2034	मीन	07/05/2034	कुंभ	07/07/2034	मक	06/09/2034	कुंभ	06/11/2034
वृष	12/03/2034	मेष	12/05/2034	मीन	12/07/2034	कुंभ	11/09/2034	मक	11/11/2034

वृश्चि - धनु		वृश्चि - वृश्चि		तुला - वृश्चि		तुला - धनु		तुला - मक	
11/11/2034		11/01/2035		12/03/2035		12/07/2035		11/11/2035	
11/01/2035		12/03/2035		12/07/2035		11/11/2035		12/03/2036	
वृश्चि	16/11/2034	तुला	16/01/2035	तुला	23/03/2035	वृश्चि	22/07/2035	धनु	21/11/2035
तुला	21/11/2034	कन्या	21/01/2035	कन्या	02/04/2035	तुला	02/08/2035	वृश्चि	01/12/2035
कन्या	26/11/2034	सिंह	26/01/2035	सिंह	12/04/2035	कन्या	12/08/2035	तुला	11/12/2035
सिंह	01/12/2034	कर्क	31/01/2035	कर्क	22/04/2035	सिंह	22/08/2035	कन्या	22/12/2035
कर्क	06/12/2034	मिथु	05/02/2035	मिथु	02/05/2035	कर्क	01/09/2035	सिंह	01/01/2036
मिथु	11/12/2034	वृष	10/02/2035	वृष	12/05/2035	मिथु	11/09/2035	कर्क	11/01/2036
वृष	16/12/2034	मेष	15/02/2035	मेष	23/05/2035	वृष	21/09/2035	मिथु	21/01/2036
मेष	21/12/2034	मीन	20/02/2035	मीन	02/06/2035	मेष	01/10/2035	वृष	31/01/2036
मीन	26/12/2034	कुंभ	25/02/2035	कुंभ	12/06/2035	मीन	12/10/2035	मेष	10/02/2036
कुंभ	31/12/2034	मक	02/03/2035	मक	22/06/2035	कुंभ	22/10/2035	मीन	20/02/2036
मक	06/01/2035	धनु	07/03/2035	धनु	02/07/2035	मक	01/11/2035	कुंभ	02/03/2036
धनु	11/01/2035	वृश्चि	12/03/2035	वृश्चि	12/07/2035	धनु	11/11/2035	मक	12/03/2036

तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु	
12/03/2036		11/07/2036		10/11/2036		12/03/2037		12/07/2037	
11/07/2036		10/11/2036		12/03/2037		12/07/2037		10/11/2037	
मीन	22/03/2036	मेष	22/07/2036	वृष	20/11/2036	मेष	22/03/2037	वृष	22/07/2037
मेष	01/04/2036	वृष	01/08/2036	मिथु	01/12/2036	मीन	01/04/2037	मेष	01/08/2037
वृष	11/04/2036	मिथु	11/08/2036	कर्क	11/12/2036	कुंभ	11/04/2037	मीन	11/08/2037
मिथु	21/04/2036	कर्क	21/08/2036	सिंह	21/12/2036	मक	22/04/2037	कुंभ	21/08/2037
कर्क	01/05/2036	सिंह	31/08/2036	कन्या	31/12/2036	धनु	02/05/2037	मक	31/08/2037
सिंह	12/05/2036	कन्या	10/09/2036	तुला	10/01/2037	वृश्चि	12/05/2037	धनु	11/09/2037
कन्या	22/05/2036	तुला	21/09/2036	वृश्चि	20/01/2037	तुला	22/05/2037	वृश्चि	21/09/2037
तुला	01/06/2036	वृश्चि	01/10/2036	धनु	30/01/2037	कन्या	01/06/2037	तुला	01/10/2037
वृश्चि	11/06/2036	धनु	11/10/2036	मक	10/02/2037	सिंह	11/06/2037	कन्या	11/10/2037
धनु	21/06/2036	मक	21/10/2036	कुंभ	20/02/2037	कर्क	21/06/2037	सिंह	21/10/2037
मक	01/07/2036	कुंभ	31/10/2036	मीन	02/03/2037	मिथु	02/07/2037	कर्क	31/10/2037
कुंभ	11/07/2036	मीन	10/11/2036	मेष	12/03/2037	वृष	12/07/2037	मिथु	10/11/2037

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	78%	भाग्योदय, कम खर्च, सन्तति सुख
नीलम	शनि	70%	सुख, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	61%	भाग्योदय, पराक्रम
पुखराज	गुरु	58%	सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	47%	व्यय, धन हानि
मूंगा	मंगल	38%	व्यावसायिक हानि, हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	34%	धन हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	28%	दुर्घटना, ग्रह कलेश

रत्न की शुभता

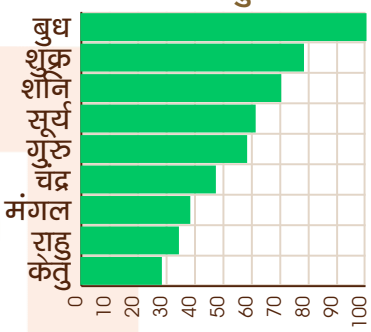

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	26/07/1985	67%	61%	38%	100%	58%	78%	70%	9%	3%
मंगल	26/07/1992	67%	55%	56%	97%	64%	78%	70%	9%	41%
राहु	27/07/2010	47%	22%	12%	100%	58%	84%	77%	55%	3%
गुरु	27/07/2026	67%	55%	50%	97%	70%	66%	70%	34%	28%
शनि	26/07/2045	47%	22%	12%	100%	58%	84%	83%	47%	3%
बुध	27/07/2062	67%	22%	38%	100%	58%	84%	70%	34%	28%
केतु	26/07/2069	47%	22%	50%	100%	58%	84%	58%	9%	52%
शुक्र	26/07/2089	47%	22%	38%	100%	58%	91%	77%	47%	41%
सूर्य	27/07/2095	73%	55%	50%	100%	64%	66%	58%	9%	3%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, माणिक्य एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती, मूंगा, गोमेद व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और

धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्ज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते है। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने में सफल हो सकते है। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नवमेश शनि का रत्न नीलम धारण कर आप अपने भाग्य में वृद्धि कर सकते है। नीलम रत्न आपको माता-पिता का सुख प्रदान करेगा। रत्न शुभता से आपको भूमि व संपति से लाभ दे सकता है। शनि रत्न नीलम अष्टमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न को धारण कर आप अप्रत्याशित लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपको शत्रुओं पर हावी रख सकता है। यह रत्न आपको भाग्यवान बना सकता है। यह रत्न आपको शारीरिक कष्टों से बचा सकता है। साथ ही यह रत्न आपके शारीरिक बल में भी वृद्धि कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यो में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेंगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। पराक्रमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से अपने अधिकारिक शक्तियों में बढ़ोतरी कर सकते है। माणिक्य रत्न धारण बाहुबल द्वारा धन व परिवार में वृद्धि, भाई-बहनों से सुख प्राप्त करा सकता है। माणिक्य की शुभता आपको धनी, साहसी, प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्रदान कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप यात्राओं में सुख का अनुभव करेंगे। सूर्य की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण से आप बुद्धिमानी से संपति की प्राप्ति करेंगे। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा। यह रत्न आपको महत्वाकांक्षी और शुभकर्म करने वाला बनायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आप यशस्वी और अपने समाज के माननीय व्यक्तियों में गिने जायेंगे। पुखराज आपको उद्यमी कार्यरत और उद्योगी बनायेगा। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। आपको राजकीय या सरकार द्वारा प्रदत्त घर की प्राप्ति होगी। आप गुरु भक्ति को महत्व देंगे। माता का सुख-स्नेह मिलेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंड़ली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आप पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज रत्न धारण करने से आपके

जीवन के सुखों में बढ़ोतरी हो सकती है। यह रत्न आपको स्वाभिमानी, उच्च मनोबल, पिता सुख, कार्यक्षेत्र में लाभ दे सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण पुखराज आपका दांपत्य जीवन सुखी, भाग्य वृद्धि व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दे सकता है। गुरु रत्न की शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में पद और धन दोनों की प्राप्ति हो सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र की अशुभता प्राप्ति से बचाव के लिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना सही नहीं होगा। यह रत्न आपको यात्राप्रिय बना सकता है। पर्यटन का शौक आपको वन, पर्वत तथा दर्शनीय स्थलों पर विचरण करने की प्रवृति दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी परोपकार भावना में आंशिक रूप से कमी हो सकती है। यह रत्न आपको कलाहीन बना सकता है। मोती रत्न आपके मन में अस्थिरता का भाव ला सकता है। यह रत्न आपको विनयरहित बना सकता है। आप प्रवासी और बंधुशत्रु हो सकते है। मोती रत्न धारण करने पर आप को सात्विक भोजन की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न कुटुंब स्नेह में भी उतार-चड़ाव ला सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, सैनिक, हथियार से जुड़े काम या विभागों से जुड़े कामों में कार्यरत होना आपको कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपके सुख एवं यश को बाधित कर सकता है। आपमें नेतृत्व शक्ति की कमी आपकी सफलता को प्रभावित कर सकती है। मूंगा रत्न आपमें अत्यधिक जोश, साहस, ऊर्जा और उत्तेजना भाव को बढ़ाकर आपके द्वारा वादर्-ववाद उत्पन्न करा सकता है। मूंगा रत्न से कार्यक्षेत्र में आपको लड़ाई झगड़ों की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। साहस की अधिकता व्यवसायिक क्षेत्र में आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में धन विनियोजन करा हानि दे सकती है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छठे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते है। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता हैं. मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू का गोमेद रत्न धारण करने पर आप धन संचय के लिए असत्य वचन कह सकते है। आपके पारिवारिक कार्यो में अस्थिरता रहेगी। रत्न धारण से धनार्जन करना भी आपके लिए कष्टकारी रहेगा। घर में बने भोजन से अधिक आपको फास्ट फूड अधिक रुचिकर लग सकता है। संतान कम संख्या में हो सकती है। आपके कामों में अक्सर रुकावटें आ सकती हैं। आप असत्य बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आपको आदत हो सकती है। रत्न प्रभाव से वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। रत्न प्रभाव से किसी अखाद्य य अपेय का सेवन आपके द्वारा हो सकता हैं। आपके द्वारा पैतृक सम्पदा का विनाश हो सकता हैं। पैसों का दुरुपयोग हो सकता हैं। आप कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ

अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आपकी माता को स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं का सामना करना पड़ेगा। अत्यधिक भावुक प्रवृत्ति के कारण आपमें व्यवहार कुशलता की कमी होगी। यह रत्न आपको मानसिक चिन्ताओं से युक्त करेगा। आपके घर में अशांति का माहौल उत्पन्न हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर शिक्षा कार्यों में रुचि की कमी होगी। आपको अधिकतर समय घर से दूर रहना पड़ सकता है तथा यह रत्न आपके लिए प्रतिकूल रत्न होने के कारण आपकी भूमि एवं भवन योजनाएं मन्द गति से पूर्ण होंगी। धोखा देकर अपना कार्य निकालने का स्वभाव यह रत्न आपको देगा।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(27/07/2010 - 27/07/2026)

गुरु की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, माणिक्य, हीरा, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(27/07/2026 - 26/07/2045)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से

उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(26/07/2045 - 27/07/2062)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, माणिक्य व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, गोमेद व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(27/07/2062 - 26/07/2069)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(26/07/2069 - 26/07/2089)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, गोमेद, लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(26/07/2089 - 27/07/2095)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, हीरा, पुखराज, नीलम, मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

चन्द्र - 26/07/1985

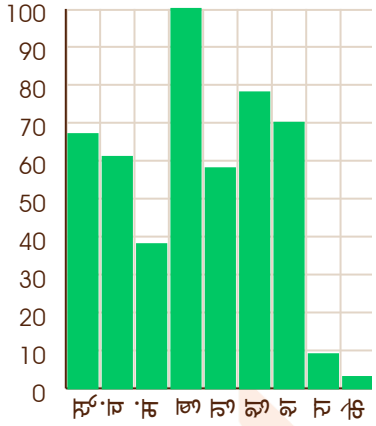

मंगल - 26/07/1992

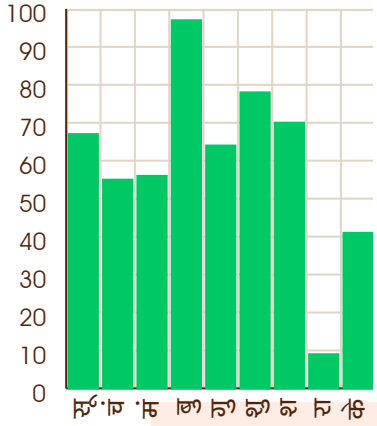

राहु - 27/07/2010

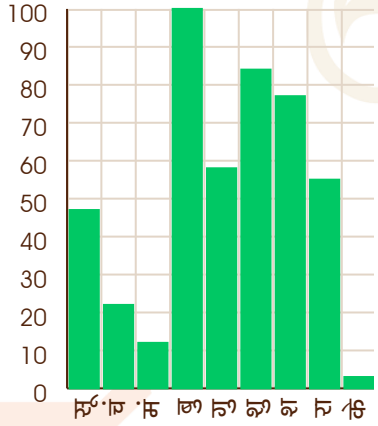

गुरु - 27/07/2026

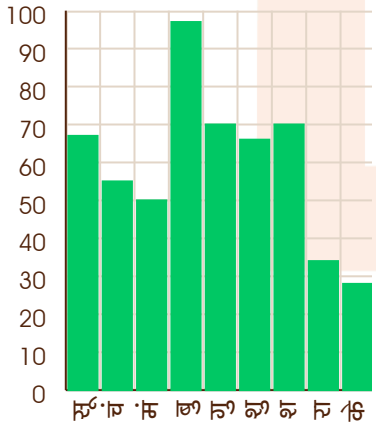

शनि - 26/07/2045

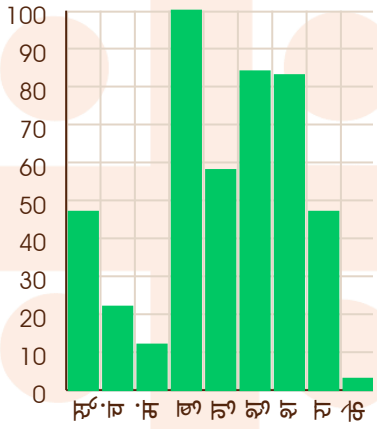

बुध - 27/07/2062

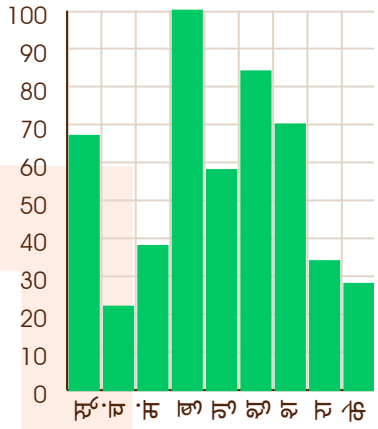

केतु - 26/07/2069

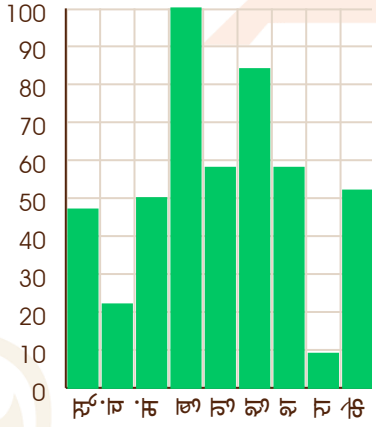

शुक्र - 26/07/2089

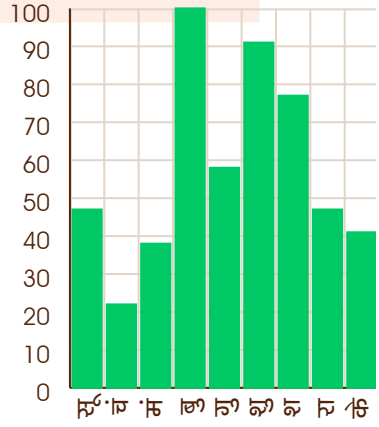

सूर्य - 27/07/2095

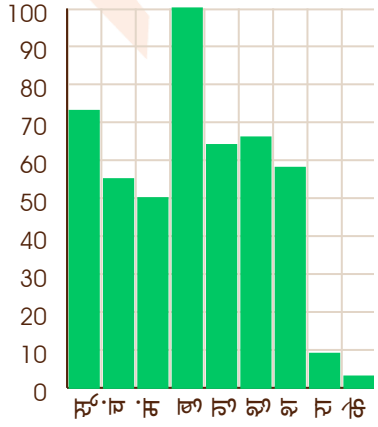

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - पन्ना

आपका जन्म मिथुन राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी बुध होता है। बुध सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह सूर्य के सबसे अधिक नजदीक है और सूर्य ग्रहों का राजा होता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मिथुन राशि के लग्न वाले जातकों को मिथुन राशि के स्वामी ग्रह बुध को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। बुध ग्रह के लिये पन्ना रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी बुध राजकुमार व व्यापार का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा व्यापार में आशातीत लाभ व विद्यार्थियों को बुद्धिबल प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को बड़ी बहन, बुआ और मौसी का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। बुध ग्रह वाणी एवं बुद्धि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको वाणी दोष या आत्मविश्वास से संबंधित परेशानी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा बुद्धि बल की प्राप्ति होती है जिससे विद्यार्थीगण अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है । पन्ना रत्न बुध का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात बुधवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल बुध की होरा में श्रेष्ठ होता है। बुधवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय बुध की होरा का होता है। पन्ना को यदि बुधवार के साथ-साथ बुध के नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

पन्ना को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर हरे रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

बुध का मंत्र - ऊँ बुं बुधाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि बुध से संबंधित पदार्थ जैसे मूंग दाल, पीतल,

सवा मीटर हरे कपड़े का दान करें तो पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन बुध का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और हिजड़ों को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह पन्ना रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक बुधवार को गणेश जी की उपासना करें तथा गणेश जी को मोदक का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मिथुन लग्न वाले जातक यदि पन्ना रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मिथुन लग्न की हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं आपका मस्तिष्क सदैव विचारमान व गतिमान रहता है इसलिए हर समय कुछ न कुछ आपके मस्तिष्क में चलता रहता है। लग्न स्वामी बुध होने की वजह से कठिन से कठिन काम को भी आप अपनी बुद्धि कौशल से आसान बना लेते हैं। द्विस्वभाव लग्न होने से आपके स्वभाव में भी दोहरापन (वास्तव में लचीलापन) होता है। समय के अनुसार अपने व्यवहार को बदल लेना अथवा हर परिस्थिति में स्वयं को ढाल लेना, वातावरण को अपने अनुसार ढाल लेना या स्वयं वातावरण के अनुसार ढल जाना आपके स्वभाव की विशेषता होती है। आपका व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है। हर चीज को सीखने एवं पाने की ललक आप मे रहती है। आप खाली नहीं बैठ सकते हैं। हर

समय व्यस्त रहना कुछ नया करने की इच्छा आपमें रहती है। आपका हँसमुख स्वभाव आपको हर जगह लोकप्रिय बनाता है।

6, 8, व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

मिथुन लग्न में छठे भाव व एकादश भाव के स्वामी मंगल हैं। आप अपने साहस का उपयोग अनैतिक कार्यो के लिए कर सकते हैं, मिथ्या वचन बोलने से भी आप बचे, तथा युद्ध अथवा लड़ाई हेतु सदैव तत्पर हो सकते हैं। शत्रुओन पर विजय प्राप्ति सहज हो जाती हैं। अपने बड़े भाई-बहनों से वैर-भाव रखने वाले हो सकते हैं। विष, अग्नि, शास्त्र सेपीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम व नवम भाव के स्वामी शनि हैं। अष्टम भाव के स्वामी शनि के प्रभाव से आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी, भाग्यवृद्धि में बाधक, अधिनस्थों की ओर से सहयोग मेंकमी, लम्बी अवधि के रोग, ऋण आपके कायी में व्यर्थ का विलम्ब कर सकते हैं। इस योग की अशुभता से रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन संग्रह में बाधा का सामना करना पड़ सकता है।

पंचम भाव और द्वादश भाव के स्वामी शुक्र हैं। शुक्र पंचमेश व द्वादशेश होकर आपके वैवाहिक सुखों में कमी का कारण बन सकता हैं। इसके अतिरिक्त शुक्र व्यय, हानि, दंड व अलगाव दे सकता हैं।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव में है। यह भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे। अपने कार्य क्षेत्र में सर्वदा उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर किसी उच्च प्रशासनिक पद इंजीनियरिंग, मेडिकल या होटल आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीय पुरुष समझें जाएंगे । आप अपने कार्यों के द्वारा विशिष्ट सम्मान एवं ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आपको वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी उनकी आज्ञा का अनुपालन करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप परिश्रम एवं उत्साह से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे तथा आनन्द पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे परन्तु माता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप उनको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा साथ ही संतति की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी बुद्धि में भी यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान रहेगा लेकिन आप अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको न्यूनाधिक सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक प्रभावी व्यक्ति होंगे। जीवन में

धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगे जिससे परिवार में शान्ति तथा सन्तुष्टि रहेगी। इसके अतिरिक्त सभी लोग आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 12 है। एक एवं दो के जोड़ से तीन आपका मूलांक हुआ। एक का स्वामी सूर्य दो का चन्द्र तथा तीन का गुरु है। मुख्य प्रभाव मूलांक तीन के स्वामी गुरु का आपके जीवन पर पड़ेगा। थोड़ा-बहुत प्रभाव सूर्य एवं चन्द्र का रहेगा। इन सभी ग्रहों के सम्मिलित प्रभाववश आप एक बुद्धिशील, विद्वान व्यक्ति होंगे। सूर्य प्रभाव से दृढ़शीलता, प्रखरता आयेगी। चन्द्र प्रभाव मानसिक कल्पना शीलता में वृद्धि करेगा एवं गुरु प्रभाव से आध्यात्मिकता, विद्या, लेखन-पठन के गुण आपके अन्दर आयेंगे।

आप अपने जीवन में एक सन्तुलित व्यक्ति रहेंगे एवं ऐसे ही कार्यों को करना पसन्द करेंगे, जिनमें मेहनत, ईमानदारी से लाभ हो। आपके इस गुण का विरोधी फायदा उठायेंगे और ईर्ष्यावश आपको प्रताड़ित करने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप अपने दृढ़शीलता के व्यवहार से परास्त करने में सक्षम रहेंगे।

आपको ऐसे कार्यों में लाभ रहेगा, जहाँ बुद्धि का प्रयोग अधिक होता है। ज्ञान-विज्ञान इत्यादि के क्षेत्रों में भी आपकी रुचि रहेगी एवं भाषण, लेखन, वक्तव्य कला आदि में निपुण रहेंगे। बचपन एवं जवानी की अपेक्षा वृद्धावस्था में आपके ज्ञान का लाभ दूसरों को प्राप्त होगा।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 3 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 3 के स्वामी गुरु तथा भाग्यांक 7 के स्वामी नेपच्यून के संयुक्त प्रभाववश रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपको अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आप ऐसे कार्यक्षेत्र का चुनाव कर सकते हैं, जिसमें अधिकतर यात्राएं होती रहें। यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा एवं दूर के देश, व्यक्तियों से अधिक सहायता मिलती रहेगी। आप परिवर्तन के हिमायती होने से बार-बार रोजगार-व्यापार बदलेंगे या उनमें अधिक परिवर्तन करते रहेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति लड़खड़ाएगी एवं धन का अपव्यय भी होगा, जिसके लिए आपको बाद में पछताना भी पड़ेगा। आपकी कल्पना शक्ति बौद्धिक स्तर की रहेगी एवं आप धर्म-कर्म को नये रूप में मान्यता प्रदान करेंगे। आपका रुढ़ियों पर विशेष विश्वास नहीं रहेगा तथा उनमें यदाकदा परिवर्तन करते रहेंगे। आपकी

सामाजिक स्थिति मध्यम दर्जे की रहेगी, लेकिन आपका नाम विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुखता प्राप्त करेगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 34 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी। 43 वें वर्ष कि अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहेंगी। अतः यदि आप उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करती हैं तो शीघ्र सफलता मिलेगी।

अशुभ तारीखें

आपको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न करना आपके लिए अहितकर रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति आपके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से आपकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आपको विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3,6 या 9 हो अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की

3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां आपके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः आप ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी आप हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः आप शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरा, पीला, सुनहरी रंगों के होने से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि आप दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो आपके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

शुभ वाहन नं

अगर आप यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो आपको चाहिए की कमरे का नंबर आपके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल करने वाले अंकों का रहे। आपका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। आपके कमरे का नंबर 102= 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि आप वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 =3 रहेंगे। आपके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो आपकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग अशुभता कष्ट और विपत्ति के समय आपको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय

वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैंन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरु मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

पुखराज आपके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब आप सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे आप सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र "ओम् नमो भगवते वासुदेवाय" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

गुरु गायत्री मंत्र - ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ आठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु गुरु यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर मिथुन लग्न के साथ-साथ धनु का नवमांश एवं मिथुन राशि का ही द्रेष्काण भी उदित हो रहा था। मिथुन लग्न की आकृति के फलस्वरूप यह प्रभाव स्पष्ट है कि आपका जीवन पूर्ण रूपेण उत्थान-पतन से युक्त तथा बार-बार उत्थान पतन का कारक भी है। यदि आप सतर्क नही रहे तो सदैव ही उच्चता एवं नीचता का वातावरण बनता रहेगा तथा आपको अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए तथा विपत्ति अर्थात् दीनता से संघर्ष करने की सभी संभावनाएं क्षीण हो जाएगी। आपको अपने प्रारंभिक जीवन की शुरूआत के साथ ही सतर्कता पूर्वक संबंधित व्यवधानों की रोकथाम की प्रक्रिया भी प्रारंभ करना होगा। लग्न नवमांश के प्रभाव से आपके जीवन में उत्तमता हेतु आशा किरण का उदय आपकी आयु के पचीसवें वर्ष में दृष्टिगत होता है। आप अपनी हठधर्मिता को त्याग कर धैर्य पूर्वक समय की प्रतीक्षा करें। वास्तव में व्यक्तिगत रूप से आपकी कुशाग्रता और आपको अपने आत्मज्ञान के माध्यम से जीवन की दूरी तय करनी चाहिए। यदि आप अपने किसी भी एक चयनित रास्ते पर साहस और एकाग्रता पूर्वक चलते रहे तों सर्वोच्च पद पर पहुंचेगे। आपके लिए पत्रकारिता, लेखन कला, साथ ही कलात्मक कार्य व्यवसाय से आप लाभ प्राप्त करेंगे।

परंतु आपकी ऐसी आदत है कि आप अनिश्चित बाधाओं के प्रति बहुधा सशंकित रहते हैं तथा प्रायः अनिश्चित स्थिति में अर्थात् दुविधापूर्ण वातावरण से आप घिर जाते हैं। आप एक लुढकते हुए पत्थर के समान अपना आचरण रख कर, निश्चित लाभांश प्राप्त करने में असफल रह जाते हैं। आपकी अनुदारता के कारण आपकी चाह रहती है कि संक्षिप्त प्रकार से निर्दिष्ट विषय पर पॉलिस करके मानक विधान को स्वीकार कर, विजय श्री प्राप्त करें।

आप भाग्य की कृपा से किसी एक कार्य को संपादित कर अन्य कार्य का उत्तरदायित्व ग्रहण कर सकते हैं। परंतु आप में एकाग्रता का अभाव विद्यमान है। दिक्कत यह है कि आप इस अभाव को केंद्रीकरण करने के पश्चात् ही किसी भी उत्तरदायीत्व को ग्रहण कर बिना कार्य पूर्ण किए ही अन्य कार्यों को संपादन करने का अवसर अपने हाथ में ले लेते हैं।

अति महत्वाकांक्षा के प्रभाव से आप ऐसा कार्य संचालित कर लेते हैं। क्योंकि आप चमत्कारिक ढंग से धन प्राप्त कर धनी बन जाना चाहते हैं। आपको अपनी आय बढ़ाने की पवृत्ति ऐसी है कि आप यदा-कदा एक ही साथ दो स्थानों पर एक ही समय कोई कार्य प्रारंभ कर, लाभ उपार्जित करने का प्रयास करते हैं। परंतु यह आकस्मिक स्थिति मात्र कुछ समय तक ही प्रभावित रहती है।

आपकी दूसरी समस्या यह है कि आप जन सामान्य के साथ तथा इनके द्वारा लोकप्रियता प्राप्त करते हैं। इस प्रकार आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाते। आपको एकाग्रतापूर्वक अपने मित्र मंडली में बदलाव लाना होगा। ये लोग आपको सामान्य तरंगित भावनाओं को समझ पाना दुष्कर समझते हैं। अर्थात आप कैसे व्यक्ति हो उनके लिए समझ पाना उतना आसान नही हैं। आप में यह रहस्यमयी शक्ति विद्यमान है कि आप अन्य

किसी की भावनाओं को पूर्ण रूपेण समझ लेते हैं, तथा उसके बाद अपने ढंग से उसको प्रदर्शित करते हैं। आपका स्वभाव निःसंदेह ऐसा है कि आप आश्चर्यजनक प्रभाव से दूसरों को प्रभावित करते हैं। परंतु आप वातावरण को अनुकूल बनाने में अक्षम रहते हैं।

आपको जब कोई भी जीवन की उन्नति के अन्य मार्ग दृष्टिगत नही होते तब आप अपनी क्षमता के अनुरूप अपने धन को लाभजनक कार्य में लगा देते हैं। निम्नांकित बिन्दुओं पर विधानतः तदनुसार आचरण करना चाहिए जो कि आपकी लापरवाही के विरुद्ध जीवन के महत्वपूर्ण सांकेतिक शब्द हैं।

आपके जीवन के लिए महत्वपूर्ण रंग पीला, हरा, ब्लू एवं मोतिया एवं गुलाबी रंग हैं। परंतु हर दशा में रंग काला एवं लाल सर्वथा त्याज्य है।

इसके अतिरिक्त अंक 4 एवं 8 अंक का व्यवहार सर्वथा प्रतिकूल है। जबकि अंक 7 एवं 3 अंक आपके लिए वास्तव में अनुकूल हैं।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से

पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यो में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया मिथुन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ विन्रम शांत एवं हास्य प्रवृति से युक्त होते है। वे बुद्धिमान होते है तथा उनके मुख पर बुद्धिमता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है परन्तु यदा कदा चंचलता का भाव भी इनमें पाया जाता है ये स्वाभिमानी व्यक्ति होते हैं तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में वांछित सफलताएं अर्जित करते हैं तथा सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों को प्राप्त करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। संगीत एवं कला के प्रति इनकी अभिरूचि रहती है तथा नए सिद्धांतों एवं मूल्यों का प्रतिपादन करने में भी समर्थ रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल सुख दुःख में अन्य लोगों को अपना सहयोग प्रदान करने में तत्पर रहेंगे।

मित्रों के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके नित्य सम्पर्क रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे आकर्षित एवं प्रभावित रहेंगे। लेखन गणित तथा व्यापारिक कार्यों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करके अपना जीवन यापन करेंगे।

लग्न में लग्नेश बुध की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करेंगे एवं अपने वाक्चातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ होंगे। आपका स्वभाव परिश्रमी होगा तथा परिश्रमपूर्वक आप अपने उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे जिससे समाज या कार्यक्षेत्र में आप एक सम्मानित पुरूष समझे जाएंगे।

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा आयस्रोत भी आपके एक से अधिक होंगे फलतः आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी संगीत कला साहित्य एवं अन्य शास्त्रों पर आपका अधिकार रहेगा तथा अपनी उत्साही एवं पराक्रमी प्रवृति से आप इनमें इच्छित यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होने की संभावना रहेगी। साथ ही कृषि या जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप जीवन में अर्जित कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप एक सदाचारी पुरूष होंगे तथा नैतिकता का अनुपालन करने में सदैव तत्पर रहेंगे। अतः अन्य जन आपको हार्दिक आदर प्रदान करेंगे तथा एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में आपका अपने क्षेत्र में प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार आप परिश्रमी, उत्साही, साहसी एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कर्क राशि स्थित है जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप भावुक प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा यदाकदा अधिक बोलने वाली प्रवृति भी रहेगी। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथायोग्य सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी वाणी भी मधुर होगी तथा अपने विचारों को आप स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में समर्थ रहेंगे। फलतः सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित होंगे।

पारिवार में सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही संतति से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपको सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन करना रूचिकर लगेगा। विशेष रूप से मिष्ठान के आप प्रिय रहेंगे तथा रूचिपूर्वक इनका भक्षण करेंगे लेकिन इससे यदा कदा आपको स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है अतः इनकी अधिकता की उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही धार्मिक उत्सवों को भी आप समय समय पर परिवार में आयोजन करते रहेंगे। आप अपने विचारों की पुष्टि में हमेशा ठोस तर्को को प्रस्तुत करेंगे जिसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त लकड़ी के व्यापार से आप लाभ अर्जित कर सकते है। इसके अतिरिक्त पुत्रों का आपके प्रति विशेष स्नेह रहेगा तथा आपकी सेवा में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। इसके प्रभाव से आप एक आदर्श विशाल हृदय तथा साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने संबंधियों, भाई.बहिनों तथा चचेरे भाईयों के प्रति पूर्ण विश्वास रहेगा। आप किसी भी कार्य में उनसे सहयोग या सलाह लेना उचित समझेंगे तथा तभी किसी महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगे। आप हमेशा उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इस राशि के प्रभाव से आप उच्चाधिकार तथा प्रशासनिक सेवा को प्राप्त करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त भाई बहिनों से सदा आज्ञापालन तथा कर्तव्य परायणता की अपेक्षा करेंगे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो आप अत्यन्त ही क्रोधित तथा नाराज होंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा आपकी नजर तथा स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा काफी समय तक आप किसी भी बात को याद करने में समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा, दर्शन शास्त्र तथा लेखन कार्य संबंधी सफलताएं भी अर्जित करने के लिए यत्नशील रहेंगे। संचार साधनों से भी आप युक्त रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही वाहन आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप नीति के भी ज्ञाता होंगे तथा पत्राचार, समाचार.पत्र या लेखन संबंधी कार्यो में रूचिशील रहेंगे। आप प्रायः यात्राशील रहेंगे तथा दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ तथा ख्याति अर्जित होगी । संगीत के प्रति भी सामान्यतया आपकी रूचि रहेगी। प्रकाशन के क्षेत्र में भी आप इच्छुक रहेंगे क्योंकि आपके अन्दर लेखन क्षमता विद्यमान है अतः आप उच्च कोटि के संपादक भी हो सकते है। इसके अतिरिक्त एक योग्य सूचना अधिकारी या संवाद दाता के रूप में भी सफल हो सकते हैं। साथ ही आप शूरवीर, मित्र प्रेमी यदा कदा कटुवक्ता परन्तु अभिमान हीन रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको प्रचुर मात्रा में भौतिक सुख-संसाधनों एवं उपकरणों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक बुद्धिमान एवं व्यक्ति होंगे। अतः अपने इन गुणों से भी आपको भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा समाज में भी आपका उच्चस्तर बना रहेगा।

जीवन में चल एवं अचल संपत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे तथा इनसे आपके ऐश्वर्य एवं समृद्धि में अभिवृद्धि होगी। साथ ही पुत्र के प्रभाव से आपको धन समपत्ति का लाभ होगा। बृहस्पति के प्रभाव से आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे अतः जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपके पास प्रचुरता होगी। इसके अतिरिक्त वांछित ऐश्वर्य एवं समृद्धि से भी आप युक्त होंगे जिससे प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा यह उत्तम क्षेत्र में होगा। साथ ही घर सुन्दर एवं आकर्षक होगा एवं समस्त आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा। इसको सुन्दर एवं आकर्षक बनाए रखने में आप नित्य तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसी प्रकार का निर्देश प्रदान करेंगे। आपका घर किसी उत्तम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके संबंधो में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन भी आपको प्राप्त होगा तथा युवावस्था से ही आप इसका उपयोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता शिक्षित बुद्धिमती एवं सौम्य स्वभाव की महिला होंगी तथा अपने सद्व्यवहार से सबको प्रसन्न रखेंगी। पारिवारिक जनों का वह पूर्ण रूप से ध्यान रखेंगी। परिवार के सभी सदस्य भी उनका पूर्ण सम्मान एवं आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर आपको विशिष्ट आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग करती रहेंगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही अध्ययनशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक तथा श्रेणी को अर्जित करने लगेंगे। अतः स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे। साथ ही अच्छी श्रेणी लेकर आप अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में प्रबल वृद्धि होगी तथा स्वजनों एवं संबंधियों तथा मित्रगणों से भी पूर्ण प्रोत्साहन, आदर तथा स्नेह मिलेगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में तुला राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से सम्पन्न करेंगें। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आप अपनी बुद्धि से करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इन ग्रंथों का अध्ययन करके वांछित मात्रा में ज्ञान अर्जित करेंगे। बुध के प्रभाव से साहित्य या कविता लेखन, गणित एवं ज्यौतिष शास्त्र का ज्ञान भी आपको होगा तथा इस क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि भी अर्जित कर सकते है जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा होगी ।

शुक्र की राशि की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवाद एवं मर्यादा की सीमा में होगा तथा इसको आप केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का समाधान नहीं मानेगे। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है जिससे आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या पुत्र से अधिक होगी लेकिन सभी बच्चे बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे जिससे परस्पर सद्भाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति उनमें विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान माता से ही करवाना अधिक पसंद करेंगे लेकिन मान सम्मान एवं श्रद्धा का भाव माता पिता के प्रति समान रूप से रहेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे आशातीत उन्नति करेंगे तथा अच्छे अंको से अपनी परिक्षाओं को उत्तीर्ण करके उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। वे उच्च पदों पर भी नियुक्त हो सकते है। इसके वे स्वभाव से विनम्र एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे जिससे आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अपने बच्चों पर आपको गौरव होगा तथा वे भी वृद्धावस्था में आपकी श्द्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने स्वास्थ्य को अनावश्यक चिन्ताओं एवं उत्तेजनाओं से खराब करेंगे। साथ ही आपको अपने स्वास्थ्य की स्वस्थता के लिए हमेशा सीमित कार्य करना चाहिए क्योंकि अधिक कार्य करना आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। सामान्यतया आप सर्दगर्म से उत्पन्न जुकाम तथा वृद्धावस्था में श्वास संबन्धी रोगों से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। इसके साथ ही कन्धों या जोड़ों में भी दर्द की उत्पति हो सकती है। अतः स्वास्थ्य के प्रति आपको पूर्ण सतर्क रहना चाहिए।

मंगल एक तेजस्वी तथा उग्र ग्रह है अतः आपको अनावश्यक रूप से वार्तालाप में कठोर शब्दों की उपेक्षा करनी चाहिए तथा यत्नपूर्वक मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए अन्यथा आपको कई प्रकार से अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपके उन्नति मार्ग में शत्रु हमेशा व्यवधान उत्पन्न करेंगे अतः आपका जीवन अत्यंत ही परिश्रम पूर्ण रहेगा परन्तु अपनी तेजस्विता एवं चतुरता से शत्रुपक्ष का दमन करने में समर्थ होंगे तथा आपकी कठिनाइयां भी दूर होंगी।

आपके सेवक भी क्रोधी स्वभाव के होंगे तथा आपकी गुप्त बातों को अन्य जनों से कहकर आपके मान सम्मान में न्यूनता करेंगे। अतः आपको नौकरों पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए तथा उनके सामने कोई भी व्यक्तिगत वार्तालाप नहीं करना चाहिए। आप जीवन की खुशहाली पर निरन्तर व्ययशील रहेंगे अतः कभी कभी व्ययाधिक्य के कारण आर्थिक विषमता उत्तपन्न हो सकती है। साथ ही बीमारी के कारण आपको कर्जा आदि भी लेना पड़ेगा तथा समय पर वापिस न कर पाने के कारण सामाजिक अवमानना होगी। आपको मुकद्दमेबाजी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। मामा मामियों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा तथापि उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आपको सुन्दर स्वादिष्ट भोजन करना अच्छा लगेगा तथा मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रूचि होगी। परन्तु इनकी अधिक मात्रा तथा नशीली वस्तुओं से हमेशा परहेज रखें अन्यथा शारीरिक परेशानी उत्पन्न होगी तथा वृद्धावस्था में आपको न्यूनाधिक मात्रा में कष्ट भी होगा ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया धनु राशि की सप्तम भाव में स्थिति के कारण जातक का सहयोगी पुष्ट शरीर वाला बुद्धिमान एवं कार्य कुशल होता है तथा बुध के प्रभाव से उसमें विद्वता कलाप्रियता एवं सहिष्णुता का भाव भी रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी बुद्धिमान विदुषी एवं सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा कला के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो में वह निपुण होंगी तथा कुशलता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न धर्म के प्रति भी उनके मन में श्रद्धा होगी तथा सहिष्णुता के भाव से भी युक्त होंगी इसके अतिरिक्त वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य होगा। शारीरिक रूप से पुष्ट होंगी एवं अंग प्रत्यंग भी सुडौल रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा एवं कला के प्रति समर्पण की भावना रहेगी सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह अवसरनुकूल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। उनके शरीर में अग्नि तत्व राशि के प्रभाव से पतलापन रहेगा जिससे सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक बना रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूरा करेंगे। आप दोनों सहनशील स्वभाव के होंगे अतः एक ही प्रवृति होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा दाम्पत्य जीवन का पूर्ण आनंद उठाएंगे।

आपका ससुराल किसी धनाढ्य एवं सम्मानित परिवार से होगा फलतः विवाह के समय आपको ससुराल से प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। वे भी आपको पुत्रवत स्नेह देंगे तथा महत्वपूर्ण मामलों में सलाह या सहमति का भी आदान प्रदान होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा एवं सम्मान की भावना होगी तथा श्रद्धा पूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी एवं अपनी और से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी साथ ही देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार एवं मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उनको वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इससे पारिवारिक शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप व्यावहारिक तथा आधुनिक विचार धारा के व्यक्ति होंगे फलतः ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही जीवन में अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करने में व्यस्त रहेंगे तथा मित्रों के कहने पर भी आप की ज्योतिष आदि पर कोई श्रद्धा नहीं होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में प्राप्त होगी तथा परिश्रम पूर्वक धीरे धीरे इसमें उन्नति करेंगे। अपने कौशल से आप एक धनवान पुरूष माने जाएंगे लेकिन जुए या सट्टे आदि की आपको प्रायः उपेक्षा करनी चाहिए।

शादी के समय आपको ससुराल पक्ष से इच्छित दहेज की प्राप्ति होगी तथा वे लोग आपसे अत्यधिक प्रभावित रहेंगे फलतः सामान्य से अधिक धन एवं लाभ आभूषण आदि की आपको प्राप्ति होगी। इससे आप आराम दायक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। बीमे आदि से आपको लाभ होगा अतः मकान गाड़ी या स्वयं का आपको बीमा अवश्य कराना चाहिए। यद्य पि इसमें आपको हानि अधिक नहीं होगी परन्तु बीमे से आपको धन अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। जीवन में आपके यहां चोरी आदि की बड़ी घटनाएं नहीं होगी तथापि यदा कदा सामान्य घटनाएं घटित हो सकती है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से बहूमूल्य वस्तुओं को संभालकर रखना चाहिए। आप सजग प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। अतः जीवन में दुर्घटनाएं नहीं होगी। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे। शारीरिक स्वस्थता को बनाए रखने के लिए आपको नित्य प्रति व्यायाम भी करना चाहिए।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धार्मिक साहित्य का रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी रूचिशील रहेंगे। आपका मुख्य उददेश्य कोई सिद्धि प्राप्त करना रहेगा जिसके द्वारा आप समाज में मान सम्मान धन एवं ख्याति अर्जित कर सकेंगे। ज्योतिष अथवा तंत्र मंत्र शास्त्र में भी आपकी रूचि हो सकती है।

ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा पूर्ण विश्वास भी रहेगा। आपके विचार में कर्म की कोई विशेषमहत्ता नहीं है जब तक कि उसे भाग्य की पूर्ण सहायता न मिलें तभी कर्म करके मनुष्य विशिष्ट सफलताएं प्राप्त कर सकता है। अतः अपने इष्ट देव की नियमित रूप से पूजा करेंगे। आपके विचार में परिवार में समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने से बच्चों के शुभ संस्कारों के वृद्धि होती है। जीवन में आप कई तीर्थ स्थलों की यात्रा करेंगे। साथ ही विद्वान एवं साधु महात्माओं की संगति से आपको प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि प्राप्त होगी।

आपको व्यावसयिक तथा आनन्द प्रदान करने वाली लम्बी दूरी की यात्राओं से काफी ज्ञान प्राप्त होगा। अतिथि को आप भगवान का स्वरूप समझकर उनकी सेवा करेंगे। पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। वास्तव में इस जीवन में आप पूर्व जन्म के कर्मों के फल को प्राप्त करते है। आपके स्तर धनऐश्वर्य आराम तथा उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि निश्चित ही आपने पूर्व जन्म में कोई शुभ कर्म किए होंगे। वृद्धावस्था में आपके मन में वैराग्य की भावना भी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप दैवी कृपा से धनार्जन करने वाले, रास्ता, बगीचा, तालाब तथा मन्दिर आदि परोपकार के लिए बनवाने में भी सफल रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। साथ ही मंगल भी दशम भाव में स्थित है। मीन राशि जलतत्व तथा मंगल अग्नितत्व ग्रह होने के कारण आपका कार्य बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा। साथ ही जलतत्व के प्रभाव से इसमें समय समय पर अनुकूल परिवर्तन भी करते रहेंगे जिससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। कार्य क्षेत्र में उन्नति में गतिशीलता बनी रहेगी जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए डाक्टर, इंजीनियर, पुलिस, सेना, विद्युत एवं ऊर्जा विभाग विद्युत फैक्टरी, होटल कर्मचारी या अग्नि से संबंधित विभाग तथा अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों या विभागों में कार्यरत होने से आपको यथोचित समय पर वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उच्चपद पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करें।

व्यापार के क्षेत्र में आप शस्त्रों का व्यापार, विद्युत उपकरण, इंजीनियरिंग उपकरण दवाइयों का व्यापार, रासायनिक पदार्थ, होटल एवं जमीन जायदाद संबंधी क्रय विक्रय आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में व्यापार करने से आपको वांछित लाभ की प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुंचने में आप सफल रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

दशमभाव में दिग्वली मंगल की मित्रराशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको विशिष्ट मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही सौभाग्यवश यश एवं प्रसिद्धि भी समाज में व्याप्त होगी परन्तु नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल की स्थिति के प्रभाव से यह किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों के उपरांत प्राप्त होगी। अतः इससे आपको विचलित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम तथा बुद्धिमतापर्वक अपने कार्यकलापों को करने में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही समाज में सभी लोग उनके उत्तम कार्य कलापों से प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा वात्सल्य की भावना रहेगी तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा स्थायित्व में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं पिता के प्रभाव से आपको कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे परंतु यदा कदा वैचारिक तथा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है जिससे यदा कदा संबंधों में कटुता का आभास होगा परन्तु यह क्षणिक होगा तथा सामान्यतया संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी इच्छाएं अधिक रहेंगी। साथ ही इच्छाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में भी सामान्यतया सफल ही रहेंगे। आपके अन्दर संगठनात्मक शक्ति विद्यमान रहेगी तथा अन्य लोगों को संगठित एवं नियंत्रित करके उनसे अपना कार्य करवाने में समर्थ रहेंगे। अतः आप प्रबन्धक, पुलिस या मिलिटरी आदि में विशिष्ट सफलता अर्जित कर सकते है। साथ ही होटल आदि के व्यवसाय से भी आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित हो सकता है। बड़े भाईयों से आपको विशेष सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा तथा आपात्काल में भी वे आपकी सहायता करेंगे।

आप अच्छी एवं अधिक मित्र मंडली को पसन्द करेंगे। साथ ही उत्साही पराक्रमी निडर तथा शिक्षित व्यक्तियों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृत्ति स्वछन्द रहेगी तथापि अन्य जनों के साथ कार्य करने में आपको आनन्दानुभूति होगी। आपके सामाजिक सम्पर्क विस्तृत रहेंगे तथा सभी सामाजिक जन आपको यथोचित मात्रा में सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। आपके आय स्रोत भी विस्तृत रहेंगे एवं समाज में विशिष्ट ख्याति एवं सम्मान के भी योग बनेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी तथा अपने कार्यो से प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा परन्तु यदा कदा बाएं कान से आपको किंचित परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आपका जीवन परिवर्तशील रहेगा तथा सामान्यतया आप खुशहाल जिंदगी व्यतीत करेंगे। धनार्जन के लिए आप विभिन्न स्रोतों को बनाने में सफल रहेंगे अतः आपकी आय के स्रोत एक से अधिक होंगे परन्तु आप उन्मुक्त रूप से धन का व्यय करेंगे तथा पारिवारिक शान शौकत एवं विलासमय वस्तुओं पर आपका विशेष व्यय होगा। यदा कदा आप पूंजी निवेश भी करेंगे जिससे आपको भविष्य में लाभ होगा।

आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर धन का अधिकांश व्यय करेंगे इससे आप मानसिक सन्तुष्टि, आनन्द तथा खुशहाली की अनुभूति करेंगे। आप समय समय पर दूर समीप की यात्राओं को सम्पन्न करते रहेंगे। इनमें तीर्थ यात्राओं की भी प्रबल संभावना रहेगी। आपकी यात्राएं सामान्यतया व्यापार या आफिस कार्य से संबंधित रहेंगी तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करना रुचिकर समझेंगे। यात्राओं के मध्य यदि आप शीघ्र ही सक्रिय रहेंगे तो इससे आपको इच्छित लाभ की प्राप्ति भी हो सकती है। यात्रा में आपकी कई पुराने तथा नए लोगों से मुलाकात होगी तथा हर जगह उचित वातावरण बनाने में समर्थ रहेंगे।

जीवन में आपकी विदेश यात्रा भी होगी तथा इससे आपके भाग्य में वृद्धि होगी कुछ समय के पश्चात आप विदेश में भी प्रवास कर सकते हैं जहां आपका जीवन सुखऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त रहेगा। इससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा आनंद पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे ।

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा सर्प योनि है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आधाक्षर "वि" या "वी" से प्रारम्भ होगा। यथा विनय, वीरेन्द्र आदि।

आप धर्म कर्म में तथा ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले आस्तिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सुशील होंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने की क्षमता आपके अन्दर विद्यमान होगी। जिससे देखने या सुनने वाले चकित रह जाएंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा किसी कठिन से कठिन विषय को सरलता पूर्वक समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। कभी भी आपको इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आप उस आदमी के प्रति अत्यन्त ही कृतज्ञता प्रकट करेंगे जो आपका थोड़ा सा भी कोई कार्य सम्पन्न कर देता है। मंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जो सभी लोगों को प्रिय लगेगी। सत्य का अनुपालन आप अपने जीवन में करते रहेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

स्वास्थ आपका सामान्य रूप से उत्तम रहेगा। रोगग्रस्त कम ही रहेंगे। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जो भी कार्य आरम्भ करेंगे। उत्साह पूर्वक उसे सम्पन्न करेंगे। आपका चरित्र तथा आचरण उत्तम एवं प्रशसंनीय होगा।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप आत्मिक तथा शारीरिक पवित्रता दोनों का यत्नपूर्वक पालन करेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक दोंनो की पवित्रता आजीवन बनाए रखेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा जो भी कार्य करेंगे शीघ्रता से नहीं अपितु एकाग्रचित हो कर करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ होगा। तथा अन्य जनों के दोषों को जान लेने में आप चतुर होंगे। आप एक विद्वान पुरूष भी होंगे।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी दुःखी, धन एवं सुख संसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करते है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की प्राप्ति ही अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील व्यक्ति होंगे तथा दान देने के लिए सदैव उद्यत रहेंगे। आप एक गुणवान पुरूष होंगे तथा अपने सद्गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। आप शुभ कार्यों पर अधिक व्यय करेंगे। अनावश्यक या अन्य अशुभ कार्यों पर व्यय करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक एवं विलासमय सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। इन्ही विलासमय वस्तुओं पर आपका व्ययाधिक होता रहेगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है अतः आप लालिमायुक्त गौर वर्ण के होंगे तथा आपके गाल भी स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का अंश भी स्वभाव से ही आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। ब्राहमणों तथा गुरूजनों के भी आप परम आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा से उनका मान सम्मान करेंगे। आप अच्छी बुद्धि वाले होंगे तथा स्वभाव वात और कफ मिश्रित होगा। आपका जीवन प्रायः सुखी रहेगा तथा आप दानशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आपके बाल भी घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में आप सर्व प्रकार से सुखों से युक्त रहेंगे। शुद्धता तथा सफाई के प्रति आप प्रारम्भ से ही पूर्ण रूपेण सजग रहेंगे। समस्त कार्यों को सम्पन्न करने में आप पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगे। आप बलवान भी होंगे। धनागम पर्याप्त मात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से इन वस्तुओं पर व्यय करेंगे। तेजस्विता का भाव भी आपमे विद्यमान रहेगा। आप सद्गुणों से युक्त अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता भी दीर्घकालीन होगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुख तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण व्यतीत होंगे परन्तु अन्तिम दो भाग अत्यन्त ही सुख एवं आनन्द से व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आप विशेष आकृष्ट रहेंगे। क्षमाशीलता एवं त्याग की भावना आपके अन्तर्मन में निहित होगी। जिसका समयानुसार आप प्रदर्शन करते रहेंगे। प्रारम्भिकावस्था में आपको सामान्य रूप से कष्ट सहने पड़ेगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपके पीठ मुख तथा बगल में तिल, मस्सा या व्रणादि का निशान भी हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति की संख्या पुत्र संतति से अधिक होगी। आपका व्यवहार तथा चरित्र प्रशंसनीय होगा। आप आजीवन धन का उपभोग करते हुए अपने यश को चारों तरफ फैलाएंगे।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने बालों से युक्त रहेंगे तथा आप न्याय प्रिय तथा शुद्धाशुद्ध का ज्ञान करने में चतुर होंगे। आप सुन्दर गति से चलेंगे तथा शरीर तथा शरीर के अंग दीर्घ तथा सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना का समावेश स्वभाव से ही आपके मन में रहेगा तथा आप इसका प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। इसी प्रकार अपने सत्कार्यों तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बड़ी होगी तथा विलास सहित गमन प्रिय होंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की भी प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले तथा शिव एवं विष्णु भगवान की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप धार्मिक प्रवृति एवं श्रद्धालु व्यक्ति होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम सेवा भावना युक्त श्रद्धा होगी। अभिमान का अंश भी आपके अन्दर व्याप्त रहेगा। आप बल से युक्त रहेंगे तथा दया तथा करूणा की भावना आपके हृदय में व्याप्त रहेगी। अतः दीन दुःखियों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगे। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं के जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा इसको प्राप्त करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। साथ ही बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

धन तथा मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा इनका आपको आजीवन अभाव नहीं रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त दक्ष होंगे। आप गौरवर्ण के होंगे तथा नगरवासियों को वश में करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे अर्थात् आप किसी नगर के प्रमुख व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी आँखें भी आकृति में बडी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप सर्प योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप कभी कभी अत्यन्त क्रोध के भाव का प्रदर्शन करेंगे। प्रवृति में भी चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप अत्यन्त स्वाद लोलुप होंगे। खट्टा मीठा, तीखे स्वादों की आप हर समय इच्छा रखेंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो

कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष, मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्याराशि में चन्द्रमा यह समय सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 नवम्वर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण लेन-देन, क्रय-विक्रय आदि न करें। इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई कार्य प्रारम्भ न करें। अन्यथा अशुभ फल ही अधिक मिलेंगे। इस प्रकार शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक कष्ट हो रहा हो व्यापार में हानि या नौकरी अथवा प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो ऐसे समय में आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, कपूर, शहद इत्यादि पदार्थों का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे मानसिक शक्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकते हैं।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में नौवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप भाग्यवान होंगे। आपको उत्तम वाहन सुख मिलेगा। बड़े परिवार से युक्त रहेंगे। आप परोपकारी होंगे। आप अपनी सात पुश्तों को तारने वाले होंगे। आप अपने खानदान के लिए पूरा जीवन न्यौछावर कर देंगे। 22वें वर्ष में आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। माता-पिता की कृपा से राजदरबार में इज्जत मिलेगी। तीर्थ यात्रा करने से आपके जीवन पर अच्छा असर पड़ेगा। आपके परंपरागत काम या सरकारी ठेकेदारी के धंधे से लाभ होगा। आपको माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी बचपन में परवरिश खानदानी ढंग तथा सुख साधन से होगी। आप खानदान के लिए त्याग करेंगे और आप परोपकारी होंगे। आप पोते-पड़पोते के जन्म की खुशियां देखेंगे। पैसे की तंगी नहीं रहेगी। आप दूसरों की बीमारी दूर करने में मदद करेंगे। आपके पिता को सरकार पक्ष से लाभ होगा। बहुत बड़े परिवार को पालने का जिम्मा आप पर हो सकता है। धार्मिक कार्यों से तरक्की और कीर्ति मिलेगी। स्वपराक्रम से अपनी किस्मत का सितारा चमकायेंगे। सरकारी विभाग में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा, राजा या राजा तुल्य जीवन होगा, नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

यदि आपकी रसोई में उल्टे या बहुत समय से पुराने खाली बर्तन पड़े रहे, मकान का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में हुआ, भाई-बहन से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से स्वभाव अति उग्र या अति नम्र स्वभाव रहने से सर्वस्व खोना पड़ सकता है। गिफ्ट/मुफ्त का माल या दान खाने से हर तरफ हानि होगी, यात्रा में कष्ट होगा, बहन-भाई द्वारा विरोध और किस्मत का बुरा असर शुरु हो जायेगा। कई बार आपको नेकी का बदला बुराई में मिल सकता है और जिसके साथ आप संबंध रखेंगे उसी की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. मुफ्त या दान के माल से दूर रहें।
2. बहुत नर्म या बहुत गर्म स्वभाव न रखें।

उपाय :
1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सूर्य ग्रहण के समय 4 सूखे नारियल जल में प्रवाहित करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके मन की बहुत बातें पूरी नहीं हो सकती हैं या तरस-तरस कर सभी काम बनेंगे। आपकी

पढ़ाई-लिखाई बहुत अच्छी होगी और आप बहुत होशियार रहेंगे। एक बात पर कायम नहीं रहेंगे या आपको बात करते-करते बात बदलने की आदत होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं रहेगी। पढ़ाई-लिखाई का उपयोग आपके जीवन में कम होगा। वर्तमान समय अच्छा गुजरता रहेगा। भविष्य की बातें स्वप्न में देखेंगे। लोग आप पर विश्वास करके अपना भेद भी बता देंगे। आप उनकी बातों को गुप्त रखेंगे। आपके आश्वासन से लोगों को राहत मिलेगी। आप अपने पूर्वजों के हालात बढ़ा-चढ़ा कर बताएंगे। अपनी कमाई का धन जमा रहेगा। 48 वर्ष आयु के बाद बहुत सुखी रहेंगे।

यदि आपने घर में हैंड पंप या पानी का साधन छत के नीचे रख, नीम का वृक्ष काटा, चाल-चलन ठीक न रखा, बुजुर्गों के काम को नष्ट किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आप बीते समय को याद करके अपना समय खराब करेंगे। जीवन में ऐसे काम भी हो सकते हैं जो अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसे होंगे। जमीन-जायदाद आदि का कोर्ट में झगड़ा होगा, फैसला बहुत देर बाद होगा और आपके हक में होगा। आपकी संतान निकम्मी हो सकती है। आपकी पैतृक संपत्ति नष्ट हो सकती है और आप मुसीबत पर मुसीबत उठायेंगे। खुशी के बाद की घटना खुशी को समाप्त कर देगी। आपकी आंखों पर बुरा असर पड़ सकता है। दिमागी परेशानियों के कारण नींद हराम हो सकती है। मातृ सुख का अभाव हो सकता है। आपको पानी से भय है आप अपनी और ससुराल की संपत्ति पर भारी पड़ेंगे। धन का नाश कर देंगे। आपके जीवन में दुःख का कारण परस्त्री हो सकती है। इस मामले में आप दुर्बल हैं। आप आलसी, धनहीन एवं अस्वस्थ्य रहेंगे आपको हर प्रसन्नता के बाद कोई न कोई दुःख भोगना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. छत के नीचे हैंड पंप आदि न लगायें।
2. बीता हुआ समय याद न करें।

उपाय :
1. नीम के वृक्ष का पानी घर पर रखें।
2. 16 लीटर वर्षा के पानी में चांदी के चार चौरस टुकड़े को डाल कर रखें।
3. आसमानी बर्फ (ओले) शीशे के बर्तन में रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष

आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी कुंडली में नौवें घर में बुध पड़ा है। इसकी वजह से संगीत या ज्योतिष में रुचि रह सकती है। आप परिवार का भरण-पोषण करते रहेंगे। आपको अपना भाग्य बनाने में अधिक समय लगेगा। धन-दौलत में बरकत होने में समय लगेगा फिर भी आप खुश रहेंगे। आपके काम-धन्धे पर तथा राजदरबार में आपका अच्छा असर रहेगा। जन्मस्थान से दूर विदेश तक की यात्रा करनी पड़ सकती है परंतु विदेश प्रवास का फल भी अच्छा या अनुकूल रहेगा।

यदि आपके घर में गाने-बजाने का सामान और रेडियो-घड़ियां आदि खराब पड़े होंगे, जुबान में तोतलापन, हरे रंग की चीजें अधिक होंगी या साधू-महात्मा आदि ताबीज़ लेकर रखा तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपके काम से आपके पिता की बदनामी हो सकती है। धोखेबाजी से कदम-कदम पर मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। गृहस्थ जीवन और औलाद से संबंध में खराबियां पैदा होंगी। मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। अधर्म के कार्य करेंगे तो भाग्य में भी रुकावटें आती रहेंगी। जीवन में उत्थान-पतन से तंग आ जाएंगे। जीवन के हालात से तंग आकर साधू-फकीर

बनने की इच्छा होगी परंतु साधू-फकीर बनना अच्छा नहीं होगा। आप पिता के लिए मनहूस रहेंगे। पिता के सुख का अभाव हो सकता है। आप अपने पिता की आयु पर भारी हैं। पिता के नौकरी-व्यापार में बाधा हो सकती है। जलील और खराब काम करना पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. जल-भभुतिया, धागे-ताबीज न रखें।
2. मकान की सीढ़ियां गिरा कर दुबारा न बनायें बल्कि उसकी मरम्मत करें।

उपाय :

1. गऊ ग्रास देवें।
2. लोहे की गोली पर लाल रंग करके पास रखें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से वकील-जज या उच्च पद प्राप्त होगा। आपके दिमाग में उपजी बातें अवश्य पूरी होगी। आप दूसरों का भला करते समय अपने नुकसान का ख्याल नहीं रखेंगे। आपको लॉटरी से या अचानक धन की प्राप्ति हो ऐसी उम्मीद है। आपको सरकार द्वारा भी लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन एवं सवारी का सुख मिलेगा। 24वें वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप बहुत ही चालाक और भाग्यवान होंगे। आप सभी के मददगार होंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से ऊंचा होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करेंगे तो आप अच्छे अफसर हो सकते हैं। सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलेगा। आपके माता-पिता की दीर्घायु, चाचा-ताऊ सुखी होंगे। आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे आपको मानसिक शांति तथा मन को प्रसन्नता मिलेगी। आप भूमि के स्वामी होंगे तथा आपका मकान आलीशान होगा। लक्ष्मी आपके घर में निवास करेगी। आपको स्त्री-औलाद और माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। भूमि में गड़े धन की प्राप्ति हो सकती है। लोहा आदि, मशीनरी के काम से बहुत लाभ उठाएंगे।

यदि आपका निर्धन व्यक्ति से संबंध रहा, टूटा सामान या टूटे हुए खिलौने चिपकाने या जोड़ने वाले पदार्थों आदि से जोड़ कर रखे होंगे, परस्त्री संबंध हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अपनी बेड़ी डोव मल्लाह की तरह आपका हाल होगा। आपके जीवन का 23, 34, 48 एवं 55वां वर्ष अच्छा होगा परंतु इन वर्षों में माता पर बुरा असर पड़ेगा। आप पर कुछ लांछन लग जाएं या सम्मान को खतरा पहुंचे ऐसी आशंका है। आप पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आएगी। एक से अधिक औरतों से संबंध रखने का फल अच्छा नहीं होगा। राजा होते हुए भी फकीरी लेने का विचार दिमाग में आता रहेगा। आपकी पत्नी के वक्षस्थल या गर्भाशय में कैंसर हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :
1. टूटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित की सेवा करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र नौंवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्य मंदा रहेगा। 25 वर्ष के बाद का समय अच्छा रहेगा। इसलिए 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें। अमीरी होने के बाद भी परिश्रम से रोटी प्राप्त होगी। तीर्थ यात्रा करना संतान के लिए शुभ है। आपके पास धन भी होगा। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह हैं। आपको मन में शक्ति मिलेगी तथा धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। नौकर-सेवकों से सुख मिलेगा।

यदि आपके घर में ढेक का वृक्ष, एल्युमिनीयम के बर्तन हुए, 25वें वर्ष में विवाह किया, छोटी आयु में मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विवाह के बाद से आपके पीछे दुःख लग जाएगा। स्त्री, धन-दौलत पर बुरा असर पड़ेगा, ऐसी आशंका है। आप दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत का जंजाल अपने ही गले लगा लेंगे। आप नशे की बुरी लत के कारण बीमारियों से तंग रहेंगे। आपकी धन-दौलत की बर्बादी का कारण भाई-बंधु बनेंगे। गुप्त रोग हो सकते हैं। लोगों से एतबार पर लेन-देन का फल मंदा हो सकता है। आपको खेती-बाड़ी से अच्छा लाभ नहीं होगा। आपके और आपकी स्त्री के लिए परेशानियां पैदा होंगी। आपके पास धन-दौलत इकट्ठी नहीं होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. 25वें वर्ष में विवाह न करावें।
2. एल्युमिनीयम का बर्तन प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मकान बनावें तो नींव में चांदी के बर्तन में घहद भर कर रखें।
2. पत्नी को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके बायें हाथ में पहनायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के चौथे खाने में शनि पड़ा है, जिसकी वजह से आपका जीवन

सुखी रहेगा। आप स्त्री और प्रेम संबंधों से घिरे रहेंगे, परंतु जवानी के बाद कामवासना से परहेज और धार्मिक विचारों की प्रवृत्ति हो जाएगी। सेहत खराब के समय शराब दवा के रूप में काम करेगी। आपके रिश्तेदार आपकी सहायता करेंगे। माता या पिता में से एक का सुख बहुत लंबे समय तक मिलेगा। दूसरी औरतों के आगे-पीछे भागना, आपकी अपनी पत्नी के लिए बुरा असर करेगा। घर से दूर विद्या पढ़े तो अधिक लाभ होगा।

यदि आपने किराये के मकान में रिहाईश की, मकान में काले कीड़े निकले, सांप का तेल बेचना शुरु किया, मादक चीजें बेचीं तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप क्रोधी, धूर्त, पानी के सांप जैसे स्वभाव के होंगे, आपको मकान-जायदाद का सुख कम ही मिलेगा। कभी बीमारी के चक्कर में पड़ जाएं तो शनि की चीजों का प्रयोग करें। माता दुःखी रहेंगी या माता के लिए कष्टकारक समय होगा। विधवा स्त्री से अनैतिक संबंध रखने पर या खर्च करने से कंगाल हो जाएंगे। शराब पीने से शुभ प्रभाव नष्ट हो जाएगा। पेट में खराबी, विकार रहेंगे। आपकी जायदाद पर दूसरों का कब्जा हो सकता है और आप पर लांछन लगेगा। आपकी पत्नी आपके कारण दुःखी रह सकती है या आपको पत्नी सुख में कमी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हरा रंग हानिकारक है।
2. काला कपड़ा न पहनें।

उपाय :

1. कुएं में दूध डालें।
2. मछली-भैंस-कौवे को भोजन का हिस्सा खिलायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपको पूरी मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप राजशाही जीवन बिताएंगे। आप दीर्घजीवी होकर ऐश की जिंदगी बिताएंगे। युवावस्था में किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। आपकी स्त्री रूपवान एवं सुशील होगी। आप उस्तादों के भी उस्ताद होंगे। गृहस्थी अच्छी चलेगी। आपको अधिक धन प्राप्त होगा। माता के साथ मधुर संबंध, ससुराल पक्ष का सुख अच्छा हो सकता है। चोरी से सावधान रहें। पैतृक संपत्ति नहीं के बराबर प्राप्त होगी मगर अपनी कमाई द्वारा अधिक संपत्ति बना लेंगे। परिवार के लोग सुखी रहेंगे। आपके धन कोष में बहुत वृद्धि होगी। किस्मत का असर शुभ और अशुभ दोनों हालातों में ऊपर-नीचे होता रहेगा।

यदि आपने घर में मंदिर रखा, सरसों का कार्य किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया या जुआ आदि खेला, ससुराल या साले का विरोध किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप उदर रोग

अर्थात् आंत रोग के मरीज होंगे। धर्मस्थान में चोरी आपके हाथों हो सकती है। आपका जीवन निर्वाह धर्मस्थान से प्राप्त अन्न से होगा। आप दान की हुई वस्तु लेने में तनिक भी नहीं हिचकेंगे या मुफ्त की वस्तुएं प्राप्त होती रहेंगी। आर्थिक एवं पारिवारिक सुख में कमी आ सकती है। आपकी कमाई का कुछ भाग खराब हो सकता है। आपको पुलिस का भय रहेगा। सजा सुन कर या सजा सुनने से पहले फरार हो जायेंगे, कैदी कभी न होंगे, ऐसी आशंका है। फौजदारी मुकद्दमें में हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सट्टा, जुआ आदि न खेलें।
2. धर्मस्थान में रिहाईश न करें/न जायें।

उपाय :

1. चांदी की ठोस गोली गले में धारण करें।
2. केसर या हल्दी का तिलक करें या शुद्ध सोना पहनें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु आठवें खाने मे पड़ा है। इसकी वजह से पत्नी का स्वास्थ्य अगर खराब रहता हो तो चारित्रिक सुधार के पश्चात् पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा हो जाएगा। आपके जीवन के 34 वर्ष आयु से पहले या 34 वर्ष आयु के बाद संतान पैदा होगी। आपकी कई संताने होंगी। पुत्र से सुख मिलेगा और पुत्र को संसार में यश-मान मिलेगा। जीवन में उत्थान होगा।

यदि आपने शराब-कबाब का सेवन किया, घर की छत पर रिहाईश हो, कुत्ता पाला या घर की छत पर कुत्ता बांधा, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपको संतान के बारे में चिंता बनी रहेगी। आप स्त्री से द्वेष करेंगे। आपका दगाबाजी का स्वभाव भी रहेगा। आप बवासीर रोग से ग्रसित रहेंगे। आप किसी भी व्यक्ति के सामने अपना दुःखड़ा रोयें तो आपकी और भी हानि होगी। संतानोत्तपत्ति में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। आपके मकान की छत गिर जाए तो अशुभ समझें। उस वक्त रोटी के भी लाले पड़ सकते हैं। संतान एवं धन के संबंध में मंदा असर लग रहा है। आपके जन्म के पूर्व बड़े भाई की मृत्यु हो गई हो ऐसा लगता है। गृहस्थ जीवन में भी दरार पड़ सकती है। वैवाहिक जीवन 26वें वर्ष तक सुखी नहीं रहेगा। 48 वर्ष तक संतान से दुःखी या निःसंतान होने की आशंका है। आपके बुरे चरित्र का बुरा प्रभाव आपकी पत्नी के जीवन पर पड़ेगा। यदि दो विवाह हुए तो संतान 34 वर्ष से पहले और 34 वर्ष के बाद भी पैदा होगी। आपकी औलाद पर बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपको मूत्र विकार की आशंका है। आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाएगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :

1. घर की छत पर कुत्ता न पालें।
2. जुआ आदि न खेलें।

उपाय :

1. काले-सफेद कंबल धर्मस्थान में देवें (संतान की लंबी आयु के लिये)।
2. काले-सफेद कंबल के टुकड़े में, साथ बैठे ग्रह की चीज बांध कर शमशान में दबायें (संतान सुख के लिये)।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु दशम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि दशम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वितीय भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि लग्न स्थान में आ जाएगी।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से देखें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अतः इस समय के अन्तराल में कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ न करें, पहले से चले आ रहे व्यापार को ही सुव्यवस्थित ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है।

मई के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान के गुरुनयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में और उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान के गुरुधनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में निवेश न करें और न ही ऋण दें, नही तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। मातुल पक्ष से लाभ प्राप्त होगा।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में इनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परन्तु 29 मार्च के बाद माता-पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

सप्तम स्थान पर गुरुएवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरुसंतान सम्बन्धित कुछ चिन्ताएं दे सकता है परन्तु मई के बाद लग्नस्थ गुरु के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चे निरन्तर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे एवं उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश होगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भधान हेतु समय शुभ है। दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरुआपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरुग्रह के पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक या पेट संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित रखेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में षष्ठ स्थान पर गुरुएवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अच्छी सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में बेराजगारों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है।

मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। तकनीकि शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरुविदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में विदेश यात्रा होगी।

मई के बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान-पुण्य, गरीबों को भोजन, भिक्षुओं को भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि अधिक करेंगे। मई के बाद आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा एवं पूजा पाठ में रूचि लेंगे। गुरुजनों व वरिष्ठ लोगों का सम्मान करें व उनके उपदेशों का पालन करें।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल

भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ

रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति

आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमेंद्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तमरहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकीआय में वृद्धि होगी। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने नयेव्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैंऔरकम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगाजिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। धन संचय करने में आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। 02 जून के बाद आपको रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपको रूके हुए पैसे मिल सकते हैं। इस वर्ष आपके परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले होथों से खर्च करेंगे। निवेश में उत्तम फल मिलने की सम्भावना है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनिग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। यदि आप विवाह के योग्य है तो विवाह हो सकता है।

02 जूनके बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिताजी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 31 अक्टूबर के बाद आप सामाजिक गतिबिधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि से आप के बच्चों कीउन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आप के बच्चे अच्छे काम करेंगे। आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा सकारात्मक विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

25 नवम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय अचानक आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः वर्षान्त में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान परगुरु केदृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 02 जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातको की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, 02 जून के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव सेयात्राओं के प्रबल योग बन रहें है। 02 जून के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे और 31 अक्टूबर के बाद आपकी

छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे। 02 जून के बाद मन्त्र सिद्ध व गुप्त विद्या ओं की ओर आपका रूझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु की तरफ से भी चिन्ता बनी रहेगी। आप में इस समय उत्साह की न्यूनता भी परिलक्षित होगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। आप शरीर से भी अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे तथा मन में लालच के भाव की भी प्रधानता होगी। साथ ही आप अपने शरीर का पूर्ण ध्यान नहीं रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके सम्बन्धों में तनाव भी उत्पन्न होगा एवं मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी संघर्ष होने का भय बना रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी समय समय पर घटित होंगे।अतः आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं बुद्धिमत्ता से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस समय आपको शत्रुओं से भय एवं चिन्ता बनी रहेगी साथ ही घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। इस समय आपका अनावश्यक रूप से व्यय होगा एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। शारीरिक रूप से भी आप विभिन्न प्रकार से कष्टानुभूति करेंगे परिणामतः आपके बल में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप घर से दूर किसी यात्रा को सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यो में भी इस समय आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी के कारण बुखार आदि से भी कष्टानुभूति करेंगे। इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव या कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। सन्तति से आप सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं अवसरानुसार आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे।समाज में यशार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगे एवं मित्रों से मधुर

संबन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

साथ ही आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सन्तुष्टि भी प्राप्त करेंगे। इस मास में आप नवीन वस्त्रों तथा अन्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगे।अतः इससे आपको मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी आपसे पूर्णरूपेण प्रसन्न रहेंगे। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ कार्य भी सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार से धन लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्थान या नवीन आवास आदि की भी प्राप्ति कर सकते हैं। इसके साथ ही सर्व प्रकार से शुभ फल होंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिस्त पिछले महीने की असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे।जिससे आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है। इस समय अग्नि के द्वारा भी किंचित धन हानि होने की सम्भावना रहेगी।अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से धन लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा हृदय से भी पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी उन्नति करेंगे। इस समय मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वांछित पदार्थों का आप उपभोग करके प्रसन्न रहेंगे। संतति पक्ष से भी आप शुभ फल ही प्राप्त करेंगे एवं सम्बन्धियों में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। साथ ही अपनी असफल आशाऔं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी होंगे।जिसके प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं एवं किसी कठोर कार्य को करने से सम्मान में अल्पता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अग्नि के द्वारा धन हानि की भी संभावना रहेगी।अतः बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी। सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रुधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण यश तथा मान प्राप्त होगा।साथ ही अपने समस्त बन्धुओं तथा मित्रों से आप पूर्ण प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस समय उच्चाधिकरी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा मिष्ठान्न का अधिक मात्रा में उपभोग करने में रूचिशील रहेंगे।आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की उसमें वृद्धि होगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुखोपभोग में व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी आपसे पराजित होगे एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापार मेंभी आप लाभ अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री वर्ग से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे एवं बुद्धि में

निर्मलता का भी समावेश होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रचुर मात्रा में धनलाभ अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक धर्मानुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे।साथ ही समाज में आपका यश भी व्याप्त होगा।धर्म के प्रति आपके मन में आस्था होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय परोपकार की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप पूर्ण यशार्जन करेंगे एवं आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही भाइयों से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मानसिक विचारों या संकल्पों को पूर्ण करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी एवं सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा

आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ तथा दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे अनावश्यक चिन्ताएं तथा समस्याएं बढ़ेंगी। इस समय चोरों से भी सावधान रहना चाहिए तथा अपने उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित हो सकते हैं। इस मास में आपको सांसारिक कार्यों में भी असफलता मिलेगी तथा धन भी अनावश्यक रूप से व्यय होगा। इसके साथ ही आप किसी गलत कार्य को करने के लिए भी प्रेरित होंगे तथा ऐसे कार्यों को करके आप बाद में पश्चाताप करेंगे। अपने सम्बन्धियों से भी आपकी अनबन हो सकती है तथा मान हानि का भी योग बनता है एवं आशाओं में भी असफलता प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री से सुखी , बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी धार्मिक कार्य को भी सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष अष्टम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया रहेगा। दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने कार्य क्षेत्र में अच्छा सफलता प्राप्त करेंगे। बडे अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपने विवेक से उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोत में वृद्धि होगी। व्यापारिक व्यक्तिओं को इस समय के अंतराल में अच्छा लाभ होगा। आपको मित्रों का भी भरपूर सहयोग मिलेगा। यदि आप अपने भाई के साथ कार्य कर रहे है तो बहुत अच्छा उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यापारियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आर्थिक संपन्नता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता से आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। इस समय के अंतराल में आप इच्छित निवेश करेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कुछ अनावश्यक खर्चे भी हो सकते हैं।

26 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत में वृद्धि होगी। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों का अहम सहयोग होगा। मांगलिक कार्यों में भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद आपको भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का पूर्वार्द्ध पारिवारिक रूपसे अच्छा रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके

परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनी रहेगी। परिवार में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। अष्टम स्थान का राहु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब कर सकता है।

26 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगें। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय अच्छा चल रहा है।

26 जून से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। आपकी शारीरिक उर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहें। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप कभी कभी छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते है। परन्तु गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे। 26 नवम्बर से आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने कारण आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के लिए यह समय शुभ रहेगा।

26 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यापार के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। परन्तु 26 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

26 नवम्बर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। यात्रा करते समय सावधान रहें क्योंकि अष्टम स्थान का राहु अचानक दुर्घटना दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्य के लिए बढ़िया रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 26 नवम्बर के बाद अपने परिवार में सुख, शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्तों को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं या राहु ग्रह का ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सं राहवे नमः मन्त्र का जाप करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में कुछ विरोधी या गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

वर्षारम्भ में उन्नति के लिए नये नये तरीके अपनाएंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान का राहु साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए अच्छा नहीं है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। फरवरी के बाद आपके आय के स्रोतो में वृद्धि होगी। निवेश के लिए समय काफी अच्छा चल रहा है परन्तु अष्टम स्थान का राहु कभी कभी अनावश्यक खर्च करा सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी आर्थिक उन्नति में आपके भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। आपका पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। इस अवधि में वसीयत इत्यादि मिलने की भी संभावनाएं बन रही हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। पूरे परिवार में सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो सफलता प्राप्त हो सकती है।

28 फरवरी के बाद गुरु के तृतीय भाव में गोचर करने से आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को चोट पहुंच सकती है। अतः अच्छा यही है कि विपरीत परिस्थितियों के लिए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति

विकसित करें। 24 जुलाई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

यह वर्ष संतान की तरक्की के योग लेकर आ रहा है। शिक्षा के लिए समय बहुत अनुकूल हो रहा है। परिवार की उन्नति के लिए आपकी संतान नवीन योजनाएं बनाएंगे।

संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी। घर का वातावरण उत्तम होने के साथ-साथ सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। 24 जुलाई के बाद का समय आपके लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में स्वास्थ्य बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आप समय पर अपना खान-पान नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

तनाव कम करने के लिए इस अवधि में आप अपने मन को एकाग्र कर योग क्रियाएं कर सकते हैं। इससे उत्साह का संचार होगा और आप अपने को स्वस्थ बनाए रखने में कामयाब रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए उत्तम रहेगा। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर मैं की भावना ना आने दें। 23 फरवरी के बाद समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए स्थानान्तरण के प्रबल योग बने हुए हैं। यह परिवर्तन आपके हित में होगा। 28 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी।

24 जुलाई के बाद आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो

उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा धार्मिक कार्य में असफलता या पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 24 जुलाई के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष धार्मिक आयोजन जैसे- भगवती जागरण इत्यादि कर सकते हैं।

- भगवान गणेश व माँ दुर्गा की आराधना करें।
- गौ सेवा करें व अपने भोजन का पहला भाग गाय को खिलाएं।
- राहु मन्त्र का जाप करें या राहु की वस्तुओं का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में ही आप कोई नया व्यापार शुरु करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उच्चअधिकारियों या वरिष्ठ लोगों की सहयोग मिलती रहेगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 29 मार्च से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान आ सकता है। शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती है।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन में समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। व्यापारिक व्यक्ति अपने कर्मचारिओं व नौकरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए नहीं तो सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक वे आपका साथ छोड़ सकते हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्ति अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम होगा। आय भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह का संयुक्त गोचरीय प्रभाव धनागम के स्रोतों में वृद्धि करेगा। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। 29 मार्च से पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा जिससे आर्थिक उन्नति रुक सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह के अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है। सट्टा, लॉटरी, या शेयर इत्यादि से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ मंगल के प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी

बरतने की आवश्यकता है। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध खराब हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

25 अगस्त से आपका घरेलम वातावरण अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। परिवार में सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। 05 अक्टूबर के बाद आपके प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। गर्भ धारण का अच्छा समय है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वह अपने बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के योग बन रहे हैं। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका यश बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे।

29 मार्च के बाद स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 25 अगस्त के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर चोट चपेट या दुघर्टना की स्थिति बन रही है। अतः कोई भी कार्य करते समय एकाग्रता बहुत जरूरी है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठतम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उपलब्धी प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय उत्तम है। करियर में भी अच्छी सफलता मिलेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी सफल होंगे परन्तु 29 मार्च के बाद करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिर्वतन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 08 अगस्त के बाद विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

यात्रा के दौरान छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। समय-समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। वर्षान्त में मन्त्र साधना भी कर सकते हैं।

- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल मजदूरों या गरीबों में दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- अपने माता-पिता की सेवा करें एवं अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। 04 फरवरी से राहु एवं गुरु की युति आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकती है। इस समय के अंतराल में आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु गुरु के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त करेंगे आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम को आगे ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। केवल आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होने के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। आपके अन्दर संतुष्टि और जीत की भावना बना रहेगी।

23 सितम्बर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अप्रैल तक अच्छा नहीं है। मई से आपका समय काफी अच्छा हो रहा है। आप को कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। आप अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे आपकी राह में आने वाले हर अवसर का लाभ उठाने के लिए आपको सही और गलत की परख होगी।

सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें, किसी को उधार पैसा न दें और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह बढ़ोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नही रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी।

सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है। आपकी धर्मपत्नी का

स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है या उनके साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है। मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः उनको मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए। खान-पान पर विशेष ध्यान दें, नहीं तो स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। अप्रैल के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा व रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होगी।

वर्षान्त में गुरु ग्रह गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। स्वास्थ अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के लिए व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। यात्रा के दौरान किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

17 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। इस यात्रा से आपको लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 17 अप्रैल के बाद आप दान-पुण्य अधिक करेंगे धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी। मन्त्र जप व साधना करेंगे साधु, संन्यासी एवं ईश्वर में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपको व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है परन्तु 18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस समय के अंतराल में आपके काम करने का तरीका सबसे अलग होगा। इस तरीके से आपके वरिष्ठ अधिकारी प्रभावित होंगे और उनका सहयोग भी मिलेगा।

यदि आप व्यवसायी हैं तो किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार शुरु कर लेंगे। उस काम में आपको अच्छा लाभ होगा। 15 अगस्त से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहीं करना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक प्रतिकूलता के कारण बचत कम ही कर पाएंगे। शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। 18 फरवरी से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पत्नी एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति करने में भी आप खर्च करेंगे।

14 जून से 15 अक्टूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें नहीं तो हानि हो सकती है। अक्टूबर से समय बहुत अच्छा हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। दूसरे भाव पर शनि की दृष्टि रहेगी। पारिवारिक मामलों में समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद न करें और वाणी पर नियंत्रण रखें। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 फरवरी से आपके परिवार में अनुकूलता का वातावरण बनेगा। साथ ही धर्म पत्नी के साथ संबंधों में भी मधुरता आएगी। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जुलाई के

बाद संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। परिवार में किसी सदस्य की बढोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। जिससे परिवार में प्रेम एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। पंचम स्थान के मंगल आपकी संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न करते रहेंगे। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं।

गर्भवती स्त्रियों को अपने खान-पान एवं रहन-सहन पर विशेष ध्यान देना चाहिए अन्यथा गर्भपात हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इसके बावजूद बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। वर्षान्त आपके दूसरे बच्चे के लिए शुभ है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत अच्छा नहीं है। आपको ऐसा अनुभव होगा आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे कम हो रही है। 18 फरवरी के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

उदर सम्बन्धित बीमारी या मोटापा बढ़ सकता है। लेकिन आप खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित कर सकते हैं। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो यह वर्ष करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलास में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

14 जून से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। यह समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक भटकाव व एकाग्रता की कमी रहेगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए 15 अक्टूबर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है। व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को इस समयान्तराल में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के शुरु में द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा करा सकते हैं। 18 फरवरी के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु फरवरी के बाद धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना एवं दान-पुण्य आपकी दिनचर्या में शामिल हो जाएगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा भी बढ़ेगी। 15 अक्टूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को खाना खिलाना एवं दूसरों की सहायता करने में आप सबसे आगे रहेंगे। बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु के मन्त्र का पाठ करें ।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। व्यवसाय में सफलता के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। व्यापार द्वारा अच्छा खासा लाभ होने की सम्भावना है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। बहुत से कार्यों को एक साथ करने से बचें। साथ ही हर काम को एकाग्रता के साथ करें।गुरु ग्रह के गोचर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

5 मार्च के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारारूकावटें डाली जा सकती हैं। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका सम्बन्ध भी खराब हो सकता है। 12 अगस्त के बाद व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको अच्छी सफलता मिल सकती है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति धनागम के लिए अच्छी नहीं होती है। अनावश्यक निवेश करने से बचें। धन के लेन-देन में सावधानी बरतें। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

5 मार्च से समय और ज्यादाप्रभावित हो रहा हैं। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। मई के बाद आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। 12 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ाया विवाद में नहीं पड़ना चाहिए।मई के बाद मित्रता में

दरार आ सकती है।

12 अगस्त से समय अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगोंसे अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय शुभ है।

संतान

पूरे वर्ष आप संतान के मामले में चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की में बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी हो सकती हैं। नवविवाहित गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भपात के योग बनेंगे इसलिए सावधानी बरतें।

द्वितीय संतान के लिए समय अपेक्षाकृत बेहतर होगा उसके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उसके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छी रहेगीपरन्तु 5 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानीउत्पन्न होती रहेगी। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव सेआपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है।आपको पेट संबंधित तकलीफें हो सकती हैं। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 अक्तूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्याथियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। मई के बाद लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

12 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। व्यवसायियों को अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है और प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकीविदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहेहैं। 5 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

23 अक्तूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि चोट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। 31 मई के बाद गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला आदि गरीबों में दान करें और केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- सरसों के तेल में बनी वस्तुओं को गरीबों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी परंतु अपने परिश्रम के बल पर सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। कड़े परिश्रम एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है।

वरिष्ठ लोगों व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। फिर भी इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। चतुर्थ राहु के कारण जमीन-जायदाद से जुड़े लोगों को हानि हो सकती है। नौकरी वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। वर्ष की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आप अपने संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्ग एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष घर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। ऐसी स्थिति में आपको अपना पारिवारिक महौल अनूकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चहिए।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपकी पारिवारिक एवं सामाजिक पद

व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकी माता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरु हो जाएगी और आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें नहीं तो 8 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यह समय माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनाएगा। 18 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

इस समय माता का स्वास्थ्य व घर की सुख शान्ति भी प्रभावित रहेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको नीतियों में बदलाव करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। परन्तु 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट व अप्रसन्न रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण अच्छे कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में भी बदलाव होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगा।
- आत्म सम्मान में वृद्धि के लिए प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं नमव भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 23 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं। परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त के बाद तृतीयस्थ राहु के कारण आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे। व्यावसायिक व्यक्तियों को गैरकानूनी काम-धन्धों से बच के रहना चाहिए नहीं तो द्वादश स्थान का शनि आपके कार्यों में कानूनी व्यवधान डाल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कोई कार्य बहुत ही सोच विचार करें, क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होता। धन हानि व धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 28 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी, जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। आपकी माता के लिए यह समय अशुभ है परन्तु पिता के लिए काफी शुभ है। धर्मपत्नी के साथ अच्छा संबंध नहीं रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए बहुत ही शुभ है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। घर में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। माता पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक उन्नति के लिए बहुत ही बढ़िया रहेगा। समाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहने वाला है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप मामूली संक्रमण की चपेट में आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके स्वास्थ्य लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण स्वस्थ रहते हुए भी आप अपने को बीमार जैसा अनुभव कर सकते हैं। मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा। फिर आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 23 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ गुरु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जा सकते हैं। यह यात्रा मनोरंजनात्मक तथा आनन्ददायक रहेगी। यात्रा के दौरान आपको कुछ परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 23 मार्च के बाद से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप मन्दिर निर्माण जैसे धार्मिक कार्य या दान-पुण्य आदि सात्विक क्रियाओं में संलग्न रहेंगे।

- किसी गरीब बच्चे को शिक्षा दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करें व प्रत्येक दिन शिवजी का दुग्धाभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वितीय भाव में और सिंह राशि का राहु तृतीय भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्यक्षेत्र में उन्नति व सफलता के लिए संघर्ष पूर्ण रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न होंगे। जो कि आपके कार्यों में व्यवधान डालने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए 6 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। परन्तु भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके लिए अच्छी नहीं है।

धन संपत्ति

इस वर्ष का आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहेंगे। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं कि प्राप्ति होगी। 6 अप्रैल के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। फिर भी किसी प्रकार का आर्थिक निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। क्योंकि द्वितीयस्थ स्थान का शनि परिवार पर कुछ अनावश्यक खर्च करा सकता है। जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। परन्तु व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह साल आपके लिए बहुत अच्छा रहने वाला है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिये वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परिवार के सभी सदस्य प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक-दूसरे को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे जिससे परस्पर संबंधो में मधुरता रहेगी। फलतः पारिवारिक वातावरण शान्ति एवं सद्भावना से युक्त रहेगा। 5 अप्रैल के बाद पारिवारिक स्थिति के लिए समय किंचित प्रभावित हो रहा है। ये समय आपकी माता के लिए शुभ नहीं है। परन्तु धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाईयों के लिए बहुत ही शुभ है। इस समय के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे उन्नति करेंगे। वे कुछ विशेष करने वाले हैं जिससे आप उन पर गर्व करेंगे।

बच्चों के माध्यम से समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरे संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही शुभ है। यदि आपका बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको कमजोर जैसा अनुभव होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

6 अप्रैल के बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात् इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं। क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय नए स्रोतों का सृजन करेंगे।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं को अच्छा लाभ मिलेगा। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी। नौकरी करने वाले लोगों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए शुभ संकेत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकती है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठमत रहेगा।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उसका पूजन करें।
- ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। व्यापार में आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार के संतुष्ट रहेंगे। अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। क्योंकि आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और इसमें आप काफी हद तक सफल भी रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आय के बंद मार्ग खुलेंगे। धन संचित करने में आपके भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु अप्रैल के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेद-देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

13 अप्रैल से द्वितीय स्थान में राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। 27 अगस्त से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद अच्छा रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीयस्थ शनि की चतुर्थ स्थान पर दृष्टि पारिवारिक माहौल खराब कर सकती है। ऐसे में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं। नहीं तो आपका घरेलू माहौल ज्यादा अशान्त हो सकता है।

अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें। 27 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे आपकी ख्याति और बढ़ेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अप्रैल के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपके दूसरे बच्चे का चहुंमुखी विकास होगा। उन्नति के मार्ग खुलेंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। 27 अगस्त के बाद पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे की उन्नति को रोक सकती है। अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अनुकूल रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा उस समय आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। उदर से सम्बन्धित बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 27 अगस्त के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ राहु के कारण आपको अचानक सफलता मिल सकती है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि अच्छी शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

अप्रैल से जुलाई तक आपकी उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तालाश में हैं। उनको अचानक इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए वर्षान्त बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान का राहु वर्ष के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा का भी प्रबल योग बना रहे है।

अप्रैल के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा भी हो सकती है। यह यात्रा आपके लिए बहुत ज्यादा आनन्ददायक रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक क्रिया-कलापों के लिए साल का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या सुधरेगी। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे। अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भुखे को खाना खिलाना या भण्डारा इत्यादि कार्य करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप एक व्यापारी हैं तो अप्रैल के बाद आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। आप अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर सफलता हासिल करेंगे। जो लोग प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं, उनको शानदार लाभ प्राप्त होने वाला है। शेयर बाजार में पैसे लगाना, फायदे का सौदा होगा। यदि आपके प्रदेश में लॉटरी प्रतिबंधित नहीं है तो उसमें अपना भाग्य आजमा सकते हैं। सफलता मिलने की संभावना है।

यदि आप वकील, मीडिया इत्यादि से संबंधित काम कर रहे हैं तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपकी उन्नति में व्यवधान डाल रहा है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की उन्नति होगी। आपको अपने कार्यों में नाम और शोहरत मिलेगी। आपके सहकर्मी आपकी मदद करने के लिए आगे आ जाएंगे, जो आपकी सफलता के साक्षी बनेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं होने के कारण आपको आर्थिक मामले में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। किसी के ऊपर ज्यादा विश्वास न करें, क्योंकि कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। अपने क्रिया-कलापों पर ध्यान दें और बेकार में पैसे खर्च करने से बचें क्योंकि द्वादश स्थान का गुरु आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी वित्तीय स्थिति में कुछ सुधार होगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम तो होगा परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। वैसे चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है, कोई बड़ा नुकसान नहीं होने वाला है। कार्यस्थल पर अपनी मौजूदगी को लेकर सजग रहें तथा अधिक व्यय करने से परहेज करें। किसी प्रकार का ऋण लेने से भी पूरी तरह दूर रहें। लोन लेकर कोई कार्य शुरू न करें। जमापूंजी से ही नए कार्य का आरंभ करें तो उचित होगा। अक्टूबर के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। उस समय इच्छित बचत करने में सफल हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। अचानक आपके

परिवार में विषमता की परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। वर्षारम्भ आपके पिता जी के लिए शुभ नहीं है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना होगा। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए आपको छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है।

परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आपका अहम सहयोग होगा। सितम्बर के बाद आपके कुटुम्ब में वृद्धि होगी। द्वितीयस्थ गुरु के कारण सुख, समृद्धि में बढ़ोत्तरी होगी। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप का समाजिक स्तर भी बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग व्यक्तित्व होगा।

संतान

द्वादश स्थान के गुरु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः वर्ष के प्रारम्भ में उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं। 26 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपकी संतान के लिए काफी शुभ हो रहा है।

अप्रैल के बाद नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। वे अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय शुभ है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। परन्तु 26 अप्रैल के बाद अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। मानसिक सन्तुष्टि व शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

19 अक्टूबर के बाद अचानक सिर दर्द, गैस, व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। अपने खान पान पर भी ध्यान रखें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में अपने एवं धर्म पत्नी के स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 26 अप्रैल के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिलेगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। ये सब यात्रा व्यवसाय से संबंधित हो सकती हैं।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण यात्रा के अंतराल में किसी से आपकी मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों की सहायता करना ही आपका प्रथम उद्देश्य रहेगा। 26 अप्रैल के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटुट विश्वास होगा।

- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें ।
- अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं तृतीय भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और पनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है। कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन करते रहेंगे। ऐसे में तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ होगा। अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा। आपको बांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। जो लोग सूद-ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी।

मई के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-मर्यादा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे समय से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। हालांकि 22 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर कुछ परेशानियाँ ला सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी बिना बाधा के होता रहेगा। मई के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

सामान्यतः आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। उसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। आपके एश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। 22 अक्टूबर के बाद भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के

मामले में किसी प्रकार की लापरवाही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें।

घर-परिवार, समाज

इस साल आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों परिवारों के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। यदि दोनों आपस में सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों मे मधुरता बनी रहेगी। मई के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से पराक्रम व साख में वृद्धि होगी। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने परिवार पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपकी पारिवारिक स्थिति खराब हो सकती है।

संतान

साल के प्रारम्भ में पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपकी संतान बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगी। अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञा पालन में वे हमेशा तत्पर होंगे।

11 मई के बाद आप अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्स अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षण रहेगा। साल के प्रारम्भ से ही आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। रोग व्याधि की सम्भावना कम है परन्तु 11 मई को, गुरु ग्रह के गोचर के बाद लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका बजन बढ़ सकता है।

अक्टूबर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते है। जैसे - सरदर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती हैं। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख,

किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके ऊपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को परिश्रम के बाद नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों को सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में ही छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। मई के बाद सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

शनि ग्रह का गोचर नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि आपका प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपके अन्दर पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि जाग्रत होगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। थोड़ा बहुत कुछ दिखावा भी करेंगे। जैसे जागरण करना, सांई संध्या करना इत्यादि। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच या आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

चतुर्थ स्थान का शनि नौकरी वालों के लिए अच्छा नहीं है। आपका स्थानान्तरण किसी प्रतिकूल स्थान पर होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। 5 अप्रैल के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेगा। प्रतिद्वन्दी आपको नीचा दिखाने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वो अपने मंसूबो में सफल नहीं होंगे। आपको अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण करना होगा। तभी आपको नाम और पैसा दोनों की प्राप्ति होगी।

द्वादश स्थान का राहु कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आप सभी परेशानियों का हल निकाल लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यापारी व्यक्ति वर्षान्त में अच्छी उन्नति करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान का राहु आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु मार्च के बाद द्वितीय स्थान में गुरु ग्रह का गोचर काफी अच्छा हो रहा है। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा वांछित बचत करने में भी सफल हो सकते हैं। 13 जुलाई के बाद परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय हो सकता है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से लेन-देन व निवेश के मामले सावधानी बरतें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। जमीन व फ्लैट खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर पूरा ध्यान दें नहीं तो चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से धोखा मिल सकता है।

इस समय के अंतराल में आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। नवम एवं एकादश भाव पर गुरु की दृष्टि पिता एवं आपके भाईयों से भी धन लाभ करा सकती है। 4 नवम्बर के बाद भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से जल्दीबाजी में कोई गलत निर्णय ले सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए शुभ नहीं है। माता पिता के साथ भी संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकती है, जिससे सब लोग परेशान हो सकते हैं।

मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। वांछित मान सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। 4 नवम्बर से माता पिता जी का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा उनसे आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

संतान

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण संतान संबंधित कुछ चिंताएं बनी रहेंगी। परन्तु 7 अप्रैल के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी आपके बच्चे वांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उनका आकर्षण बढ़ेगा।

जून से उनके मन में आपके प्रति आदर व सम्मान का भाव बढ़ेगा। प्रथम संतान की अपेक्षा आपकी दूसरे संतान ज्यादा उन्नति करेगी। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान के राहु स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे तथा अचानक आपको बीमार भी कर सकते हैं। चतुर्थस्थ शनि के कारण माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि अप्रैल से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी।

13 जुलाई से आपका बजन बढ़ सकता है अतः बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। घी, तेल व तला हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंतन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरूआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन 13 अप्रैल के

बाद समय में सुधार होगा। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। परन्तु विद्यार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद प्रतिकूल स्थान पर परिर्वतन होने के प्रबल योग बन रहे हैं। मेकेनिकल इंजिनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। 7 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं।

4 नवम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिये अत्यधिक लाभ प्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्नस्थ राहु के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपकी आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रत्येक सोमवार के दिन शिव लिंग पर जल चढ़ायें तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तररण होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। अप्रैल से जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियों को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। जोखिम उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिये यह समय सही नहीं है। द्वादश स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। 6 अप्रैल के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन का निवेश न करें, क्योंकि धोखा होने के कारण धन डूब सकता है। द्वादश स्थान का राहु अचानक कोई ऐसा खर्च ला सकता है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। व्यापारिक क्षेत्र में वांछित उन्नति करने में सफल होंगे तथा वर्षान्त में आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। नौकरी या राजनीतिक क्षेत्र में आपको अच्छी सफलता मिलेगी। आप उचित मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ता प्रदान करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह साल उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में

सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावारण विद्यामान रहेगा। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से प्रसन्न रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के कारण आप कुछ परेशान रह सकते हैं। परन्तु 28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धी दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ नहीं है। संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस वर्ष आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पडे गा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। मार्च के बाद दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता परीक्षा या रिसर्च के कार्यों में भाग लेने पर सम्भवतः सफल होंगे। वर्षान्त आपकी संतान के लिए काफी श्रेष्ठ है। वे अध्ययन के क्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें, अन्यथा 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अचानक बीमार हो सकते हैं। परन्तु घबराने की कोई बाद नहीं है क्योंकि 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है और उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओ की वृद्धि होगी जिससे आप तंदुरुस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह सैर पर जाना। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी श्रेष्ठ हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह वर्ष श्रेयस्कर है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगे। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

28 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओ का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनहय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे। उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखरियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा। काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपका रुझान ज्यादा होगा।

- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें तथा शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों चींटियों व मक्खियों को दाना डालें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में आप कार्य व्यापार में कुछ विशेष करेंगे जिससे कार्यक्षेत्र और व्यापार का विस्तार होगा। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। 6 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टे से जुड़े हैं तो 25 सितम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको महत्वाकांक्षी बना रही है। अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर आप अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में काई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बन रही है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में बृहस्पति का गोचर शुभ होने के कारण आपकी आमदनी में बढोत्तरी होगी। किसी वसीयत के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। एकादशस्थ राहु के कारण अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आय के मार्ग खुलेंगे। वांछित बचत करने में भी सफल होंगे। धार्मिक कार्यों में आपका धन व्यय होगा तथा 6 मई के बाद परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई बड़ा लाभ हो सकता है। 25 सितम्बर के बाद लॉटरी सट्टा या बीमा के माध्यम से भी धन लाभ होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ भाव में शनि का गोचर आपके घरेलू और पारिवारिक जीवन के लिए ठीक नहीं है। घर परिवार के लोगों से कुछ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। सामान्य तौर पर पारिवारिक

जीवन को लेकर मन अप्रसन्न रह सकता है। छोटी छोटी बातों पर झगड़े और विवाद हो सकते हैं। 6 मई के बाद आप अपने परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा कर सकते हैं अथवा आपका झुकाव धार्मिक क्रिया कलापों की ओर होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। 25 सितम्बर के बाद शनि ग्रह के गोचर अनुकूल होने के कारण पारिवारिक अनुकूलता में वृद्धि होगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियो के लिए समय अनुकूल है। 6 मई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपके बच्चो के उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते है।

जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चो का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दुसरे संतान के लिए यह साल सामान्य रहेंगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद जड़ी-बूटी और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सुर्योदय से पहले उठ कर पार्क में घुमना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

25 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि जीवन साथी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। यद्यपि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में सफलता के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट,

प्रशासन व शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। वर्षान्त में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक से अधिक यात्राएं होंगी। व्यावयायिक यात्राओं के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 मई के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपका समय अधिक व्यतीत होगा। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। वर्ष के मध्य में समय किंचित प्रभावित हो रहा है, लेकिन जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। गुरु के प्रति निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा तथा उनके दिये गये उपदेशो का पालन करेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें।
- मंलगवार को व्रत करें तथा मसूर की दाल ब्राह्मण को दान करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं पंचम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। मालिक या किसी सत्ताधारी से संबंध बिगड़ जाने के कारण व्यापार या कार्यक्षेत्र प्रभावित रह सकता है। लेन देन के व्यापार में हानि होने की भी संभावना है। कार्यक्षेत्र से सम्बंधित कुछ न कुछ परेशानियां सदैव घेरे रहेंगी। इन तमाम कारणों के चलते इस अवधि में किसी नए काम के बारे में सोचना या नए काम की शुरुआत करना जोखिम भरा काम होगा। आप स्वयं में आत्मविश्वास की कमी का अनुभव करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापार में कुछ विशेष करेंगे। शेयर, सट्टा व लॉटरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा तथा आपसे बड़े अधिकारी आपकी पूर्ण सहायता करेंगे। कार्य स्थल पर मान सम्मान में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में यदि कहीं से वसीयत प्राप्त होने की उम्मीद बन रही होगी और आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक होंगे तो वह आपको मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पैसे के मामले में आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा और आपकी दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। लेकिन धन बहुत धीमी गति से आपकी तरफ आएगा। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आकस्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। महँगी एवं सुख सुविधाओं की चीजें खरीदने के लिए आप लालायित रहेंगे। परंतु धन का अपव्यय न करें अन्यथा आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ सकता है ।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं कहा जा सकता, इसलिए घर परिवार से जुड़े मामलों को निबटाने में बड़ी सतर्कता बरतें। यद्यपि आप अपने पारिवारिक

उत्थान के लिये कुछ महत्वपूर्ण कार्य करना चाहते हैं और काफी हद तक उसमें सफलता भी मिलेगी। लेकिन उसका श्रेय आपको मिलने में संदेह है। आपके मित्र और सहयोगी जन अपनी बातों से मुकर सकते हैं। परन्तु आपको भाईयों का पूरा सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। परिवार के लोगों के बर्ताव में भी आप कुछ अंतर महसूस करेंगे। इन तमाम कारणों से आप मानसिक रूप से कष्ट का अनुभव करेंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रह सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

पंचमस्थ शनि के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान आ सकता है। उनको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। सफतला मिलने की संभावना कम है।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय अनुकूल रहेगा तथा उसके बाद समय फिर प्रभावित हो जाएगा। उस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। गर्भवती महिलाओं का गर्भ खराब हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसम जनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ महसूस कर सकते है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है। नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें, नहीं तो इससे भी आपको मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय शुभ रहने वाला है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होंगी और आप आरोग्य तथा तंदरूस्त बने रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि कम होगी तथा आलस्य की भावना इनकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिला है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध

श्रेष्ठ रहने वाला है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। तीर्थ यात्राएं प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक व आध्यात्मिक कार्य के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गुप्त विद्याओं के प्रति आपकी रुचि होना स्वाभाविक है। आप एक आदर्शवादी व्यक्ति हैं। लेकिन कई बार दुनिया के कठोर सत्य से दूर भागकर उनसे बचने के उपाय ढूंढने के बजाय आप दिवास्वप्नों में खो जाना चाहते हैं। आपमें जनकल्याण की भावना है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप जनकल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे। गरीबों की सहायता व दुखियों के दुख निवारण के लिए कोई संस्था बना सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चन्दन तथा चावल डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।)
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- वीरवार का व्रत करें तथा बेसन के लड्डू दान करें।
- विष्णु सहस्त्रनाम का प्रतिदिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में इस वर्ष आपको नई उपलब्धियां हासिल होंगी। सही समय पर सही निर्णय लेकर व्यापार को आगे बढ़ाएंगे। अपने व्यापार में आप नई तकनीकियों का उपयोग कर सकते हैं। कर्मचारियों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे। इस समय आप अपने व्यावसायिक प्रतिद्वन्दियों को काफी पीछे छोड़ देंगे। कुछ नवीन व्यवसायों में आप निवेश करेंगे। काम-काज में आप किसी के साथ कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी तथा कोई बड़ा ऑर्डर भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

सितम्बर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। आपके सहयोगियों को भी धन लाभ होगा। नौकरीपेसा लोगों की पदोन्नति होगी, परन्तु काम का दबाव बना रहेगा। आपसे बड़े अधिकारी आपको परेशान कर सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेगें। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग होगा।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आप अपव्यय अधिक करेंगे। अतः आर्थिक मामले को लेकर थोड़ी सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। अतिव्ययी न बने और न ही किसी को उधार दें। वर्षान्त में आपके विवाह आदि मांगलिक कार्य में धन अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल नहीं रहेगी। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे, परन्तु माता के साथ आपकी कुछ अनबन हो सकती है तथा उनकी सेहत भी खराब हो सकती है। अतः उनका ख्याल

रखें। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने जीवनसाथी के साथ रिश्ते मधुर व मजबूत करें नहीं तो दाम्पत्य जीवन में परेशानी उत्पन्न हो सकती है क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छी नहीं है। यदि आप अविवाहित हैं तो 11 सितम्बर के बाद विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

उच्च का शनि पंचमस्थ होने के कारण आपके बच्चों के पराक्रम में वृद्धि करेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम व पराक्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय और ज्यादा अनुकूल है। उनका चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह भी हो सकता है।

30 जुलाई के बाद आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी पढ़ाई-लिखाई पर पड़ सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध अत्यधिक अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

30 जुलाई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अपने खान पान पर ध्यान दें नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। नियमित रूप से व्यायाम करने की आदत डालें वरना पेट, आंत, घुटने, आंख दर्द और सरदर्द जैसी समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। वैसे कुल मिलाकर देखा जाए तो आपका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा। इसलिए चिंता करने जैसी कोई बात नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। दशम स्थान में राहु के प्रभाव से आप अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक्स या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी।

आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त कर आगे निकलेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक व्यापारिक वर्ग का समय

थोड़ा प्रभावित रहेगा। उसके बाद वांछित उन्नति करेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं अधिक होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी विदेश यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्रा से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से आपके मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप मन्त्र जाप, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कर्म करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें तथा सूर्य को जल चढ़ाएं।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहने वाला है। नौकरी करने लोगों को अपनी कुशलता के बल पर आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। जो नौकरी या व्यवसाय आप कर रहे हैं, उसमे पूर्ण सफलता मिलने की संभावना है। कार्यों की सफलता आपके आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देगी। व्यवसाय से जुड़े मामलों में आप अपने कौशल से एवं अनुभव से काफी सुधार लेकर आएंगे। नई कार्यशैली या तकनीक को अपनाने से आपके व्यापार में वृद्धि होगी और आपका उत्पादन बढ़ेगा। व्यावसायिक मामलों में अच्छी सफलता मिल सकती है। कोई उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति का सहयोग आपको नौकरी या व्यावसायिक मामलों में काफी अच्छा लाभ प्रदान करेगा।

फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कारोबार में मुनाफे के लिए यह आवश्यक है कि सोच समझ कर निवेश करें। किसी के ऊपर आंख बंद करके विश्वास न करें अन्यथा नुकसान हो सकता है, क्योंकि कोई करीबी या दोस्त ही आपको धोखा दे सकता है। व्यवसायिक लेन-देन को लिखित रूप में ही पूरा करें नहीं तो बाद में आपको नुकसान होने की संभावना है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में धन प्राप्ति का अच्छा योग बन रहा है। कोई पुराना उधार वापिस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा, जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। आपके ऋण में कमी आएगी। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा।

फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। गलत निवेश नीति के कारण नुकसान होने की संभावना है। अतः पूरी एहतियात बरतें। किसी भी अंजाम पर पहुंचन से पहने तथ्यों की पूरी तरह से जांच-पड़ताल कर लें। धन प्राप्ति के लिए भाग-दौड़ करेंगे और अपेक्षित लाभ प्राप्त करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपका पारिवारिक जीवन आनंदमय बना रहेगा। घर परिवार में मेहमानों का आना-जाना लगा रह सकता है। परिवार के साथ यात्राओं पर जाकर आपको आत्मिक शांति का अनुभव होगा। कुछ पुराने विवादों से जुड़े मामलों में आपको राहत मिल सकती है। परिवार में

सौहार्द बना रहेगा व पैतृक संपत्ति से जुड़े मामलों का कोई निष्कर्ष निकलेगा। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने से पहले घर के बड़े-बुजुर्गों की सलाह आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

फरवरी के बाद परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह साल काफी शुभ है। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

पंचम भाव पर राहु की दृष्टि संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं। उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। विशेषतः उनको पित्त, कफ व उदर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले जातक हैं। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। सुबह-शाम टहलना और ऊर्जावान रहना आपको पंसद है।

फरवरी के बाद स्वास्थ्य को लेकर सतर्क रहें। मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित जातक इस समय अधिक प्रभावित रह सकते हैं अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें और व्यर्थ की बातों से स्वयं को दूर रखें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थियों के लिए कड़ी मेहनत करने का है। शिक्षा में आपकी धीमी गति से प्रगति होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप लंबे समय तक पढ़ने में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे। इस दौरान मानसिक व्याकुलता आपको परेशान करेगी। यदि आप कोई उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो किसी भी महत्वपूर्ण फैसले को लेते वक्त सतर्कता बरतें क्योंकि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को महत्वपूर्ण निर्णय लेने में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है।

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए शुभ है। यदि आप तकनीकी, कानून, इंजीनियरिंग व मेडीकल से संबंधित प्रतियोगिता परीक्षा दे रहे हैं तो सफलता मिलने की प्रबल सम्भावना है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको वांछित नौकरी मिलने की संभावना है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। राहु केतु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ आपके लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्राएं आपकी अचानक होंगी।

इन यात्राओं के दौरान आपको छोटी मोटी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मानसिक द्वन्दता के कारण आपका मन पूजा-पाठ में नहीं लगेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि होने के कारण पूजा पाठ यज्ञ अनुष्ठान अपेक्षाकृत कम ही कर पाएंगे। घर में साफ-सफाई, पूजा-पाठ व पवित्रता का माहौल बनाने व छोटे लोगों की सेवा करने से राहु के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। ऐसा करने से कार्यों में आने वाले व्यवधानों तथा संतान संबंधी चिंताओं से भी छुटकारा मिल जाएगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।
- नित्य दुर्गा कवच का पाठ करें।
- पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(27/07/2010 - 27/07/2026)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 27/07/2010 को आरम्भ और 27/07/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगें।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करनें के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम

होगी और आप सफल होंगे।

महादशा :– शनि
(27/07/2026 - 26/07/2045)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्कुण्डली में यह 27/07/2026 को आरम्भ और 26/07/2045 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चौथै भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधक ग्रह के रूप में जाना जाता है, किन्तु अन्ततः फल देता है। यह फल की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम के हेतु प्रेरित कर उसके धर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि छठे, दसवें और प्रथम भाव पर है। चतुर्थ भाव, जिसमें यह स्थित है, जन्म स्थान, मनोरंजन, रोमान्स, धार्मिक प्रवृत्ति तथा

आध्यात्मिक कार्य का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव अर्थात् 'सुखस्थान' को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कोई बीमारी नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

मातृ भूमि, मकान और माता के द्योतक चतुर्थ भाव में स्थित शनि के कारण आपको घर का सारा सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आप अपना नया मकान तथा नयी गाड़ी खरीद सकते हैं।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आपकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ होगी क्योंकि चौथे भाव में स्थित बली और योगकारक शनि की कार्य-व्यवसाय के दसवें भाव पर दृष्टि है। आप एक सरकारी सलाहकार अथवा मंत्री या उपदेशक हो सकते हैं। आप धनी, प्रतिष्ठित, सुखी और ऐन्द्रिय सुखों के प्रति आकर्षित होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा और आप उसका आनन्द लेंगे। आपको हर प्रकार से आनन्द मिलेगा। आपके बच्चे कम किन्तु आज्ञाकारी होंगे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के बावजूद आप इस दशा के दौरान पारिवारिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा, ज्ञान तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए अत्यन्त अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शनि - शनि
(27/07/2026 - 29/07/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 29/07/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। शनि शक्तिशाली और अशुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको वातरोग हो सकते हैं। मन में आलस्य की भावना हो सकती है। अचल संपत्ति और वाहन से संबंधित परेशानियां आ सकती हैं। रिश्तेदार आपको नापसंद कर सकते हैं। आप एकाकी जीवन पसंद कर सकते हैं। घरेलू जीवन में कठिनाइयां हो सकती हैं। मामापक्ष के रिश्तेदार परेशान कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए गरीबों को तेल,काले वस्त्र, लोहा, भैंस, काली गाय, काले फूल, काले जूते, कस्तूरी आदि दान करें। शनि गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - बुध
(29/07/2029 - 08/04/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 29/07/2029 को प्रारंभ होकर 08/04/2032 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे; विदेश में भी व्याख्यान दे सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञान के कारण धनी बनेंगे। पिता और अन्य परिवारजनों से संबंध मधुर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - केतु
(08/04/2032 - 17/05/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 08/04/2032 को प्रारंभ होकर 17/05/2033 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धन और स्त्रियों के पीछे भागते रहेंगे। संयम के अभाव के कारण मूत्र तंत्र की कोई व्याधि हो सकती है। जीवन में सावधानी और नियंत्रण अपनाना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(17/05/2033 - 17/07/2036)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 17/05/2033 को प्रारंभ होकर 17/07/2036 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान, प्रसिद्ध और प्रसन्न होंगे। आपका व्यवहार शिष्ट और मुग्धकारी होगा। विचार नीतिपूर्ण और संतुलित होंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ व्यवहार में सावधानी आवश्यक है क्योंकि उनसे विवाद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- चींटियों को शक्कर और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(17/07/2036 - 29/06/2037)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 17/07/2036 को प्रारंभ होकर 29/06/2037 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के तीसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से सुख में कमी आ सकती है। स्वयं के प्रयास से अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी,

पिता और गुरु की सेवा करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप महत्वाकांक्षी और उद्यमी होंगे, मगर कार्यों में बाधाएं आएंगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(29/06/2037 - 28/01/2039)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवन यापन का संकेतक है। चंद्रमा मन और माता का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अत्यधिक संवेदनशील और अस्त-व्यस्त हो सकते हैं। मन में कोमलता का अभाव हो सकता है। किसी कांड में फंस सकते हैं जिससे धन का निकास होगा। चरित्र का ह्रास न होने दें। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। चंद्रमा की 12वें भाव में स्थिति अशुभ समझी जाती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(28/01/2039 - 08/03/2040)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 28/01/2039 को प्रारंभ होकर 08/03/2040 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 1, 4, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको प्रत्येक कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, मगर धन खूब कमाएंगे और धनी बनेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं, मगर जल्दबाज और प्रशंसापसंद हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा। विज्ञान और तकनीकी में दक्ष बनेंगे। अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में कच्चे दूध से धोकर, मंगलवार के दिन प्रातःकाल में हनुमानजी, गणेशजी और शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(08/03/2040 - 13/01/2043)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 08/03/2040 को प्रारंभ होकर 13/01/2043 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। द्वितीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में कटुवाणी के कारण आपका पारिवारिक जीवन अशांत हो सकता है। साधन उत्तम होने के बावजूद कंजूस हो सकते हैं। ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं; शरीर गिरा-गिरा रह सकता है। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। कटुवाणी के कारण परिवार से दूर रह सकते हैं। आर्थिक मामलों में अनिश्चितता रहेगी। मित्रों और व्यापार के माध्यम से धनागम हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - गुरु
(13/01/2043 - 26/07/2045)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 27/07/2026 को प्रारंभ होकर 26/07/2045को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 13/01/2043 को प्रारंभ होकर 26/07/2045 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 8, 10, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और धार्मिक होंगे, दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। कार्यक्षेत्र में प्रसन्न रहेंगे। उच्चाधिकारी और सहकर्मी आपसे प्रसन्न रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप किसी शांत स्थान पर रहना पसंद करेंगे। आपके शत्रु भय के कारण आपके निकट नहीं आएंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल, अंगूठी को कच्चे दूध से धोकर, प्रार्थना और बृहस्पति मंत्र के 99 जाप के बाद, दायें हाथ की तर्जनी में धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

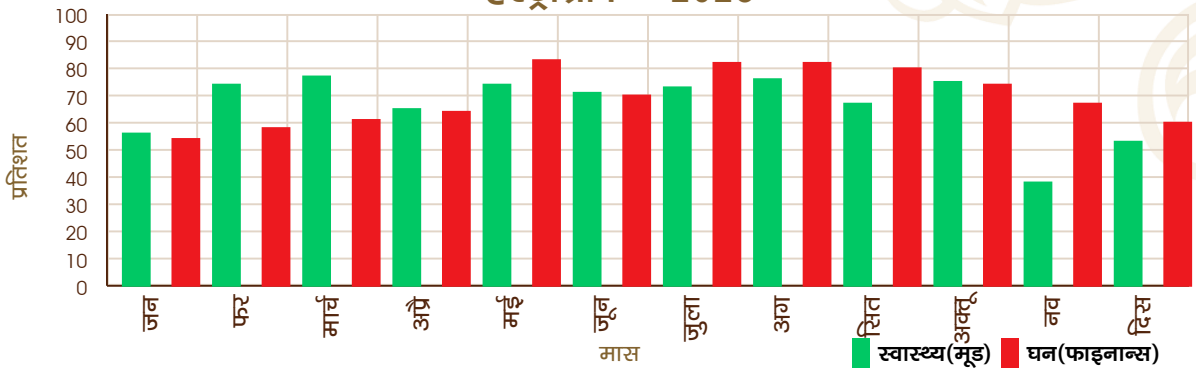

एस्ट्रोग्राफ - 2026

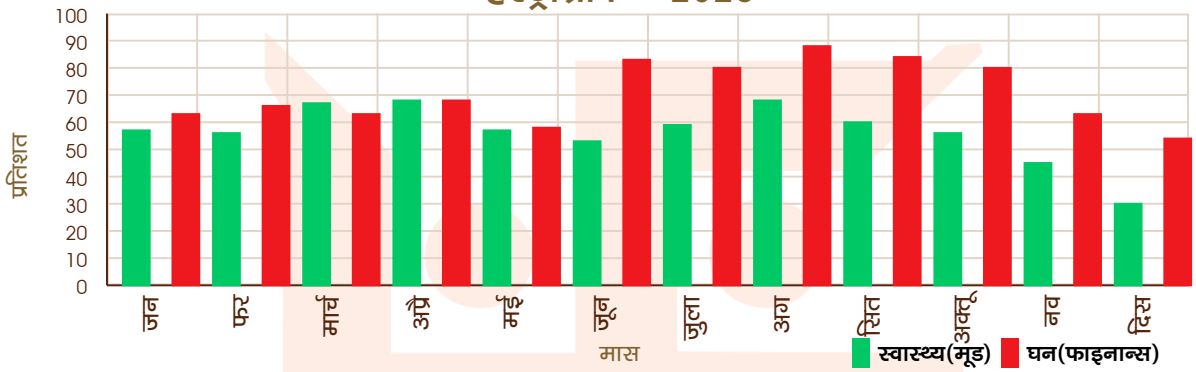

एस्ट्रोग्राफ - 2027

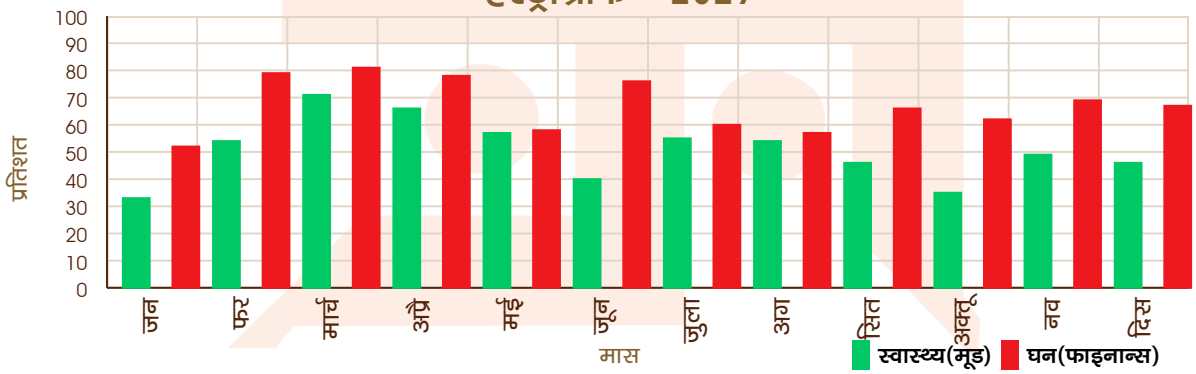

एस्ट्रोग्राफ - 2028

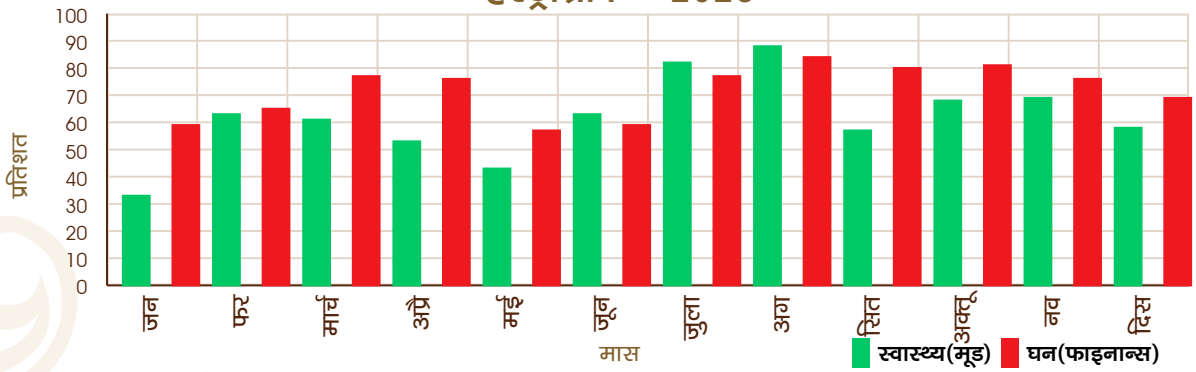

एस्ट्रोग्राफ - 2029

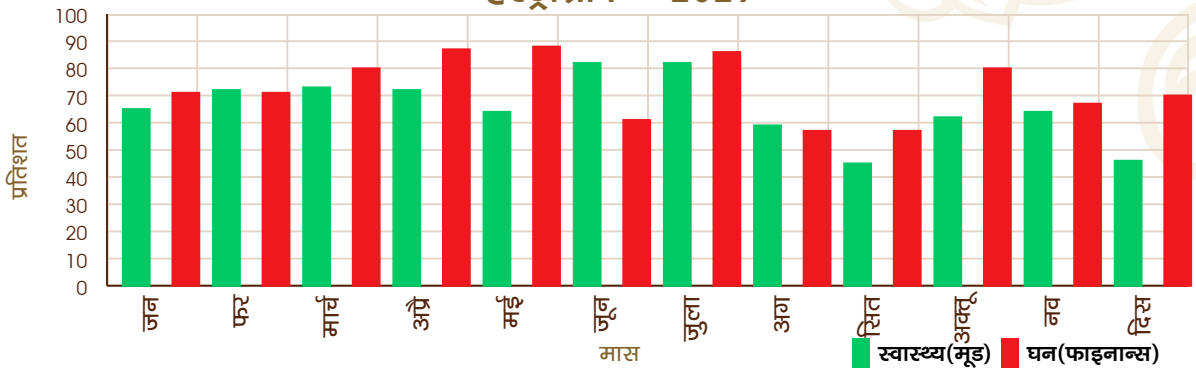

एस्ट्रोग्राफ - 2030

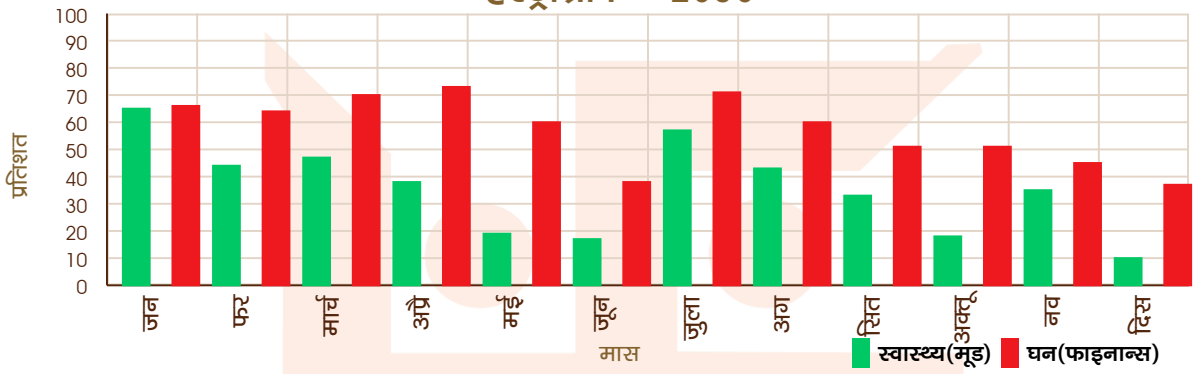

एस्ट्रोग्राफ - 2031

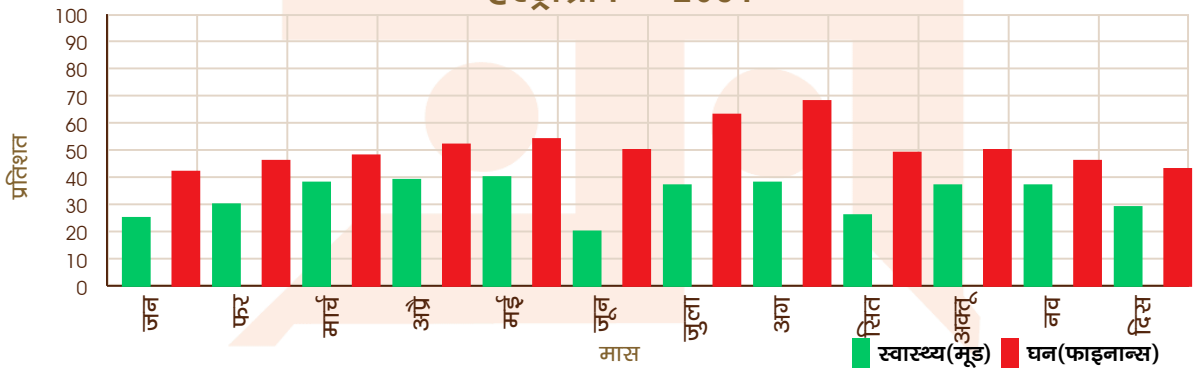

एस्ट्रोग्राफ - 2032

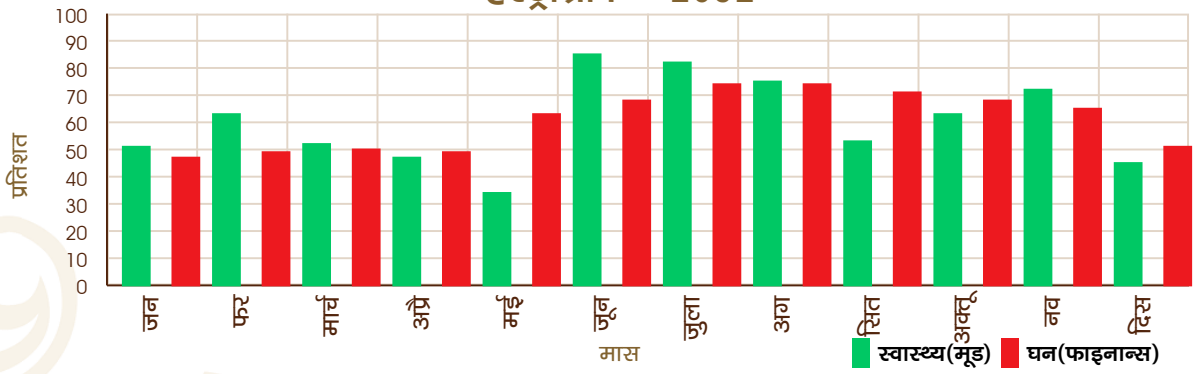

एस्ट्रोग्राफ - 2033

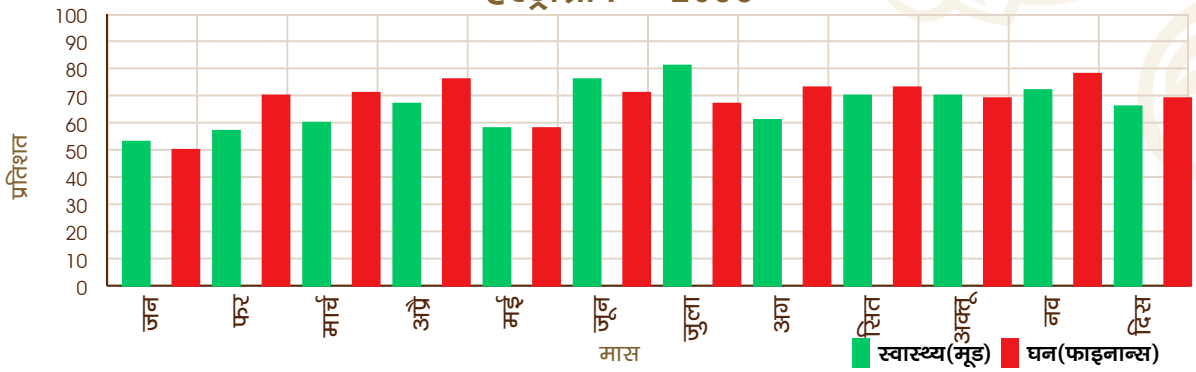

एस्ट्रोग्राफ - 2034

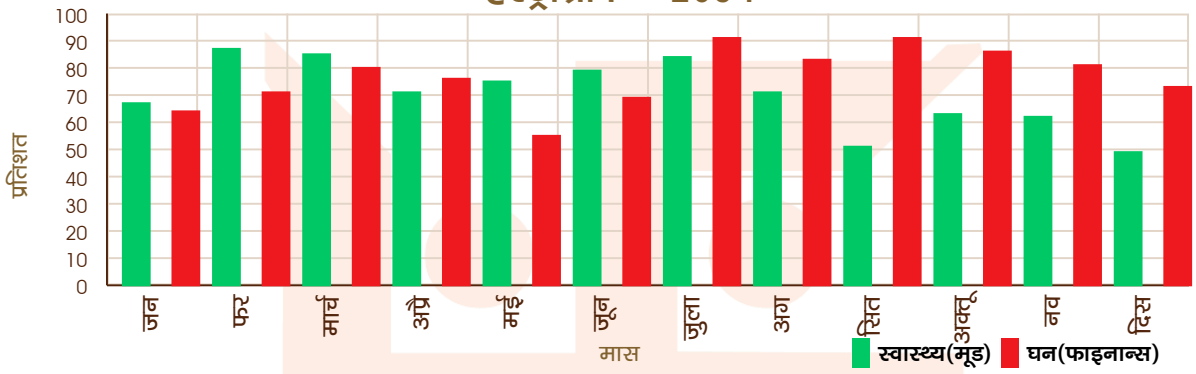

एस्ट्रोग्राफ - 2035

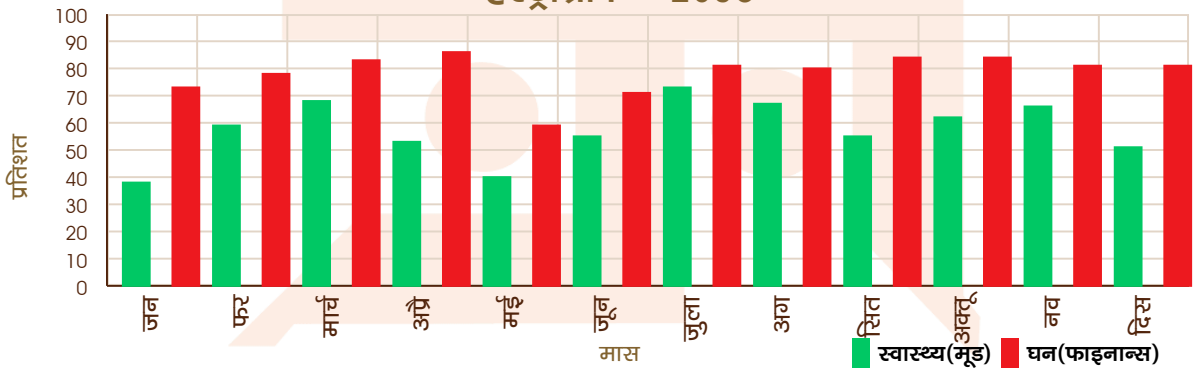

एस्ट्रोग्राफ - 2036

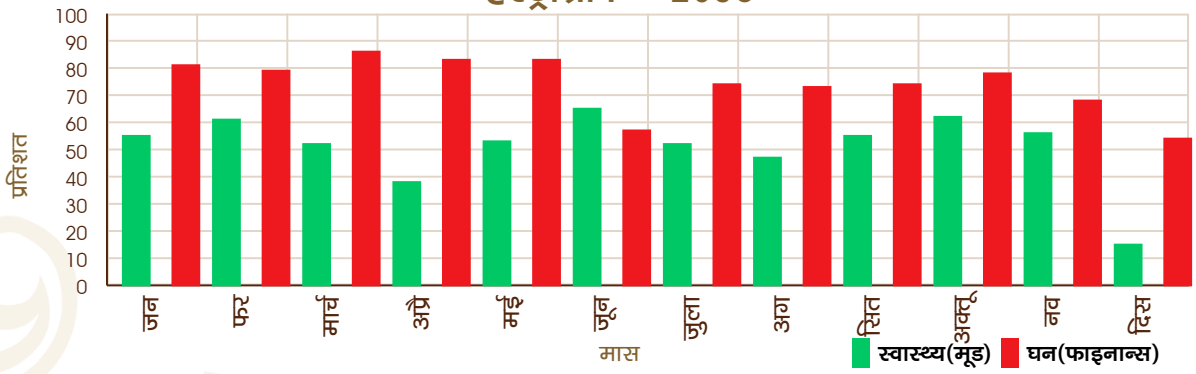

एस्ट्रोग्राफ - 2037

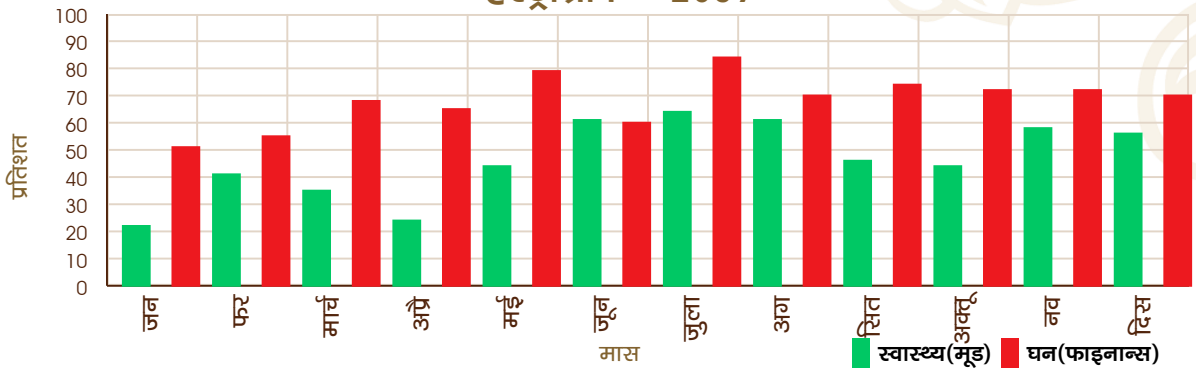

एस्ट्रोग्राफ - 2038

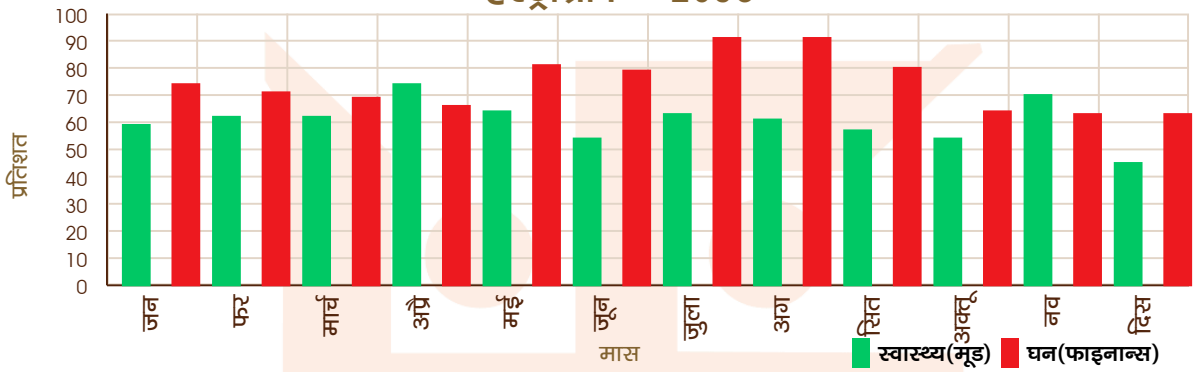

एस्ट्रोग्राफ - 2039

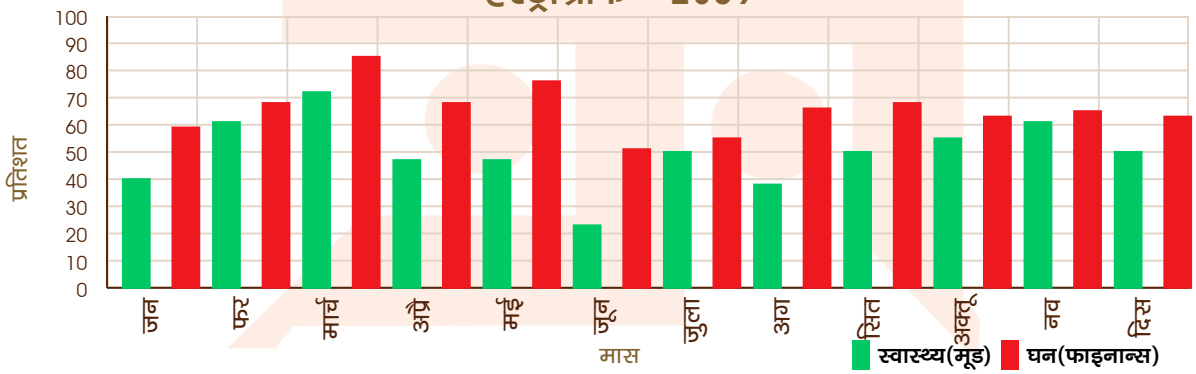

एस्ट्रोग्राफ - 2040

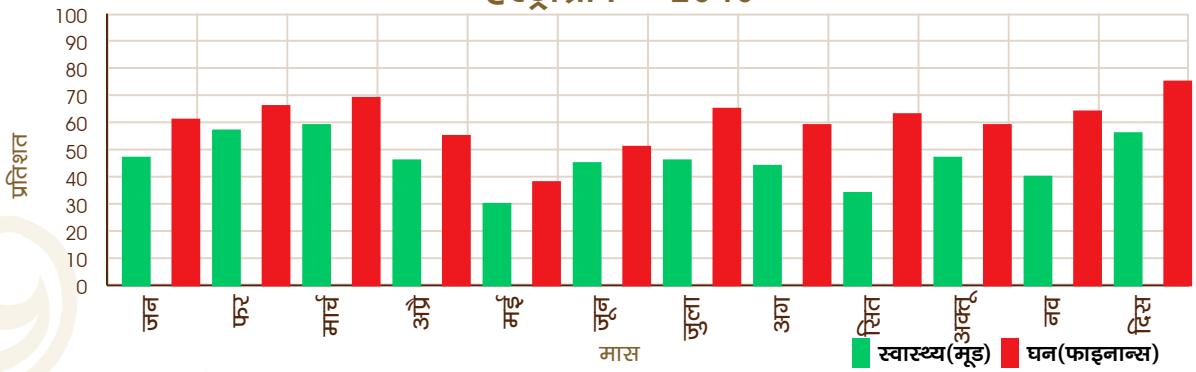

एस्ट्रोग्राफ - 2041

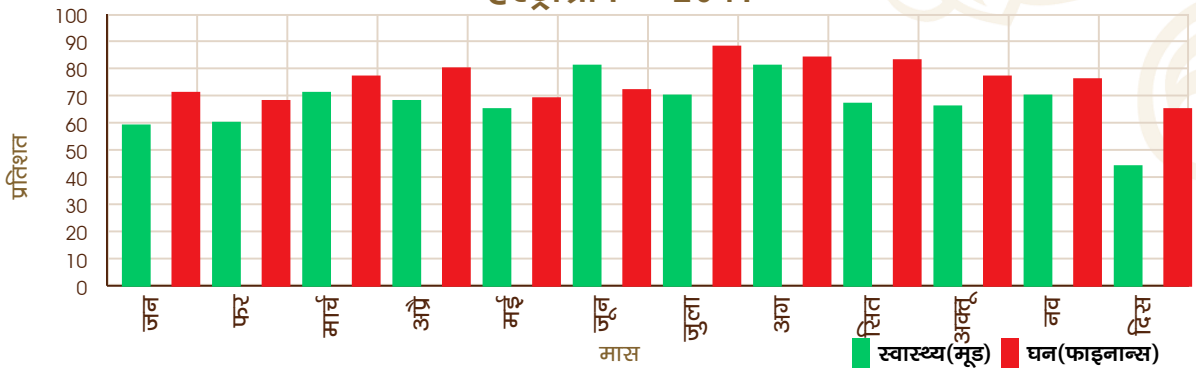

एस्ट्रोग्राफ - 2042

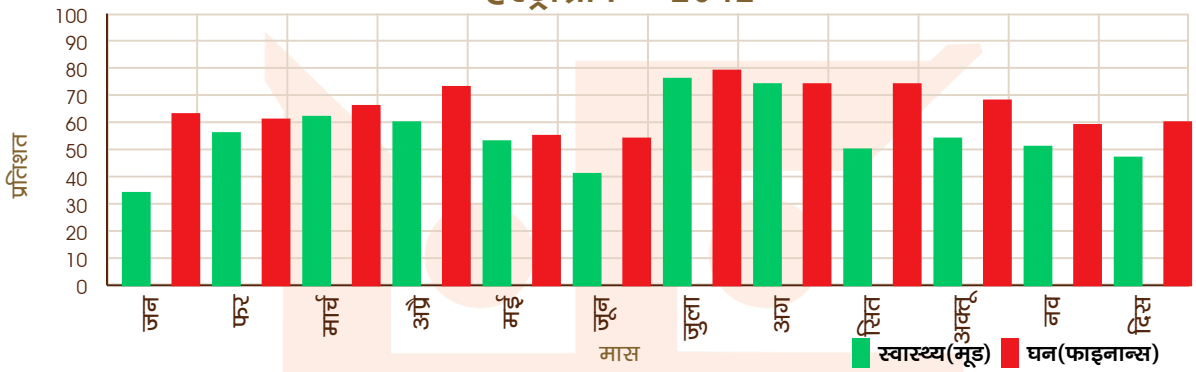

एस्ट्रोग्राफ - 2043

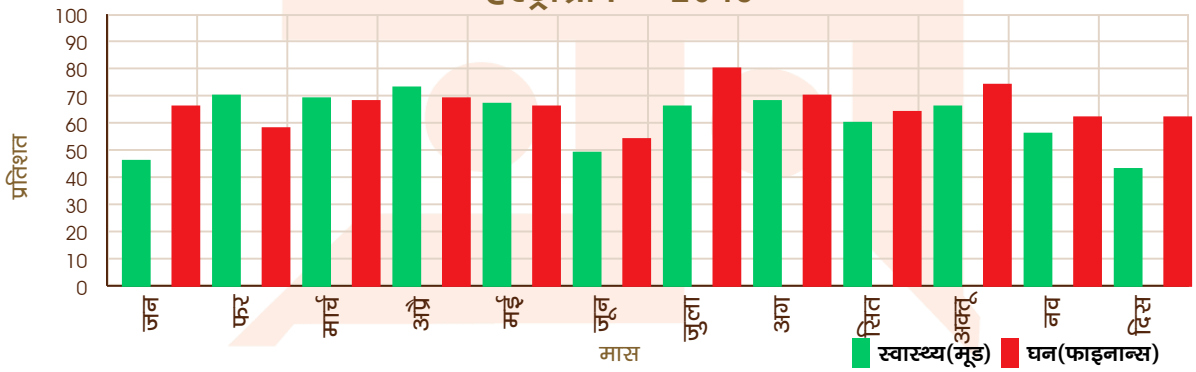

एस्ट्रोग्राफ - 2044

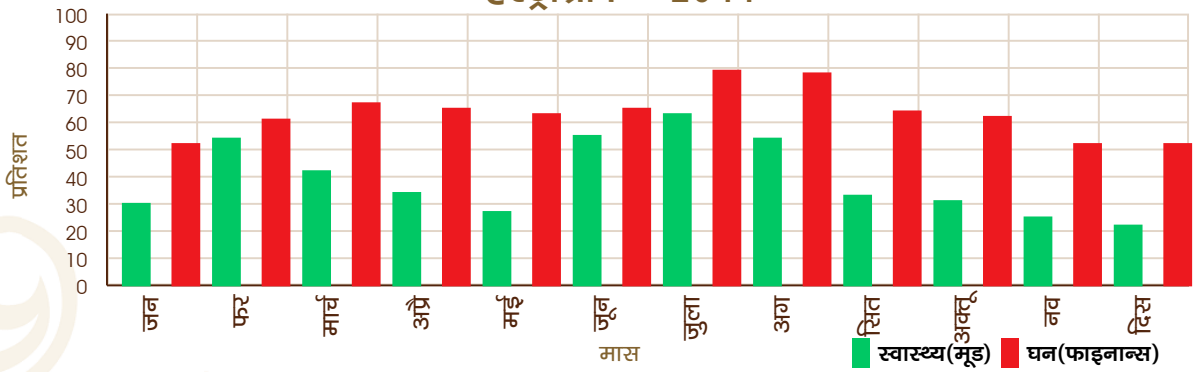

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्व्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कपटी योग

पापे कर्मेश्वरे सौख्ये कपटी पापवीक्षिते पापसंयुते ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-141 ।।

यदि जन्मपत्रिका में दशमेश पाप ग्रह के साथ सुख स्थान में हो तथा पाप दृष्ट या पाप युक्त हो तो जातक कपटी होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि,केतु,गुरु योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कपटी हो ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-143 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

कर्माधिपे चतुर्थस्थे लाभनाथेन संयुते ।
भाग्यनाथेन वा युक्ते बहुवाहनदेशभाक् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-174 ।।

यदि जन्मपत्रिका में दशमेश चतुर्थभाव में लाभेश से युक्त अथवा नवमेश से युक्त हो तो जातक वाहनों का स्वामी होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वाहन सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : केतु,शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : केतु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।